पुरुष के समान सब देह को चलायमान करे-उसदेहके बारंवार चलाने को आक्षेप रोग कहते हैं ॥ २७॥

आक्षेपकके अपतंत्र और अपतानक ऐसे दो अवस्थाविशेषकोकहते हैं

क्रुद्धः स्वैः कोपनैर्वायुः स्थानादूर्ध्वंप्रवर्त्तते पीडयन्हृदयंगत्वाशिरःशंखौचपीडयेत् । धनुर्वन्नामयेद्गात्राण्याक्षिपन्मोहयेत्तथा । सकृच्छ्रादुच्छ्वसेच्चापिस्तब्धाक्षोऽथनिमीलकः । २९ । कपोतइवकूजेच्चनिःसंज्ञः सोऽपतंत्रकः । दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञांचहत्वाकंठेनकूजति ३० हृदिमुक्ते नरःस्वास्थ्यंयातिमोहंवृतेपुनः । वायुनादारुणंप्राहुरेकेतमपतानकम् । ३१ ।

अर्थ- रुक्षादि स्वकारणों से कोपको प्राप्त भई जो वायु सो अपने स्वस्थान को छोड़ ऊपर जाय कर प्राप्त हो- और हृदय में जायकर पीड़ा करे - मस्तक - और कनपटी इन में पीड़ा करे और देह को धनुष के समान नवाय देवे- और चले तो मूर्च्छित करदे- वो रोगी बड़े कष्ट से श्वास लेय- नेत्र मिचजावें- अथवा टेढ हो जा य- कबूतर के समान गूंजे- तथा वेहोश होय- इसरोगको अपतंत्रक- कहते हैं- दृष्टी का स्तंभन होजाय- संज्ञा जाती रहै- गले में घुरघुर शब्द होय- वायु जब हृदय को छोड़े- तब रोगी को होश होय- और वायू हृदय को व्याप्त करै तब फेर मोह होजाय- इस भयङ्कर रोग को कोई (अपतानक) ऐसे कहते हैं ॥ ३१ ॥ अब कहते हैं कि दंडापतानक- अंतराऽऽयाम- बहिरायाम- और अभिघात इनभेदों से आक्षेपक रोग

चार प्रकार का है - उनके लक्षण लिखते हैं ॥

दंडापतानक

कफान्वितोभृशंवायुस्तास्वेवयदितिष्ठति ।
सदंडवत्स्तंभयतिकृच्छ्रोदंडाप तानकः ३२

अर्थ- वायू अत्यंत कफ युक्त होकर सब धमनी नाड़ीन्में प्राप्त होय तब सब देह को दंड (लकड़ी) के समान तिरछा कर देयह दंडापतानक कष्ट साध्य है- अब अंतरायाम- और बहिरायाम इनके साधारण रूप को कहते हैं ॥३२॥

धनुस्तुल्यंनमेद्यस्तुस धनुस्तंभसंज्ञितः ॥

अर्थ- जो बायु धनुष के समान शरीर को बांका करदे उसको (धनुस्तंभ) संज्ञक कहते हैं ॥

अंतरायामकेलक्षण

अंगुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः ।
स्नायुप्रतानमनिलोयदाक्षिपतिवेगवान्
॥ ३३ ॥ विष्टब्धाक्षःस्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वः
कफंवमन् ॥ अभ्यन्तरंधनुरिवयदानमति
मानवः ॥३४॥ तदासोऽभ्यन्तरायामंकुरु
तेमारुतोवली ॥ ३५ ॥

अर्थ- पैरकी ऊंगली - घोंटू - हृदय- पेट -उरःस्थल औरगला इन ठिकानों में रहै जो वायू - बेगवान् होकर जो वहां नसों के जाल उसको सुखाय बाहर निकालदे - उस मनुष्य के नेत्र स्थिरहो जांय- ठोड़ी रहिजाय - पसवाडों में पीड़ा होय- मुख से कफ गिरै और जिस समय मनुष्य धनुष के सदृश नीचे को नवजाय-तब वहबलीबायु (अंतरायाम) रोगको करै ॥३५॥

वाह्यायामलक्षण

वाह्यास्नायुप्रतानस्थोवाह्यायामंकरोतिच
तमसाध्यंबुधाः प्राहुर्वक्षःकट्यूरुभंजन
म् ॥ ३६ ॥

अर्थ- बाहर की नसों में रहती जो वात सो (वाह्यायाम) अर्थात् पीठ को बाँकी करदे उरःस्थल- कमर- और जांघोंको मोर दे ऐसे इस रोग को पंडित असाध्य कहते हैं- ॥ ३६ ॥ अब कहते हैं पूर्वोक्त आक्षेपकका पित्त कफका अनुबंध होय है उस्को कहते हैं ॥

कफपित्तान्वितोवायुर्वायुरेवचकेवलः
कुर्यादाक्षेपकंत्वन्यंचतुर्थमभिघातज
म् ॥ ३७ ॥

अर्थ- कफ पित्त युक्त वायु- अथवा केवल वायु (आक्षेपक) रोग को करे और दूसरा कहिये दंडा पत्थर का दितीनौं की तीनों की अपेक्षा चतुर्थ- अभिघातज -(आक्षेपक) रोग को करे- इसके लक्षण (यदातु धमनीःसर्वाः) इत्यादि पूर्वोक्त सामान्य लक्षणों से जानने- इसश्लोकका गदाधरने ऐसा अर्थ करा है- कफ पित्ता न्वित इत्यादि निमित्तभेद करके चार प्रकारका आक्षेपक रोग प्रगट होय- सो ऐसे- एक कफान्वित वायू सें- दूसरा पित्तान्वित वायू सें- तीसरा केवल वायू सें और चौथा दंडादिक चोट लगने सें कुपित वायूसेइस पक्षमेंगर्भपात- औररुधिरकाअतिस्रावजोहोयहैसोकेवलवातजन्यजानना - और उस ठिकाने बारंवार आक्षेपये होयहैं इसका कारण यह है कियेसब आक्षेपकका भेद है ॥ ३७ ॥

असाध्यत्वकहतेहैं

गर्भपातनिमित्तश्चशोणितातिस्रवाच्चयः

अभिघातनिमित्तश्च नासिद्धत्यपतानकः ३८

अर्थ- गर्भपातके होनेसे-अथवा अतिरक्तस्रावके होनेसे ऽ-थवा अभिघात कहिये दंडादिकोंकी चोटलगनेसे जो प्रगट अपतानरोग असाध्य है

पक्षाघातकेलक्षण

गृहीत्वार्द्धंतनोर्वायुः शिरास्नायूर्विशोष्यच
पक्ष मन्यतरंहन्तिसंधिबंधान्विमोक्षयन् ३९
कृत्स्नोर्द्धकायस्तस्यस्यादकर्मण्योविचेतनः
एकांगरोगंतंकेचिदन्येपक्षवधंविदुः॥ ४०॥

अर्थ- बायू आधे शरीरको पकड़ सब शरीर की नसों को सुखायकर दहने अंगको अर्धनारीश्वरके समान कार्यकरनेको असामर्थ्य करदे और संधिकेबंधनोंको सिथिलकरदे-पीछे उसरोगीकेसब आधे अङ्ग हलें चलें नहीं-और उसको थोड़ाभी देखनेका-स्पर्श आदिकाज्ञान नहीं रहै इसको (एकांगरोग) कहते हैं दूसरे (पक्षवध) कहते हैं इसीको पक्षाघात कहते हैं ॥ ४०॥

सर्वांगरोगकेलक्ष·

सर्वांगरोगंतंकेचित्सर्वकायाश्रितेऽनिले।

अर्थ- तद्वत् कहिये (शिरास्नायू विशोष्य) इत्यादि सम्प्राप्ति लक्षण· इससे जानने- सर्व शिरा (नाड़ी) में वायू प्राप्त होने से उसको सर्वांगरोग- कोई कहते हैं- अब साध्या साध्य के ज्ञानार्थ और दोषों का सम्बन्ध कहते हैं

दाहसंतापमूर्च्छाः स्युर्वायौपित्तसमन्विते
शैत्यशोथगुरुत्वानितस्मिन्नेवकफान्विते
शुद्धवातहतंपक्षंकृच्छ्रसाध्यतमंविदुः
साध्यमन्येनसंसृष्टमसाध्यंक्षयहेतुकम्

गर्भिणीसूतिकाबालवृद्धक्षीणेष्वसृक्स्रु-
तौ। पक्षाघातंपरिहरेद्वेदनारहितोयदि ४३

अर्थ- पक्षवध की बायू - कफ पित्त युक्त होय तौ दाह-संताप- और मूर्च्छा होय - और वही बायू कफ युक्त होय तौ - शीत- सूजन- भारीपन- ये लक्षण होंय - और केवल बायू से प्रगट पक्षाघात- अत्यंत कष्ट साध्य होय है- और दोषों से संस्रष्ट होने से साध्य होय है - क्षय से प्रगट भया पक्षाघात असाध्य होय है-गर्भिणी-बालक-बृद्ध-औरक्षीण इनके भया-तथा रुधिर के श्राव से प्रगट पक्षाघात-पीड़ा रहित होय तौ उसको बैद्य त्याग दे- अर्थात् असाध्य जानकर चिकित्सा न करे॥

अर्दितरोगकेलक्षण

उच्चैर्व्याहरतो ऽत्यर्थंखादतः कठिनानिच। ह
सतोजृंभमाणस्यविषमाच्छयनासनात् ४४॥
शिरोनासौष्ठचुबुकललाटेक्षणसंधिगः। अर्द
यत्यनिलोवक्त्रमर्दितंजनयत्यतः। ४५। वक्री
भवतिवक्त्रार्द्धं ग्रीवाचाप्यपवर्त्तते। शिरश्च-
लतिवाकस्तंभोनेत्रादीनांचवैकृतम् ४६ग्रीवा
चुबुकदंतानांतस्मिन्पार्श्वेबेदना॥ तमर्दित
मिति प्राहुर्व्याधिंव्याधिविशारदाः॥

अर्थ- ऊंचे स्वरसेवेदादिक का पाठ करने से - अथवा कठिन पदार्थ सुपारी आदिके खाने से - बहुत हंसने से- बहुतजंभाईके लेनेसे- ऊंचे नीचेस्थानमेंसोनेसे विषमाशन (भोजन) के करने से कोप को प्राप्त भई जो बायू- मस्तक- नाक- होठ - ठोड़ी - ललाट- और नेत्र- इन्की सन्धीन्में प्राप्तहो मुखमेंपीड़

करे- अर्थात् (अर्दित) रोगको उत्पन्न करे-जो उस पुरुष का मुख आधा टेढ़ा होजाय- उसकी नाड़ मुड़े नहीं- मस्तक हिला करे- अच्छी तरह बोल्यो जाय नहीं- नेत्र-भ्रकुटी-गाल- इनकी विकृति- (कहिये- पीड़ा- फरकना-टेढ़ा होना (इत्यादि-) होय और जिस तरफ अर्दित रोग होय उस तरफ़-नार- ठोड़ी- और दांत इन में पीड़ा होय- व्याधि जानने में जो कुशल वैद्य है वो इसव्याधि को (अर्दित) रोग ऐसे कहते हैं ॥ ४७ ॥ ✣ शंका ✣ कैंजी अर्दित रोग में और पक्षाघात में क्या भेद है- ✣ उत्तर ✣ अर्दित से गर्भ में भी पीड़ा होय है-कभी नहीं होय है और पक्षाघात में सदा पीड़ा होती है- अर्दित रोग चार प्रकारका है

अर्दितरोगके असाध्य लक्षण

क्षीणस्याऽनिमिषाक्षस्यप्रसक्ताव्यक्तभाषिण:
नसिद्ध्यत्यर्दितंगाढंत्रिवर्षंवेपनस्यच ॥४८॥

अर्थ- क्षीण पुरुष के पलक नहीं लगें ऐसे पुरुषके अत्यंत अशुद्ध बोले नहीं ऐसे पुरुष के- अर्दित रोग को प्रगट भये तीन वर्ष व्यतीत होगये हों- अथवा त्रिवर्ष कहिये मुख- नाक- और नेत्र इन तीनों का स्राव होय- ऐसा और कंप युक्त पुरुष का अर्दित रोग साध्य नहीं होय ॥ ४८ ॥ अब आक्षेपक तें लेकर अर्दित पर्यंत रोगों का वेग कहते हैं ॥

अथवा सब लक्षण युक्त अर्दित रोग है उससे बिपरीत अर्धांग वात के लक्षण जानने- परंतु संस्कृत मुख मात्रकी ही अर्दित रोग में लिखा है और अर्ध शरीर को अर्द्धवात करके लब्ध होने से नहीं लिखा सोई माधवने पातलिखा है

गतेवेगेभवेत्स्वास्थ्यंसर्वेष्वाक्षेपकादिषु ॥

अर्थ-आक्षेपकादि सब वातरोगों में वेग शांत होने से स्वास्थ्य कहिये पीड़ा कम होय जैसे मस्तक के ऊपर का भार (बोझा) उतारने से सुख की प्राप्ति होती है ॥

हनुग्रहके लक्षण

जिव्हानिर्लेखनाच्छुष्कभक्षणादभिघाततः ॥
कुपितोहनुमूलस्थःस्रंसयित्वाऽनिलोहनु
म् ॥ ४९ ॥ करोतिविवृतास्यत्वमथवासंवृ-
तास्यताम् । हनुग्रहःसतेनस्यात्कृच्छ्राच्च
र्वणभाषणम् ॥ ५० ॥

अर्थ- जिव्हाके अति घर्षण करने से- चना आदि सूखी वस्तु के खाने से- अथवा- किसी प्रकार चोटके लगने से हनुमूल- (कपोल) के अर्थात् डाढ की जड़में रहे जो वायु- सोकुपितहोकर हनुमूल को नीचे कर मुख को खुलाही रखदे- अथवा मुख को बंद करदे- उस्से (हनुग्रह) रोग कहते हैं। तबउस मनुष्य को खाना-बोलना -कठिन तासे होय ॥ ५० ॥

मन्यास्तंभके लक्षण

दिवास्वप्नाशनस्नानविकृतोर्ध्वनिरीक्षणैः ॥
मन्यास्तंभंप्रकुरुतेसएवश्लेष्मणायुतः ५१ ।

अर्थ- दिनमें सोने से- अन्न- स्नान- ऊंचेको विकृति पूर्वक देखने से इन कारणों से कोपको प्राप्त भई जो वात सो कफ युक्त होकर मन्या (नाड़ी) स्तंभन करे इस रोगको (मन्यास्तंभन) रोग कहते हैं ॥ ५१ ॥

जिव्हास्तंभकेलक्षण

वाग्वाहिनीशिरासंस्थोजिव्हांस्तंभयतेऽनिलः

जिव्हास्तंभःस्तेनाचपानवाक्येष्वनीशता-

अर्थ- वायु-वाणी के वहने वाली नाड़ी न्में प्राप्त हो जिव्हा का स्तंभन करदे उस्को (जिव्हास्तंभ) रोगकहते हैं उस्के अन्नपान की-तथा बोलने की सामर्थ्य का नाश करे ॥५२॥

शिरोग्रहकेलक्षण

रक्तमाश्रित्यपवनःकुर्यान्मूर्धधराःशिराः
रूक्षाःसबेदनाःकृष्णाःसोऽसाध्यःस्याच्छि
रोग्रहः॥५३॥

अर्थ-वायु रुधिर का आश्रय कर मस्तक के धारण करने वाली नाड़ी को-रूखी-पीड़ा युक्त- और काली करदे - यह (शिरोग्रह) रोग असाध्य है- शिरोग्रह- ऐसाभीपाठ है ॥५३॥

गृध्रसीकेलक्षण

स्फिक्पूर्वाकटिपृष्ठोरुजानुजंघापदंक्रमा
त्।गृध्रसीस्तंभरुक्तोदैर्गृह्णाति स्पंदतेमुहुः
वाताद्वातकफात्तन्द्रागौरवारोचकान्विता ५५

अर्थ- प्रथम स्फिक् कहिये कमर के नीचे का भाग जिस्को कूला कहते हैं- उसको स्तंभित करदे-पीछे क्रमसे कमर-पीठ ऊरू- जानु- जंघा- और पग-इन को स्तंभित करदे अर्थात् येरहि जांय- बेदना और तोद कहिये- चोंटने कीसी पीड़ा होय- और बारंबार कम्प होय- यह गृध्रसी रोग- बादी से होय है- और बात कफ से होय तो इसमें तन्द्रा- और भारीपना- और अरुचि- ये विशेष होंय- या प्रकार गृध्रसी रोग दो प्रकार का है ॥५५॥

विश्वाचीकेलक्षण

तलंप्रत्यंगुलीनांयाःकंडराबाहुपृष्ठतः।
बाह्वोःकर्मक्षयकरीविश्वाचीचेहसोच्यते

अर्थ- बाहु के पिछाड़ी से लेकर हाथ के ऊपरले भाग पर्यंत प्रत्येक अंगुली के नीचे मोटी नस हैं उनको दुष्ट कर हाथ से लेना-देना-पसारना- मुट्ठी मारनी- इत्यादिक कार्यों का नाशकर्त्ता जो रोग होय उसको (विश्वाची) रोग कहते हैं ॥ ५६ ॥

क्रोष्टुशीर्षकेलक्षण

वातशोणितजः शोथो जानुमध्ये महारुजः ज्ञेयः क्रोष्टुकशीर्षस्तु स्थूलः क्रोष्टुकशीर्षवत् ॥ ५१ ॥

अर्थ-वात रक्त से- जानु (घेंटू) इन दोनों की संधि में अत्यंत पीड़ा कारक सूजन हो- और स्यार के मस्तक समान मोटी हो उनको (क्रोष्टशीर्ष) ऐसे कहते हैं ॥ ५२ ॥

खंजऔरपांगुरेकेलक्ष-

वायुः कट्याश्रितः सक्थ्नः कंडरामाक्षिपेद्यदा ॥ खंजस्तदा भवेज्जंतुः पंगुः सक्थ्नोर्द्वयोर्वधात् ॥ ५३ ॥

अर्थ-कमर में रहे जो वात सो जंघा की नसों को ग्रहण कर एक पग में स्तंभित करदेय उसको खोडोरोग कहते हैं-और दोनों जंघान की नसों को पकड़ दोनों पैरों को स्तंभितकरदे उसको पांगुलो कहते हैं ५३

कलायखंजकेलक्षण

प्रकामन्वेपतेयस्तु खंजन्निवचगच्छति । कलायखंजंतंविद्यात्मुक्तसंधिप्रबंधनम् ॥

अर्थ- जो पुरुष चलते समय थर थर कांपे और खंज अर्थात् एक पैर से हीन मालूम होय- इस में संधि के बंधन सिथिल होते हैं इसरोग को (कलापखंज) कहते हैं ॥ ५४ ॥

बातकंटकके लक्ष-

रुक्पादेविषमेन्यस्तेश्रमाद्वाजायतेयदा।
वातेनगुल्फमाश्रित्यतमाहुर्वातकंटकम्

अर्थ- ऊंची नीची जगह में पैर पड़ने से अथवा श्रम के होने से वायू कुपित टकना में प्राप्त होकर पीड़ा करै तौ इस रोग को बात कंटक ऐसे कहते हैं ६०

पाददाह के लक्षण

पादयोः कुरुतेदाहंपित्तास्रसहितोऽनिलः
बिशेषतश्चक्रमतःपाददाहंतमादिशेत् ६१

अर्थ- जिसके पैर हर्ष युक्त (कहिये झनझनाहट पीड़ायुक्त) होंय और अत्यंत सोय जांवें- उस्को पाद हर्ष रोग कहते हैं यह कफ बात के कोप से होय है

अंसशोष और अपबाहुकके लक्षण

अंसदेशेस्थितोवायुःशोषयेदंसबंधनम्। शि
राश्चाकुंच्यतत्रस्थोजनयेदवबाहुकम् ६१

अर्थ-कंधामें रहे जो बायू सो कुपित होकर उसके बंधन को सुखाय दे- तब अंसशोष रोग प्रगट होय- और कंधामेंरहै जो- बायूसो नसों को संकोच करके अप बाहुक रोग प्रगट करे ६१

मूकादिकतीनरोगोंके लक्षण

आवृत्यवायुःसकफोधमनीःशब्दवाहिनीः
नरान्करोत्यक्रियकान्मूकमिम्मिणगद्ग
दान् ॥ ६४॥

अर्थ-कफ युक्त वायु शब्द के बहने बाली नाड़ी में प्राप्त होकर

र मनुष्यों का बचन क्रियारहित-मूक-मिम्मिण-और गद्गद-ऐसा करदे-मूक कहिये जिस्से बोला न जाय-मिम्मिण कहिये गिनगिनाय कर नाक से बोले-और गद्गद-बोलते समय-बीच के पद और व्यंजनों को न बोले और मंद बोले इन रोगों के कारण सदृश होकर रोगों के भिन्न भिन्न प्रकार होते हैं-वो दोषों के उत्कर्ष करके अथवा प्रारब्ध वश से होते हैं ऐसे जानना॥

तूनीरोगकेलक्षण

अधोयावेदनायातिवर्चोमूत्राशयोत्थिता।
भिन्दन्तीवगुदोपस्थंसातूनीनामनामतः ६०

अर्थ-पक्काशय-और मूत्राशय-से उठी जो पीड़ा सो नीचे जाय कर प्राप्त हो-और गुदा-तथा उपस्थ कहिये स्त्री पुरुषों के गुह्य स्थान इन में भेद करे-अर्थात् पीड़ा करे उस्को तूनी रोग कहते हैं॥६५॥

प्रतूनीकेलक्षण

गुदोपस्थोत्थिताचैवप्रतिलोमंप्रधावति॥
वेगैःपक्काशयंयातिप्रतूनीचेहसोच्यते ६१

अर्थ-गुदा और उपस्थ इन से उठी जो पीड़ा उलटी ऊपर जाय कर प्राप्त हो और जोर से पक्काशय में प्राप्त हो और तूनी के समान पीड़ा करे उसको प्रतूनी कहते हैं॥६१॥

आध्मानरोगकेलक्षण

साटोपमत्युग्ररुजमाध्मानमुदरंभृशम्। आ
ध्मानमितिजानीयाद्घोरंबातनिरोधजं६२

अर्थ- गुड़ गुड़ शब्द युक्त अत्यंत पीड़ा युक्त ऐसा उदर (पक्काशय) अत्यंत फूले-अर्थात् बादी से भर कर चाम की थैली के समान होजाय-इस भयङ्कर रोग को (आध्मान) रोग कहते

हैं - यह बात के रुकने से होय है ॥ ६७ ॥

प्रत्याध्मानकेल०

विमुक्तपार्श्वहृदयंतदेवामाशयोत्थितम्।
प्रत्याध्मानंविजानीयात्कफव्याकुलतानिल
म्॥६८॥

अर्थ- और वही आध्मान रोग आमाशय में उत्पन्न होय तौ उस्को (प्रत्याध्मान) कहते हैं - इस में पसवाड़े - और हृदय - इनमें पीड़ा नहीं होय - और बायू कफ करके व्याकुल हो ॥

बातष्ठील्लाकेलक्षण

नभिरधस्तात्संजातःसंचारीयदिवाऽचलः।
अष्ठील्लावद्घनोग्रंथिरूर्ध्वमायतउन्नतः ६९ वा
तष्ठीलांविजानीयाद्बहिर्मार्गावरोधिनीम्

अर्थ- नाभी के नीचे उत्पन्न भई - और इधर उधर फिरे - अथवा अचल अष्ठीला (गोलपाषाण) के समान कठिन और ऊपर का भाग कुछ लंबा होय - और आड़ी कुछ ऊंची होय - और वहि मार्ग कहिये - अधो बायू - मल - मूत्र - इनका अबरोध कहिये (रुकना) हो ऐसी गांठ को बातष्ठीला कहते हैं ६९॥

प्रत्यष्ठील्लाकेलक्षण

एतामेवरुजायुक्तांवातविण्मूत्ररोधिनीं।
प्रत्यष्ठीलामितिवदेज्जठरेतिर्यगुत्थिताम्

अर्थ- बातष्ठीला अत्यंत पीड़ा युक्त - बात - मूत्र - मलके रोधकरनेवाली और जो तिरछी प्रगट भई होय उसको प्रत्यष्ठीला

१ क्षमातुरेणपनीयं पीत्वाबेगाविधारणं। धावित्ते वापिवेन्तोयं भुक्तोवा विदाहिच। तया पयोम्बुपाना द्वा दुर्जरःपललेनवा। सा षीला नाम विख्याता गुरुवी कुक्षिभिन्नापिवा इति अत्रियः॥

कहते हैं ॥७०॥

मूत्रावरोधकेलक्षण

मारुते विगुणेबस्तौमूत्रंसम्यक्प्रवर्त्तते
विकाराविविधाश्चापिप्रतिलोमेभवंति हि
॥७१॥

अर्थ-बस्ती (मूत्रस्थान) में वायु अनुलोम गति से गमन करै- तौ मूत्र अच्छी रीति से उतरै अैसे प्रतिलोम से गमन करै तौ अनेक प्रकार के पथरी-मूत्रकृच्छ्रादि विकार उत्पन्न होंय॥

कंपबायूकेलक्षण

सर्वांगकंपः शिरसोवायुर्वेपथुसंज्ञकः ७२

अर्थ-सब अंगों को और मस्तक को जो कंपाये उस वायू को - वे पंथु (कंप) वायू कहते हैं

खल्लीकेलक्षण

खल्लीतुपादजंघोरुकरमूलावमोटिनी ७२

अर्थ-और जो बायू पैर-जंघा-ऊरू- और हाथ के मूल में कंपन करै- उस्को खल्ली (मूलासना) रोग कहते हैं ॥ ७२॥

ऊर्ध्ववात के लक्षण टीकाकारने लिखे हैं

अधःप्रतिहतोवायुःश्लेष्मणामारुतेनच ।
करोत्युद्गारबाहुल्यमूर्ध्ववातःप्रचक्षते ॥

अर्थ-कफ बात करके पीड़ित नीचे की वायू-डकार वहुतलावे उसवातको ऊर्ध्व कहते हैं-परंतु टोडरानंदने कुछबिलक्षण लिखा है

यथा

भुक्तेप्यभुक्तेसुभृशंवायस्योद्गारः प्रजायते। स
ततंघोषवांश्चातिऊर्ध्ववातंतमादिशेत् ॥

अर्थ- भोजन करने के - अथवा भोजनके पहिले-अथवा

सोने के समय डकार निरन्तर शब्द वान् आवै उस्को ऊर्ध्ववात कहते हैं ॥

प्रलापकेलक्षण

स्वहेतुकुपिताद्वातादसंबद्धनिरर्थकम् ।ब
चनंयन्नरोब्रूतेसप्रलापःप्रकीर्तितः

अर्थ-अपने हेतु से कुपित भई जो बात सो असंबद्ध-अर्थरहित वाणी बोले अर्थात् बकबाद करे अथवा बड़बड़ शब्द करे उसको प्रलाप कहते हैं ॥

रसाज्ञानकेलक्षण

भुजानस्यनरस्यान्नंमधुरप्रभृतीन्रसान् ।र
सज्ञायन्नजानन्तिरसज्ञानंतदुच्यते

अर्थ-जो मनुष्य भोजन करे उसकी जीभ को मधुर (मीठा) खट्टा इत्यादिक का ज्ञान न होय उस रोग को रसज्ञान कहते हैं

अनुक्तबातरोगसंग्रहार्थ कहते हैं

स्थाननामानुरूपैश्च लिंगैः शेषान्विनिर्दि
शेत् । सर्वेष्वेतेषुसंसर्गंपित्ताद्यैरुपलक्ष
येत् ॥७३॥

अर्थ- स्थान और नाम-इन्के अनुरूप कहिये तुल्य औसे लक्षणों से-शेष जो बात व्याधि-सो जाननी-स्थानानुरूप कहिये जैसे-कुक्षिशूल-नखभेद-इत्यादिक-नामानुरूप कहिये जैसे शूल के कहने से कील निखातवत् पीड़ा जाननी।उसी प्रकार तोद भेदादिक करके भी पीड़ा विशेष जाननी चाहिये । और पित्त-कफ-रुधिर-इन के संसर्ग से द्विदोषज व्याधि जाननी चाहिये ॥७३॥

साध्यासाध्यबिचार

हनुस्तंभार्दिताक्षेपपक्षाघातापतानकाः
कालेनमहताबातायत्नात्सिध्यंतिवानवा
॥ ७४ ॥ नवान्बलवतस्त्वेतान्साधयेन्निरु
पद्रवान् ॥ ७५ ॥

अर्थ- हनुस्तंभ- अर्दित- आक्षेप- पक्षाघात- अपतानक- ये बात व्याधि बहुत दिन में बड़े परिश्रम से औरयत्नसेसाध्य होती हैं अथवा कभी साध्य नहीं होय- परन्तु बलवान् पुरुष के ये बात व्याधि नई प्रगट भई हो और उपद्रव रहित होय तौ उसको चिकित्सा करनी चाहिये -

बातव्याधिके उपद्रव

बिसर्पदाहरुक्संगमूर्च्छारुच्यग्निमार्दवैः
क्षीणमांसबलंबाताघ्नंतिपक्षवधादयः ७६

अर्थ- विसर्परोग- दाह- शूल- मल- मूत्रका निरोध- मूर्च्छा अरुचि - मन्दाग्नि- इन लक्षण युक्त जो होय- और बल क्षीण होगया होय- ऐसे पुरुषोंको पक्षबधादिक बिकार मारक अर्थात् प्राण के हरण कर्त्ता होते हैं ॥७६॥

असाध्यलक्षण

शूनंसुप्तत्वचंभग्नंकंपाध्मानानिपीड़ितम्
रुजार्तिमंतंचनरंवातव्याधिर्विनाशयेत् ७७

अर्थ- सूजन वाला- जिसकी त्वचा सोइ गई होय- अर्थात् जिस को स्पर्श होने का ज्ञान न होय- जिसकी हड्डी टूटगई होय- कंप और अफरा इनसे अत्यन्त पीड़ित होय- रुजा और आर्त्ति कहिये- शूल युक्त ऐसा मनुष्य को यह बात व्याधि रोग नाश करता है ॥ ७७ ॥

अब पांच प्रकार की प्रकृति स्थ वायु के लक्षण और कार्य कहते हैं

अव्याहतगतिर्यस्यस्थानस्थः प्रकृतौस्थि
तः। वायुः स्यात्सोधिकंजीवेद्वीतरोगः स
माःशतम् ॥३८॥

अर्थ- जिस पुरुष की वायु अव्याहतगति और अपने आ श्रय से रहने वाली- और प्रकृति स्थित कहिये न बढ़न क्षीण होय- वह पुरुष निरोगी होकर (अधिकं समाः शतं) कहिये एक से बीस वर्ष और पांच दिन पर्यन्त जीवे ॥३८॥

इतिश्री पण्डित दत्तराममाथुर प्रणीत भावार्थ बोधनीमाथुरीभाषाटीकायांबातव्याधिनिदानसमाप्तम् ॥

बातरक्तनिदानम्

+ शंका - क्यौं जी सुश्रुत में तो बात व्याधि अध्यायमें ही बातरक्त कहा है फिर माधवने पृथक् क्यौं कहा + उत्तर + तुम ने कहा सो ठीक है परंतु क्रिया विशेष ज्ञापनार्थ माधवने अलग लिखा है और इसी रीति से चरक में भी बातव्याधि अध्याय के पीछे बात रक्ताध्याय कही है ॥

लवणाम्लकटुक्षारस्निग्धोष्णाजीर्णभोजनैः
क्लिन्नशुष्कांबुजानूपमांसपिण्याकमूलकैः १।
कुलित्थमाषनिष्पावशाकादिपललेक्षुभिः। द
ध्यारनालसौवीरसुक्ततक्रसुरासवैः॥ २॥ वि
रुद्धाध्ययनक्रोधदिवास्वप्नप्रजागरैः। प्राय

घ्राः सुकुमाराणांमिथ्याहार विहारिणाम् ॥
३ ॥ स्थूलानांसुखिनांचाथबातरक्तं प्रकु-
प्यति ॥

अर्थ- नोन-खटाई-कड़वी-खार-चिकना-गरम-कच्चा ऐसे भोजन से- सड़े- और सूखे- ऐसे जल संचारी जीवों को और जल के समीप रहने वाले जीवों के मांस से पिण्याक (खर) मूली-कुलत्थी-उड़द) निष्पाव-(सेम) शाक- (तरकारी) पलल- (तिलकीचटनी) ईख-दही-कांजी-सौबीर मद्य-सुक्त (अचार आदि) काछ-दारू- आसव (मद्यविशेष) बिरुद्ध (जैसे दूध मछली) अध्यशन (भोजन के ऊपर भोजन) क्रोध- दिन में निद्रा-रात में जागना-इन कारणों से विशेष कर के सुकुमार पुरुषों के और मिथ्या आहार-बिहार करने वाले पुरुषों के- और जो मोटा होय- तथा सुखा होय- ऐसे मनुष्यों के (बातरक्त) रोग होय है ॥

बातरक्तकी सम्प्राप्ति

हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतश्चाश्नतश्च विदाह्यन्नं
स विदाहाशनस्य । कृत्स्नंरक्तंविदहत्या
शुतच्चस्रस्तंदुष्टंपादयोश्चीयतेतु ॥ तत्सं
पृक्तं वायुनादूषितेनतत्प्राबल्यादुच्यते
बातरक्तम् ॥ ४ ॥

अर्थ- हाथी-घोड़ा-ऊंट-इनपर बैठकर जाने से (यह वायू के बढ़ने का और विशेष करके रुधिर के उतरने का कारण है (बिदाहकारी अन्न के खाने वाले पुरुष के (इसी से दग्धरुधिर की वृद्धि होती है) गरमा गरम अन्न के खाने वाले- ऐसे पुरुष के सब शरीर का रुधिर दुष्ट होकर पैरों में इकट्ठा होय-

और वह दुष्ट बायू से दूषित होकर मिले- इस रोग में वायू प्रव
ल है इसी से इस रोग को (बातरक्त) ऐसे कहते हैं॥

पूर्वरूप

स्वेदो ऽत्यर्थंनवाकार्ष्ण्यंस्पर्शाज्ञत्वंक्षते
ऽतिरुक् ॥ सन्धिशैथिल्यमालस्यंसद
नंपिडिकोद्गमः ॥ ६ ॥ जानुजंघोरुकट्यं
शहस्तपादांगसंधिषु ॥ निस्तोदःस्फुरणं
भेदोगुरुत्त्वंसुप्तिरेवच ॥ ७ ॥ कंडूःसंधिषु
रुक्भूत्वाभूत्वा नश्यतिचासकृत् ॥ वैव
र्ण्यमंडलोत्पत्तिर्वातास्रक्पूर्वलक्षणम् ८

अर्थ- पसीना बहुत आवैं- अथवा नहिं आवै- शरीर काला होजाय- शरीर में स्पर्श का ज्ञान जाता रहै- और थोड़ी सी चोट लगने से पीड़ा अधिक होय- संधि ढीली होजांय- आलस्य आवे- ग्लानि- शरीर में फुन्सी उठे- घोंटू- जंघा- उरू- कमर- कंधा- हाथ- पैर- और अंगों में संधि इन्में सुई के चुभाने कीसी पीड़ा होय- स्फुरण (फरकना) तोड़ने कीसी पीड़ा- भारीपना- बधिरता- ये लक्षण होते हैं- और संधिन में खुजली चले- और शूल होकर बारंबार नाश होजाय- शरीर का विवर्ण होजाय- रुधिर के चकत्ता देह में पड़जाय- ये बात रक्त के पूर्व रूप- होते हैं॥ ८॥ अब कहते हैं कि बात रक्त को अन्य दोषों का संसर्ग होने से उसके लक्षण न्यारे २ लिखते हैं॥

बाताधिके ऽधिकंतत्रशूलस्फुरणतोदन
म्। शोथस्यरौक्ष्यंकृष्णत्वंश्यावतावृद्धिहा
नयः ॥ ९ ॥ धमन्यंगुलिसंधीनांसंकोचोऽ
गग्रहोऽतिरुक् ॥ शीतद्वेषानुपशयस्तंभवेपथु

सुप्तयः ॥२०॥

अर्थ- बाताधिक बातरक्त में शूल- अंगोंकाफरकना- चोंटने कीसी पीड़ा- ये अधिक होते हैं- सूजन रूखापना- नीलापना अथवा श्यामबर्णता- बातरक्त के लक्षणों की वृद्धि होय- और क्षण भर में ह्रास (कमहो) धमनी और अंगुलीन की संधीन में संकोच होय- शरीर जकड़ बंध होय- अत्यन्त पीड़ा होय- सर्दी बुरी लगे- और शीतके सेवन करने से दुःख होय- स्तंभ होय- और कंप और शून्यता होय ये लक्षण होते हैं ॥

रक्ताधिकके लक्षण

रक्ते शोथोऽतिरुक्क्लेदस्ताम्रश्चिमचिमायते ॥ स्निग्धरूक्षैः शमं नैति कंडूक्लेदसमन्वितः ॥२१॥

अर्थ-रक्ताधिक बातरक्त में सूजन- अत्यन्त पीड़ा- और उसमें से तामे के प्रकार क्लेद बहै- उस सूजन में चिमचिम बेदना होय- स्निग्ध अथवा रूखे पदार्थ से शांति न होय- उस सूजन में खुजली और पानी निकरे ॥२१॥

पित्ताधिकके लक्षण

पित्ते विदाहः संमोहः स्वेदो मूर्च्छा मदः सतृट् । स्पर्शासहत्वं रुग्रागः शोफः पाको भृशोष्मता २२॥

अर्थ- पित्ताधिक बातरक्त में- अत्यन्त दाह- इन्द्री मन्न को मोह- पसीना- मूर्च्छा- मस्तपना- प्यास- स्पर्श बुरा मालूम हो- पीड़ा- लालरंग- सूजन- छोटे छोटे पीरे फोड़ा- अत्यन्त गरमी- यह लक्षण होते हैं ॥ २२ ॥

कफाधिकके लक्षण

कफेस्तैमित्यगुरुतासुप्तिस्निग्धत्वशीतताः
कंडूर्मन्दाचरुकद्वंद्वेसर्वलिंगंचसंकरात् २३

अर्थ-कफाधिक बातरक्त में स्तैमित्य (गीले कपड़ा सें आच्छादित समान) भारीपना- शून्यता- चिकनापन- शीतलता- खुजली- और मन्द पीड़ा ये लक्षण होते हैं ॥ २३ ॥

दो दोषों के बातरक्त में दो दोषों के लक्षण और तीनों दोषों के बात रक्त में तीन दोषों के लक्षण होते हैं ÷ पैरों में बात रक्त हुआहोय उसकी अपेक्षा करने से हाथों में होय है उस्को कहेहैं॥

पादयोर्मूलमास्थायकदाचिद्धस्तयोरपि ॥ स्त
आखोर्विषमिवक्रुद्धंतद्देहमनुसर्पति २४

अर्थ- वो बात रक्त पैरों के मूल में होकर कदाचित् हाथों में भी होय है। सो आखु (मूसे) के बिष सदृश सर्वदेह में मंद मंद फैल जाय- ये बातरक्त (चरक) ने दो प्रकार का कहा है एक उत्तान- दूसरा गंभीर- त्वचा और मांस इनमें होय सो उत्तान गंभीर- इसकी अपेक्षा भीतरी होय है ॥

असाध्यलक्षण

आजानुस्फुटितंयच्च प्रभिन्नंप्रस्रुतंचयत् ।
उपद्रवैर्यच्चजुष्टंप्राणमांसक्षयादिभिः २५
बातरक्तमसाध्यंस्याद्याप्यंसंवत्सरोत्थितम्

अर्थ- आजानु (जंघा के नीचे के भाग) पर्यन्त गयाभया बात रक्त असाध्य है- जिस्की त्वचा फट गई होय- चिरगया होय- और जो स्राव बहे- युक्त होय- ऐसा बात रक्त अप्राण- मांस- क्षयादि उपद्रव युक्त होय- आदि शब्द से जो आगे ((भ्रम आरोचकस्वांस) इत्यादिक कहेंगे वो भी लक्षण होंय सो भी असाध्य है- बातरक्त प्रगट भये बर्ष दिन व्यतीत होगया हो

य- सो याप्य होय है- वर्ष दिन के पहिले साध्य होय है-प रन्तु उसमें स्फुटितादि लक्षण न होंय तौ साध्य है ॥२५॥

उपद्रव

अस्वप्नारोचकश्वासमांसकोथशिरोग्रहाः संमूर्च्छाऽमन्दरुक्तृष्णाज्वरमोहप्रवेपकाः। हिक्कापांगुल्यवीसर्पपाकतोदभ्रमक्लमाः ॥ २७ ॥ अंगुलीवक्रतास्फोटदाहमर्मग्रहार्बुदाः ॥ एतैरुपद्रवैर्वर्ज्यं मोहेनैकेनचापियत् २८

अर्थ- निद्रानाश- अरुचि- श्वास- मांसकासडना मस्तक का जकड़ना- मूर्च्छा- अत्यन्त पीड़ा- प्यास- ज्वर-मोह- कंप- हिचकी- पांगुरापना- विसर्परोग- पकना- नोचने कीसी पीड़ा- भ्रम- अनायास- श्रम- उंगली टेढी होजांय- फोड़ा- दाह-मर्मस्थानों में पीड़ा- अर्बुद (गांठ) हो- इन उपद्रव युक्त बातरक्त वाला रोगी आसाध्य है- अथवा एक मोह युक्त ही होय तौभी असाध्य जानना २८

साध्यासाध्यविचार

अकृत्स्नोपद्रवंयाप्यंसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ एकदोषानुगंसाध्यंनवंयाप्यंद्विदोषजम् ॥ त्रिदोषजमसाध्यंस्याद्यस्यचस्युरुपद्रवाः ॥२९॥

अर्थ- जिसबातरक्त में सब उपद्रव होंय नहीं -वो याप्य है- और निरुपद्रवसाध्य है- और जो एक दोष का होय वो साध्य है- और द्विदोषज याप्य- और त्रिदोषज-तथा उपद्रव युक्त होय तौ बातरक्त असाध्य है। यह श्लोक क्षेपक है साध

व का नहीं हैं (इतिवातरक्तम्)

उरुस्तंभनिदान

शीतोष्णद्रवसंशुष्कगुरुस्निग्धैर्निषेवितैः
जीर्णाजीर्णेतथायाससंक्षोभस्वप्न जागरैः १
सश्लेषमेदःपवनःसाममत्यर्थसंचितम् ।
अभिभूयेतरंदोषमूरूचेत्प्रतिपद्यते ॥ २ ॥
सक्थ्यस्थीनिप्रपूर्यांतःश्लेष्मणास्तिमितेन
च ॥ तदास्तभ्नातितेनोरूस्तब्धौशीतावचे
तनौ ३ परकीयाविवगुरूस्यातामतिभृ
शव्यथौ । ध्यानांगमर्दस्तैमित्यतंद्राछर्द्य-
रुचिज्वरैः ४ संयुतौपादसदनकृच्छ्रोद्धर
णसुप्तिभिः । तमूरुस्तंभमित्याहुराढ्यवा
तमथापरे ॥ ५ ॥

अर्थ- शीतल- गरम- पतले- शुष्क- भारी- चिकने- ऐसे परस्पर बिरुद्ध भोजन से जीर्ण अजीर्ण- उसी प्रकार दंडक सरत के करने से - चित्तके क्षोभसे - दिन में सोने से- रात्रिमें जागना- इन कारणों से- कफ मेद युक्त अत्यंत संचित भयाआम युक्त बात इतर दोषों को अर्थात् पित्त को आच्छादितकर उरू में आयकर प्राप्त होय- और उरू के हाडों कोभाड़ कफसे परिपूर्ण करे- तबउसके उरू स्तंभित हो (जकड़जाय) और शीतल तथा निर्जीवहोजाय- और दूसरे पुरुष के उरू के समान- उठर के चलना इस विषय में असमर्थ होय- और भारी- अत्यन्त पीड़ा- युक्त होय- चिंता- अंगों कातोड़ना- आर्द्रता- (गीला) तन्द्रा- बमन- अरुचि- और ज्वरसहित मनुष्य के दोनों उरू- जकड़ जांय बड़े कष्ट से चले- और

अन्यता होय- इस रोग को (उरुस्तंभ) ऐसे कहते हैं- और कोई (आढ्यवात) कहते हैं ॥

पूर्वरूप

प्राग्रूपंतस्यनिद्राऽतिध्यानंस्तिमिततान्वरः।
लोमहर्षोऽरुचिश्छर्दिर्जंघोर्वोःसदनंतथा ६

अर्थ- निद्रा बहुत आवे- अत्यंतचिंता- मंदता- ज्वर- रोमांच- अरुचि- वमन- जंघा और उरू इन में पीड़ा होय- यह उरूस्तंभ के पूर्व रूप होते हैं ॥६॥

उरूस्तंभकेलक्षण

वातशंकिभिरज्ञानात्तस्यस्यात्स्नेहनात्पुनः
पादयोः सदनंसुप्तिः कृच्छ्रादुद्धरणंतथा७
जंघोरुग्लानिरत्यर्थं शश्वदाना हवेदना।प
दंचव्यथतेऽत्यर्थं शीतस्पर्शनवेत्तिच॥ ८
संस्थानेपीडनेगत्यांचालनेचाप्यनीश्वरः।
अन्यस्येवाहिसंभग्नाऊरूपादौचमन्यते ९

अर्थ- पैरों का सोना- संकोच होना- इत्यादिक बात रोग के समान चिन्ह मिलने से उस मनुष्य को बात रोग की शंका होय- तब वो मनुष्य तैलादिक स्नेहन चिकित्सा करै- तौ उसके दूना रोग बढ़े- पैरों में पीड़ा होय- तथा पैर सोय जावें- बड़े कष्ट से पैर उठाया और धरा जाय- जंघा और उरू इन्में अधिक पीड़ा होय- और निरन्तर दाह- तथा बेदना होय- पैरों में व्यथा होय- शीतल पदार्थ का स्पर्श मालूम न होय- तथा पैर के उठाने में- रगड़ने में- अथवा चलने में- अथवा हलाने में- असमर्थ होय- पैर और उरू ये टूटे से तथा अन्य मनुष्य के से मालूम हो- येलक्षण उरूस्तंभ के

हैं- व्याधिके स्वभाव से यह उरूस्तंभत्रिदोष कारकही है- बातादि भेदोंसे अनेक प्रकार का नहीं है ॥

असाध्यलक्षण

यदादाहार्त्तितोदार्त्तोवेपनः पुरुषोभवेत्
ऊरूस्तंभस्तदाहन्यात्साधयेदन्यथानवम्
॥ १० ॥

अर्थ- जिस समय पुरुष दाह-शूल-औरतोद (नोचनेकी सी पीड़ा) इन से पीड़ित होकर कंप युक्त होय-उस समय वो उरूस्तंभ रोग उसका नाश करै है- और ये लक्षण न होंय-और रोग नया होय तो ये रोग साध्य है ॥ १० ॥

आमबातनिदान

बिरुद्धाहारचेष्टस्यमन्दाग्नेर्निश्चलस्यच
स्निग्धंभुक्तवतोह्यन्नंव्यायामंकुर्वतस्तथा १
वायुनाप्रेरितोह्यामः श्लेष्मस्थानंप्रधावति । ते
नात्यर्थंविदग्धोऽसौधमनीः प्रतिपद्यते २ वा
तपित्तकफैर्भूयोदूषितः सोन्नजोरसः । स्रोतां-
स्यभिस्यंदयतिनानावर्णोतिपिच्छिलः ३ यु
गपत्कुपितावेतौत्रिकसंधिप्रवेशकौ । स्तब्धंच
कुरुतोगात्रमामवातः सउच्यते ॥ ४ ॥

अर्थ- बिरुद्ध आहार (क्षीरमत्स्यादि) और बिरुद्धबिहार करने वारे मनुष्य के-मंदाग्निवालेके-जोदंडकसरत नकरे - और चिकना अन्नखाय कर दंडकसरत करने वाले- ऐसे पुरुष के आम बायु से प्रेरित होकर कफ के आमाशयादिस्था

न के प्रतिश्याय कर प्राप्त होय- और उस कफ से अत्यन्त दूषित होकर वही आम- धमनी- नाड़ीन्में प्राप्त होय- कर भीतर वो अन्न कारस (आम) वात- और कफ पित्तसें दूषित होकर नाड़ीन्के छिद्रों में भर जाय- वह अनेक प्रकार के रंग का अति गाढ़ा होय है- पीछे वे बात कफ एकहीकाल में कुपित होकर त्रिकसंधिन्में जाय के प्रवेश करे- तबदेह जकड़ीसीहोजाय- इसरोगको (आमबात) ऐसे कहते हैं ॥

आमवातकेसामान्यलक्षण

अङ्गमर्दोऽरुचिस्तृष्णा आलस्यं गौरवंज्वरः । अपाकः शूनताऽङ्गानामामवातःस उच्यते ॥ ५ ॥

अर्थ- अंगोंका टूटना - अरुचि- प्यास- आलकस- भारीपना- ज्वर- अन्नका न पचना- और देहमें शून्यता होजाय- इस रोग को (आमबात) कहते हैं- अब अत्यंत बढ़गया होय - आम बात उस्के लक्षण कहते हैं

सकष्टः सर्वरोगाणांयदाप्रकुपितोभवेत् । हस्तपादशिरोगुल्फत्रिकजानूरुसंधिषु ६ करोति सरुजंशोथंयत्रदोषः प्रपद्यते । सदेशो रुजतेऽत्यर्थं व्याबिद्ध इववृश्चिकैः ७ जनयेत्सोऽग्निदौर्बल्यं प्रसेकारुचिगौरवं । उत्साहहानिवैरस्यं दाहंचबहुमूत्रताम् ८ कुक्षौकठिनतांशूलंतथानिद्राविपर्ययम् । तृट्छर्दिभ्रममूर्च्छाश्चहृद्ग्रहं विड्विवंधताम् ॥ ९ ॥

१ अविपक्कर संएकं दुर्गंधंवहुपिच्छलं- सरनंसर्वमात्राणामामइत्यभिधीयते ॥ प्रविपक्करसं केचित् केचितंमलसंचयं- प्रथमंदोषदुष्टिंवा केचिदामं प्रचक्षते

जाड्यांत्रकूजमानाहंकष्टांश्चान्यानुपद्रवान्।

अर्थ- यह आम बात जिस समय बढ़े उस समय सब रोगों में कष्टकर्त्ता होती है- अर्थात् सब रोगों से बढ़कर कष्टदायक है- हाथ-पैर-मस्तक-घोंट्ट-त्रिकस्थान-जानू-जंघा-इनकी संधिनमें पीड़ा युक्त सूजन करे- और जिस जिस ठिकाने आमजाय-उसी उसी ठिकाने-बीछू के डंक मारनेकीसी पीड़ा करे-यह रोग मंदाग्नि-मुखसेवानी का गिरना-अरुचि-देहभारी-उत्साहकानाश-मुखमें बिरसता-दाह-बहुत मूत्र का उतरना-कूख में कठिनता-शूल-दिनमें निद्रा आवै-रात्तिमें जागे-प्यास-वमन-भ्रम-मूर्च्छा-हृदय में दुख-मल का अबरोध-जड़ता-आंतों का गूंजना-अफरा-तथा अन्यंत उपद्रव कहिये-बातव्याधिमें कहे-कल्लाप-खं आदिकों को करे ॥ २० ॥

विशेषलक्षण

पित्तात्सदाहरागंचसशूलंपवनानुगम्।स्तैमि
त्यंगुरुकंडूचकफजुष्टंतमादिशेत्॥२१॥

अर्थ- पित्त में जो आम बात होय-उसमें दाह-और लालरंग होय है- वादी के आम बातमें शूल होय है। कफसंबन्धी आम बातमें-देह में आर्द्रता (गीला) और भारीपना तथा खुजली चले है

साध्यासाध्यबिचार ॥

एकदोषानुगः साध्यो द्विदोषोयाप्यउच्यते
सर्वदेहे चरः शोथःसकृच्छ्रःसन्निपाति-
कः॥ २२॥

अर्थ-एकदोष का आमबातरोग साध्य है- दो दोषों का याप्य

है-और सब देह में बिचरने वाली सूजन-अथवा त्रिदोषसे प्रगट आमबात रोग कष्टसाध्य जानना- ॥ + इतिआमवातनिदान +

शूलनिदानम्

दोषैः पृथक्समस्तामद्वंद्वैः शूलोष्टधाभवेत् । सर्वेष्वेतेषुशूलेषुप्रायेणपवनःप्रभुः ॥ १ ॥

अर्थ- वात-पित्त-कफ-इन से तीन प्रकार का-एक सन्निपात से-एक आम से और-तीन द्वंद्वज-ऐसे सब मिलकर आठ प्रकार का शूल रोग है- इन सब शूलों में बादी का शूल प्रबल है । ज्वर के समान शूल रोग की प्रथम उत्पत्ति-(हारीत) में कही है-सो इस प्रकार-((कामदेव के नाश करने के अर्थ शिवने क्रोध करके त्रिशूल को फेंका-उस त्रिशूल को अपने सन्मुख आता हुआ देखकामदेव भयभीत होकर विष्णुभगवान् के देह में प्रवेश कर गया तदनंतर वो त्रिशूल विष्णु की हुंकार से मूर्च्छित होकर गिरा-तो पृथ्वी में शूल इस नाम से प्रसिद्ध भया-तब से वो शूल पंचभूतात्मक देहधारी मनुष्यों को पीड़ा करने लगा । इस प्रकार इसकी उत्पत्ती है-शिव के त्रिशूल से उत्पन्न भया तथा शूल के घाव के समान पीड़ा करे है-इसी से इसको शूल ऐसे कहते हैं ॥

बातशूलकेकारण और

१ अनंगनाशायहरस्त्रिशूलं-मुमोचकोपान्मकरध्वजस्य । तमापतंतं सहसानिरीक्ष्य । भयार्दितोविष्णुतनुंप्रविष्टः । सविष्णुहुंकारविमोहितात्मा पपातभूमौप्रथितश्चशूलः । सपंचभूतानुगतःशरीरं प्रदूषयत्यस्यहि पूर्वसृष्टिः

लक्षण

व्यायामयानादतिमैथुनाच्च प्रजागराच्छी
तजलातिपानात् कलायमुद्गाढकिको
द्रुदोषादत्यर्थरूक्षाध्यशनाभिघातात्।
२ कषायतिक्तादिविरूढकान्न विरुद्ध
वल्लूरकशुष्कशाकात्। विट्शुक्रमूत्रा
निलवेगरोधाच्छोकोपवासादतिहास्य
भाषात् ३ वायुः प्रवृद्धोजनयेद्धिशूलं
हृत्पार्श्वे पृष्ठत्रिकबस्तिदेशे जीर्णेप्रदो
षेचघनागमेच शीतेचकोपंसमुपैतिगाढ
म् ४ मुहुर्मुहुश्चोपशमप्रकोपौ विण्मूत्र
संस्तंभनतोदभेदैः। सस्वेदनाभ्यंजन
मर्दनाद्यैः स्निग्धोष्णभोज्यैश्च शमंप्रया
ति॥५॥

अर्थ- दंड कसरत- बहुत चलना- अति मैथुन- अत्यंत जागना- शीतल जल बहुत पीना- कांगनी- मूंग- अहैर- कोदों अत्यन्त रूखे पदार्थ के सेवन से- और अध्यशन (भोजन के ऊपर भोजन) लकड़ी आदि के लगने से- कषैली- कडवी भीजा अन्न जिस्मे अंकुर निकस आये हों- विरुद्ध क्षीर मछली आदि सूखामांस- सूखाशाक -(कचरियाआदि) इन्के सेवन करने से- मल- मूत्र- शुक्र और अधो बायू- इन्के बेग को रोकने से- शोक से-उपवास (व्रत) के करने से- अत्यन्त हंसने से- बहुत बोलने से कोप को प्राप्तभई जोबात सो व ढ़कर- हृदय- पसवाड़ा- पीठ- त्रिकस्थान- मूत्रस्थान में शू ल को करे- और वो भोजन पचने के पीछे प्रदोष कालमें च

षी काल में - शीत काल में - इन दिनों में शूलका अत्यंत कोप करे - और बारंबार कोप होय - मल-मूत्र का अवरोध -पीड़ा - और भेद - ये लक्षण बात शूलके हैं - तथा स्वेदन और अभ्यंजन - तथा मर्दन - इत्यादिक से-और चिकने गरम - अन्न से यह शूल शांति होय है ॥५॥

पित्तशूलकेकारण और लक्षण

क्षारातितीक्ष्णोष्णविदाहितैलनिष्पावपिण्याककुलित्थयूषैः । कट्वम्लसौवीरसुराविकारैः क्रोधानलायासरविप्रतापैः ६ ग्राम्यातियोगादशनैर्विदग्धैःपित्तंप्रकुप्याशु करोतिशूलं । तृण्मोहदाहार्त्तिकरंहिनाभ्यांसंस्वेदमूर्च्छाभ्रमशोषयुक्तं ७। मध्यंदिनेकुप्यतिचार्द्धरात्रे विदाहकालेजलदात्ययेच । शीतेतुशीतैःसमुपैतिशांतिंसुस्वादुशीतैरपिभोजनैश्च॥८॥

अर्थ- यव क्षार आदि खार - मरिच आदि तीखी और गरम - विदाह कारक वांस - और करील आदि - तेल - सिंबी - खल कुलथी - के यूष से - कड़ुवा - खट्टा - सौबीर - (मद्यविशेष) सुरा बिकार (कांजी इत्यादिक) क्रोध से - अग्नि के समीप रहने से - परिश्रम से - सूर्य्य की तीव्र धूप में डोलने से - अति मैथुन करने से - विदाह कारक अन्न आदि - इन कारणों से पित्त कुपित होकर नाभिस्थान में शूल उत्पन्न करे - वह शूल तृषा - मोह - दाह - पीड़ा - इनकोकरे और पसीना - मूर्च्छा

भ्रम- शोष- इन को करे- दुपहर के समय मध्य रात्रि में- अन्न के विदाह काल में- शरद काल में शूल अधिक होय- शीत काल में शीतल पदार्थ से- और अत्यंत मधुर (मीठा) शीतल अन्न से यह शूल शांति होय ॥८॥

कफशूलके कारणऔरल०

अंतूपवारिजाकिलाटपयोविकारैर्मांसेक्षुपिष्टकृशरातिलशाष्कुलीभिः । अन्यैर्बलासजनकैरपिहेतुभिश्च । श्लेष्माप्रकोपमुपगम्यकरोतिशूलम ॥९॥ हृल्लासकाससदनाऽरुचिसंप्रसेकैः ।आमाशयेस्तिमितकोष्ठशिरोगुरुत्वैः । भुक्तेसदैवहिरुजंकुरुतेऽतिमात्रं । सूर्योदयेचशिशिरे कुसुमागमेच १०

अर्थ- जल के समीप रहने वाले पक्षीन का मांस- मछली आदि का मांस- दही- घृत- मक्खन- आदि दूध के बिकार- मांस- ईख का रस- पिसा अन्न- खिचड़ी- तिल- पूरी कचौड़ी- आदि- और जो कफ कारक पदार्थ खाने से कफ कुपित होकर आमाशय में शूल रोग को प्रगट करे- उस में सूखी रद- खाँसी- ग्लानि- अरुचि- मुख से लार गिरे- बद्ध कोष्ठता- मस्तक भारी- हो- ए लक्षण होंय- भोजन करते समय पीड़ा होय- सूर्योदय के समय- शिशिर ऋतु में और बसंत काल में शूल बहुत होय॥

आमशूलकेलक्षण

आटोपहृल्लासवमीगुरुत्वस्तैमित्यमानाहकफप्रसेकैःकफस्यलिङ्गेनसमानलिं

गमामोद्भवंशूलमुदा हरन्ति ✢ ॥ ॥

अर्थ- पेट में गुड़गुड़ाहट होय- उबाकी ओकाआना-रह- देहभारी- मंदता- अफरा- मुखसे कफ कास्राव इन लक्षणों से तथा कफ शूल लक्षणों के समान जैसे शूल को आमशूल कहते हैं ॥ ११ ॥

द्वंद्वजशूलों के लक्षण

बस्तौहृत्कंठपार्श्वेषुसशूलःकफवातिकः
कुक्षौहृन्नाभिपार्श्वेषुसशूलःकफपैत्तिकः १२
दाहज्वरकरोघोरोविज्ञेयोवातपैत्तिकः।एक
दोषोत्थितःसाध्यःकृच्छ्रसाध्योद्विदोषजः १३
सर्बदोषोत्थितोघोरस्त्वसाध्योभूर्युपद्रवः

अर्थ- बस्ति (मूत्रस्थान) हृदय- कंठ- पसवाड़े- इनठि कानै शूल होय वो (कफवातिक) जानना- कूखमें- हृदय- नाभि- और पसवाड़े- इन में कफ पित्त का शूल होय है- दाह ज्वर करने वाला- ऐसा भयङ्कर शूल होय वो बात पित्तका जानना- एक दोष का शूल रोग साध्य है- दो दोष का कृच्छ्रसाध्य- और तीनों दोषों का भयङ्कर- और बहुत उपद्रव- युक्त होय वो शूल असाध्य जानना ॥ ✢ ग्रन्थांतरोक्तशूलकेस्थान ✢ ॥

बातात्मकंबस्तिगतंबदंति पित्तात्मकंचापि
बदन्तिनाभ्याम् हृत्पार्श्वकुक्षौकफसंनिवि
ष्टंसर्वेषुदेशेषुचसंनिपातात् १

शूलके उपद्रव

बेदनाचतृषामूर्च्छा अनाहो गौरवारुची ॥
कासश्वासौचहिक्काचशूलस्योपद्रवाःस्मृ

न्तः॥२॥

परिणामशूलनिदान

स्वैर्निदानैः प्रकुपितोवायुःसन्निहितस्तथा।
कफोपित्तेसमावृत्यशूलकारीभवेद्बली।२४।
भुक्तेजीर्यतियच्छूलंतदेवपरिणामजम्।
तस्यलक्षणमप्येतत्समासेनाभिधीयते।२५।

अर्थ- अपने रौक्षादि कारणों से वायु कुपित होकर कफ-पित्त के समीप जाय-उस्को आवृत्त कर बली होकर शूलको उत्पन्न करै- आहार पचने के समय जो शूल होय उसको परिणामशूल कहते हैं-उसके लक्षण संक्षेप से कहता हूं॥

वातिक परिणामशूलकेल॰

आध्मानाटोपविण्मूत्रविबंधारतिवेपनैः॥
स्निग्धोष्णोपशमप्रायंवातिकंतद्वदेद्भिषक् २६।

अर्थ- पेटका फूलना-तथा पेट में गुड़ गुड़ शब्द-मल-मूत्र का अबरोध- अरति (मनका न लगना) कंप-यह-लक्षण हों- और चिकना-गरम-पदार्थ-से शांति होय-ऐसे शूल को वातिक कहते हैं॥२६॥

पैतिक परिणामशूलकेल॰

तृष्णादाहारतिस्वेदकट्वम्ललवणोत्तरम्॥
शूलंशीतशमप्रायंपैत्तिकंलक्षयेद्बुधः २७

अर्थ- प्यास-दाह-चित्तका नलगना-पसीना-यहलक्षण होंय-तीखा-खट्टा-नोनका-ऐसे पदार्थ खाने से बढ़ने वाला-और शीतपदार्थके सेवन से शांति होय-ऐसा शूल पित्तका जानना॥२७॥

श्लैष्मिकपरिणामशूल.

छर्दिहृल्लाससंमोहस्वल्परुक्दीर्घसंतति
कटुतिक्तोपशांतिचतच्चज्ञेयंकफात्मकम् १८

अर्थ- वमन- ओकारी- और संमोह- (इन्द्री औ रमन कोमोह-) येलक्षण जिस में बहुत होय- पीड़ा थोड़ी होय- शूल बहुत दिन रहै- कडुवे- और तीखे- पदार्थ से शांति होय- उस शूल को कफा- त्मक जानना १८ ॥

द्विदोषज औरत्रिदोषजकेल.

संसृष्टलक्षणंयच्चद्विदोषंपरिकल्पयेत् । त्रि
दोषजमसाध्यंतुक्षीणमांसवलानलम् १६।

अर्थ- जिसमें दोदोषोंकेलक्षणमिलेहोंउसकोद्वंद्वजकहतेहैं-और तीनदोषोंकेलक्षणोंसे त्रिदोषजानना- मांस- बल- और अग्निएजिसके क्षीण होगये हों- ऐसा शूलरोग असाध्य जानना ॥ १९ ॥

अन्नके उपद्रवसे प्राटशूल केलक्षण

जीर्णेजीर्यत्यजीर्णेवायच्छूलमुपजायते।
पथ्यापथ्यप्रयोगेणभोजनाभोजनेनच ॥
न शमंयातिनियमात्सोऽन्नद्रवउदाहृतः।
॥ २० ॥

अर्थभाषा

अन्न पच गया होय- अथवा पचरहा हो- अथवा अजीर्ण हो अर्थात् सर्वदा जो शूल प्रगट होय- वो पथ्यापथ्य के योग से- अथवा

भोजन करने से किंवा न भोजन करने से नियम सें शांति नहीं होय- उस्को अन्नद्रव्य शूल- कहते हैं- यह शूल त्रिदोष बिकृति से एक प्रकार का है परन्तु असाध्य नहीं है क्यों कि इस्की चिकित्सा (उपाय) कही है॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मितभावार्थबोधनीभाषामाथुरीटीकायांशूल-परिणामशूलनिदानम्

उदावर्त्त निदान

उदावर्त्तकेकारण

बातविण्मूत्रजृंभास्त्रक्षवोद्गारवमींद्रियैः
क्षुत्तृष्णोच्छ्वासनिद्राणांधृत्योदावर्त्तसंभवः १

अर्थ- अधोबायू- विष्ठा-मूत्र-जंभाई-अश्रुपात- छींक-डकार -वमन-शुक्र-भूख- प्यास-श्वास- और निद्रा इन तेरह बेगों केरोकने से उदावर्त्त रोग उत्पन्न होय है- तेरह के नियम के करने से यह प्रयोजन है कि- क्रोध-लोभ-मन- इत्यादि बेगों के धारण करने से रोग उत्पन्न नहीं होय- क्यौंकि इनके रोकने से तो स्वस्थता प्राप्त होती है सब उदावर्त्तों में मुख्य कारण वायु है-उदावर्त्तकी निरुक्ति इस प्रकार है।

« ऊर्द्ध्वतेनवेगविधारणेन आवृत्तस्य वायोरावर्त्तनमुदावर्त्तः »

तेरहउदावर्त्तोंकेलक्षणक्रमसेकहतेहैं

वातमूत्रपुरीषाणांसंगाध्मानंक्लमोरुजः॥

जठरेवातजाश्चान्येरोगाःस्युर्वातनिग्रहात्

अर्थ- अधोवायु के रोकने से - अधोवायु - मल - मूत्र - यह बन्द होजाय - पेट फूल जावे - अनायास श्रम - और पेट में बादी से पीड़ा होय - तथा और बातकृत (तोद शूलादि पीड़ा होय ॥ २ ॥

आटोपशूलौपरिकर्तिकाचसंगःपुरीषस्य तथोर्ध्ववातः। पुरीषमास्याद्दथवानिरेतिपुरीषवेगेऽभिहतेनरस्य ३

अर्थ- मल के बेग रोकने से - पेट में गुड़गुड़ाहट होय - शूल होय - गुदा में कतरने कीसी पीड़ा होय - मल उतरे नहीं - डकार आवे - अथवा मल मुख के द्वारा निकले ३ ॥

बस्तिमेहनयोःशूलंमूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजा ॥ विनामोवंक्षणानाहःस्याल्लिंगंमूत्रनिग्रहे ॥ ४ ॥

अर्थ- मूत्र के वेग रोकने से बस्ति (मूत्राशय) और शिश्न इन्द्री इन में पीड़ा होय - मूत्र कष्ट से उतरे - मस्तक में पीड़ा - पीड़ा से शरीर सीधा होय नहीं - पेट में अफरा होय ॥

मन्यागलस्तंभशिरोविकारा जृंभोपरोधात्पवनात्मकाःस्युः तथाक्षिनासावदनामयाश्च भवंतितीव्राःसहकर्णरोगैः ॥ ५ ॥

अर्थ- जभाई आती हुई के रोकने से मन्या कहिये नाड़ के पीछे की नस और गला इन्का और बात जन्य बिकार मस्तक में होय - उसी प्रकार नेत्र रोग - नासा रोग - जिकड़ जाना मुख रोग और कर्ण रोग ये तीव्र होय हैं ॥ ५ ॥

आनन्दजंवाष्पक्षशोकजंवा नेत्रोदकं प्राप्तम मुंचतोहि। शिरोगुरुत्वंनयनामयाश्चभवं- तितीव्राःसहपीनसेन॥६॥

अर्थ- आनंद से अथवा शोक से प्रगट अश्रुपातों को जो मनुष्य नहीं त्याग करे उसके इतने रोग प्रगट होंय- मस्तकभा री रहै- नेत्ररोग- और पीनस- ये प्रबल हों- ६॥

मन्यास्तंभशिरःशूलमर्दितार्धावभेदकौ॥ इन्द्रियाणांचदौर्बल्यंक्षवथोःस्याद्विधार- णात्॥७॥

अर्थ- मन्या (कहिये नाड़के पिछाड़ी कीनस) उसकास्तं भ कहिये जकड़ जाना- शिरमें शूल का चलना- आधामुखटे ढा होजाय- अर्द्धांग बात- और सब इन्द्री दुर्बल होजांय- इतने रोग आती हुई छींक रोकने से होते हैं ७॥

कंठास्यपूर्णत्वमतीवतोदः कूजश्चवायोरथ वाऽप्रवृत्तिः। उद्गारवेगोऽभिहतेभवंति घो राविकाराःपवनप्रसूताः॥८॥

अर्थ- आती हुई डकार के बेग रोकने से बातजन्य इतने रो ग होते हैं- कंठ और मुख भारासा मालूम होय- अत्यंत नोचने की सी पीड़ा होय- अव्यक्त भाषण- (अर्थात् जो समझ में न आवे) अधोबायू की अप्रवृत्ति ८

कंडूकोठारुचिव्यंगोशोफपांड्वामयज्वराः कुष्ठहृल्लासवीसर्पाश्छर्दिनिग्रहजागदाः ॥९॥

अर्थ- जो मनुष्य आती हुई वमन के बेगको रोके उसके अ ङ्गो में खुजली चले- देह में चकत्ता होजांय- अरुचि-मुखपरझा

ई सी पड़ें- सूजन- पांडुरोग- ज्वर- कुष्ट- खालीरह्- विसर्प- रोग- ये होंय ॥ ८ ॥

मूत्राशयेवैगुदमुष्कयोश्च शोथोरुजामूत्रविनिग्रहश्च । शुक्राश्मरीतत्स्रवणंभवेच्च तेतेविकाराभिहतेचशुक्रे ९

अर्थ- मैथुन करते समय वीर्य निकलते को जो मनुष्य रोके अथवा और प्रकार से शुक्र के बेग को रोके उसके मूत्राशय में सूजन होय- तथा गुदा में और अंडकोशों में पीड़ा होय- मूत्र बड़े कष्ट से उतरे- शुक्राश्मरी (पथरी के निदान में आगे कहेंगे) सो होय- शुक्र का स्राव होय- ऐसे अनेक प्रकार के रोग होंय ९

तन्द्रांगमर्दावरुचिःश्रमश्च क्षुधाभिघातात्कृशतांचदृष्टेः ॥

अर्थ- भूख के रोकने से तन्द्रा- अंगों का टूटना- अरुचि- श्रम- और दृष्टी का मन्द होना- ये रोग प्रगट होंय- चकार से कृशता- और दुर्बलता होय- ये अन्य ग्रन्थ से जानना ॥

कंठास्यशोषःश्रवणावरोधस्तृषाभिघातद्धृदयव्यथावै ॥ ११ ॥

अर्थ- प्यास के रोकने से कंठ और मुख का सूखना- कानों से मन्द सुनना- और हृदय में पीड़ा- ये लक्षण होंय ११ ॥

श्रांतस्यनिश्वासविनिग्रहेण हृद्रोगमोहावथवापिगुल्मः ।

अर्थ- जो मनुष्य हार गया हो और वो श्वास को रोके उसके हृदय रोग- मोह- और बाय गोला इतने रोग होंय ॥

जृंभांगमर्दाक्षिशिरोतिजाड्यं निद्राभिघाता

दयश्चापितंद्रा १२॥

अर्थ- आतीहुई निद्रा के रोकने से- जंभाई- अंगों का टूटना- नेत्र- और मस्तक का अत्यंत जड़ता होना- और तन्द्रा होय + अब कहते हैं कि बेग रोकने में प्रगट रोगों को कहिये के अब रूक्षादि कारणों से कुपित बायू से उत्पन्न होने वाले उदावर्त्त रोगों को कहते हैं ॥ १२॥

वायुः कोष्ठानुगोरूक्षकषायकटुतिक्तकैः।
भोजनैः कुपितः सद्यः उदावर्त्तकरोतिच।
१३। बातमूत्रपुरीषास्रकफमेदोबहानिवै
स्रोतांस्युदावर्त्तयतिपुरीषंचातिवर्त्तयेत्। त
तोहृद्बस्तिशूलार्त्तोहृल्लासारतिपीडितः। वा
तमूत्रपुरीषाणिकृच्छ्रेणलभतेनरः ॥ १५॥
श्वासकासप्रतिश्यायदाहमोहतृषाज्वरान्
वमिहिक्काशिरोरोगमनःश्रवणविभ्रमान्
॥ १६॥ बहूनन्यांश्चलभतेविकारान्वात
कोपजान् १७॥

अर्थ- रूखा- कषेला- तीखा- और कड़ुवा- ऐसे भोजन करने से कोष्ट गत बायू- मल- मूत्र- अश्रुपात- कफ- और मेद इन के बहने वाली नाडी न्के मार्ग को रोकदे- और मल को सुखाय दे- तब रोगी- हृदय- मूत्रस्थान में शूल के होने से बेकल हो- सूखीरद्द अस्वस्थपना- इन से पीड़ित होय- मल- मूत्र- और वात यह कष्ट से उतरें- और स्वांस- खांसी- पीनस- दाह- मोह- प्यास- ज्वर- बमन- हिचकी- मस्तकरोग- मनकीभ्रांति- मन्द सुने- तथा वात कोप से- औरभी बहुत से बिकार होंय ॥ १७॥

अनाहरोगनिदान

आमंशकृद्वानिचितंक्रमेण भूयोबिबद्धंवि
गुणानिलेन । प्रवर्त्तमानंनयथास्वमेनं बि
कारमानाहमुदाहरंति १ तस्मिन्भवत्याम
समुद्भवेतुतृष्णाप्रतिश्यायशिरोविदाहाः।आ
माशयेशूलमथोगुरुत्वंहृत्स्तंभउद्गारविघातनं
च २ स्तंभःकटीपृष्ठपुरीषमूत्रेशूलेऽथमूर्च्छा
शकृतश्चछर्दिः। श्वासश्चपक्वाशयजेभवं-
तितथाऽलसोक्तानिचलक्षणानि ३

अर्थ- आम-अथवा पुरीष- क्रम से संचित्त हो विगुण वायू
से बारंबार बिबद्ध होकर अपने मार्ग से अच्छी रीति से प्रवृत्त हो
यनहीं- इस बिकार को (अनाह) कहते हैं- आम से प्रग-
ट अनाह रोग में - प्यास- पीनस- मस्तक में दाह- आमाशय में
शूल - देह में भारीपना- हृदय का जकड़जाना - शूल - मूर्च्छा-
रोध- कमर- पीठ- मल - मूत्र- इनका रुकना - शूल - मूर्च्छा-औ
र विष्टा मिली हुई रद्द करे- और श्वास- यह लक्षण होंय- पक्वाश
य में अनाह रोग- होने से- आलस-रोगोक्त लक्षण - (आध्मा-
न बातरोधादिक) होते हैं ॥

असाध्यलक्षण

तृष्णार्दितंपरिक्लिष्टंक्षीणंशूलैरुपद्रुतम् ॥
शकृद्वमंतमतिमानुदावर्तिनमुत्सृजेत् ॥ ४ ॥

अर्थ- प्यास से पीड़ित-क्लेशयुक्त- क्षीण · शूल से पीड़ित-औ
र मल की रद्द करने वाला ऐसे उदावर्त्त रोगी को वैद्य त्यागदे

इतिउदावर्त्त निदान।

अथगुल्म निदान

दुष्टावातादयोऽत्यर्थंमिथ्याहारविहारतः
कुर्वन्तिपञ्चधागुल्मंकोष्ठांतर्ग्रंथिरूपि
णम् ॥१॥ तस्यपञ्चविधंस्थानंम्पार्श्वे
हृन्नाभिबस्तयः

अर्थ- मिथ्या आहार - और मिथ्या बिहार करने से अत्यन्त दुष्ट भये वातादि दोष-कोष्ठ (पेट) में ग्रंथिरूप (गांठ) पांच प्रकार का गुल्म रोग उत्पन्न करें हैं- उस गुल्म रोग के पांचस्थान हैं- दोनों पसबाड़े हृदय - नाभि और बस्ति ॥१॥

गुल्मके सामान्यरूप

हृन्नाभ्योरन्तरेग्रन्थिः संचारीयदिवाऽचलः
वृत्तश्चयापचयवान्सगुल्मइतिकीर्त्तितः २॥

अर्थ- हृदय- और नाभि तथा बस्ती (मूत्रस्थान) इनमें चलाय मान अथवा- निश्चल-गोल- कभी घटे-कभी बढे-ऐसी ग्रन्थि (गांठ) होय उसको गुल्म (गोला) का रोग कहते हैं इस श्लोक में नाभि शब्द से बस्ती का ग्रहण करा है २

सम्प्राप्ति

सव्यस्तैर्जायतेदोषैः समस्तैरपिचोच्छ्रितैः।
पुरुषाणांतथास्त्रीणांज्ञेयोरक्तेनचापरः ३।

अर्थ- कुपित भये दोषों से - पृथक् २ और सब दोष मिल कर- एक- ये चार प्रकार के गुल्म पुरुषों के होते हैं- औरस्त्री

न्के रक्त (रज) के दोष से एक प्रकार का गुल्म होय है-परंतु प्रथम जो लिख आये हैं कि गुल्म रोग पांच प्रकार का है सो इस का निश्चे नहीं है-क्योंकि रक्त गुल्म स्त्रीन के होय है-पुरुषों के नहीं होय है-धातुरूप-रक्तजगुल्म जो है सो स्त्री पुरुष दोनों के होय है-यह क्षीरपाणी का मत है-पांच प्रकार का गुल्म है-इस पर बहुत शास्त्रार्थ और मत मतांतर है- जिन्को देखने की इच्छा हो सो मधुकोश- और आतंक दर्पण टीका में देख लेवें

पूर्वरूप

उद्गारबाहुल्यपुरीषबंधतृप्त्यक्षमत्वांत्रवि
कूजनानि । आटोपमाध्मानमपक्तिशक्तिरा
सन्नगुल्मस्यवदन्तिचिन्हम् ४

अर्थ- डकार बहुत आवें-मल का अवरोध होय- अन्न में अरुचि होय- सामर्थ्य का नाश होना- आंत बोलें- पेट में पीड़ा होय- और अफरा होय-तथा पेट का जकड़ जाना- मंदाग्नि होना यह लक्षण होंय तो जानना कि गुल्म (गोला) रोग शीघ्र प्रगट होना चाहता है ॥४॥

गुल्मके साधारणलक्ष०

अरुचिःकृच्छ्रविण्मूत्रंवातेनांत्रविकू
जनम् । आनहश्चोर्ध्ववातत्वंसर्वगुल्मेषु
लक्षयेत् ॥५॥

अर्थ- अरुचि-मल- मूत्र-कष्ट से उतरें- बादी से आंत बोलें- पेट फूल आवै- ऊर्ध्ववात होय-यह लक्षण सब गुल्मों में होंय है+ सब गुल्म रोग में बात कारण है- सो (चरक) और (सुश्रुत) में भी लिखा है ॥५॥

१ गुल्मिनामनिलशांतिरुपायैः सर्वशोविधिवदाचरणीया मारुतेऽत्र

वातगुल्मकेकारणऔरल.

रूक्षान्नपानंविषमातिमात्रंविचेष्टनंवेग विनिग्रहश्च । शोकाभिघातोऽतिमलक्ष यश्चनिरन्नताचानिलगुल्महेतुः॥६॥ यः स्थानसंस्थानरुजाविकल्पं विड्वातसंगंग लवक्त्रशोषं । श्यावारुणत्वंशिशिरज्वरंच हृत्कुक्षिपार्श्वांसशिरोरुजंच ॥७॥ करोति जीर्णेप्यधिकंचकोपं भुक्तेमृदुत्वंसमुपै-तिपश्चात् । वातात्सगुल्मोनचतत्ररूक्षं क षायतिक्तंकटुचोपशेते॥८॥

अर्थ- रूखा- विषम- और अतिमात्र- ऐसे अन्न पान सेव न करने सेबलवान् पुरुष से लड़ना- मल - मूत्र- आदि वेगों के धारण करने से- शोक-और अभिघात (लकड़ी आदिकी चोट) विरेचन आदि से मलका क्षय करना- उपवास ये सबवा त गुल्म के कारण हैं ॥

जो गुल्म कभी नाभि कभी बस्ती- कभी पसबाड़े में चला जाय- तथा कभी लंबा कभी मोटा- गोल- अथवा छोटा होय- तथा उ स में पीड़ा कभी थोड़ी कभीबहुत होय- तोदभेद-(सुईचुभाने कीसी पीड़ा) होय- अथवा अनेक प्रकार की पीड़ा होय- मलको और अधोवायु की अच्छी रीति से प्रवृत्ति होय नहीं ।

विजितेऽन्यमुदीर्णं दोषमल्पमपि कर्मानि हन्यात् इति ॥

२ कुपिताऽनिलमूलत्वात्संचितत्वात्मलस्यच तुल्य व द्वा विशालत्वाद्गु ल्मइत्यभिधीयते इति ॥

गला- और मुख-(सूखे-) शरीर का वर्ण नीला- अथवा लाल होय- शीतज्वर- हृदय- कूख- पसवाड़े-कंधा- और मस्तक इनमें पीड़ा होय- और गोला जीर्ण होने पर अधिक कोप करे- औरभोजन करने के पिछाड़ी नरम होजाय- वह गोला बादी से प्रगट होय है- उस्पै रूखा- कसेला- कडुवा- तीखा- पदार्थ खाने से सुख नहीं होय ॥ ८ ॥

पित्तगुल्मकेकारण

कट्वम्ललीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षंक्रोधातिमद्यार्कहुताशसेवा । आमाभिघातोरुधिरंच दुष्टं पैत्तस्यगुल्मस्यनिमित्तमुक्तम् ९ ज्वरःपिपासावदनांगरागः शूलंमहज्जीर्यतिभोजनेच । स्वेदोबिदाहोव्रणवच्चगुल्मः स्पर्शासहःपैत्तिकगुल्मरूपम् १० ॥

अर्थ- कटु- खट्टा- तीक्ष्णरस- दाहकारक- (वंशकरीलादिक) रूखा- ऐसे भोजन करने से-क्रोध से- अति मद्यपान-सूर्य की धूप में डोलने से- अग्नि के समीप रहने से- बिदग्ध अजीर्ण से दुष्ट भया रस उस्से अभिघात कहिये लकड़ी आदिलगनेसे -रुधिर का बिगड़ना- ये पित्त गुल्म के कारण कहे हैं- ज्वर- प्यास- मुख- और अंगों से लालपना- अन्न पचने के समय- अत्यंत शूल होय- पसीना आवै- जलन होय- फोड़ा केसमान स्पर्श सहा नजाय ये पित्त गुल्म के लक्षण हैं ॥

कफके औरसन्निपातकेगुल्मके कारणऔरलक्ष-

शीतंगुरुस्निग्धमचेष्टनंचसंपूरणंप्रस्वपनं

दिवाच। गुल्मस्य हेतुः कफसंभवस्य स
र्वस्तु दृष्टो निचयात्मकस्य ११ स्तैमित्यशीत
ज्वरगात्रसादहृल्लासकासारुचिगौरवाणि॥
शैत्यंरुगल्पाकठिनोन्नतत्वंगुल्मस्यरूपाणि
कफात्मकस्य॥१२॥

अर्थ- शीतल- भारी- चिकने- ऐसे पदार्थ के सेवन से- तृप्ति की अपेक्षा अधिक भोजन करना - दिन में सोना- ये कफोत्पन्न गुल्म होने का कारण हैं॥ ÷ और जो बात आदि तीनों गुल्मों के कारण कहे हैं- वो सब सन्निपात गुल्म के कारण जानने॥ ÷ देह का गीलापना- शीतज्वर- शरीर की ग्लानि- सूखी रद- (उबाकी) खाँसी - अरुचि-भारीपना- शीत का लगना- थोड़ी पीड़ा होय- गुल्म- (गोला) कठिन होय- और ऊंचा होय- इतने ये सब कफात्मक गुल्म के लक्षण हैं॥

द्वंद्वज गुल्म के लक्ष०

निमित्तलिंगान्युपलभ्य गुल्मे संसर्गजे दो
षबलाबलंच॥ व्यामिश्रलिंगानपरां
श्च गुल्मांस्त्रीनादिशेदौषधकल्पनार्थ-
म॥१३॥

अर्थ- द्वंद्वज गुल्म में कारणों से- लक्षणों से- और दोषों के बलाबल जानकर चिकित्सा करने के वास्ते- मिश्र-लक्षण के और तीन गुल्म समझने चाहियें अर्थात् एक दोष बलवान् होय तौ चिकित्सा करनी चाहिये। और द्विदोष बलवान् वा त्रिदोष बलवान् होय तौ चिकित्सा न करे ३२

सन्निपातगुल्म के लक्षण

महारुजं दाहपरीतमश्मवत् घनोन्नतं शीघ्रविदाहदारुणम् । मनःशरीराग्नि बलापहारिणं त्रिदोषजं गुल्ममसाध्यमादिशेत् ॥२४॥

अर्थ- भारी पीड़ा करने वाला - दाहकरके व्याप्त-पत्थरके समान कठिन तथा ऊंचा - और शीघ्र दाह करके भयंकर-मन शरीर- अग्नि- और बल इन्का नाश करने वाला- (अर्थात् मन को बिकल करने वाला - शरीर को कृश करने वाला - और बिवर्ण करने वाला - अग्निबैषम्यादि कारक - असामर्थ्य करनेवाला-) ऐसा त्रिदोषज गुल्म असाध्य जानना ॥ २४ ॥

रक्तगुल्मकेलक्षण

नवप्रसूताऽहितभोजनायायाचामगर्भं विसृजेदृतौवा । वायुर्हितस्याःपरिगृह्य रक्तं करोतिगुल्मंसुरुजंसदाहम् २५ पैत्तस्यलिंगेनसमानलिंगं विशेषणंचाप्यपरं निबोध । यः स्पंदतेपिंडितएवनांगैश्चिरात्सशूलःसमगर्भलिंगः २६ सरौधिरःस्त्रीभवएवगुल्मोमासेव्यतीतेदशमेचिकित्स्यः

अर्थ- नई प्रसूत भई स्त्रीके अपथ्य सेवन करने से- अथवा अपक्क गर्भ पात होने सें- अथवा ऋतुकाल के समय अपथ्य भोजन करने से बायु कुपित होकर उस स्त्रीके रुधिर (जो ऋतु समय निकले उसको) लेकर उस्का गुल्म करे- वो गुल्म पीड़ा युक्त व दाह युक्त होय है- और पित्त गुल्म के जो लक्षण कहे हैं वो सब इस में होय- और इस में दूसरे विशेष लक्षण होते हैं

उन्को कहता हूं सुनों- यह गुल्म बहुत देरमें गोल गोल ह
ले- अब यव कहिये हाथ पैर के साथ नहिं हले- शूल युक्त हो
य- गर्भ के समान सव लक्षण मिलें- (अर्थात् मुखसे पानी
छूठे- मुख पीला पड़जाय- स्तन का अग्रभाग काला होजाय- और
दोहदादि लक्षण सब मिलें- ये सब लक्षण व्याधि के प्रभाव से
होते हैं- जैसे खई रोग वाले को स्त्री रमण की इच्छा औरका
ले नख ताल्वादिक होते हैं- यह रक्तज गुल्म स्त्रियों के होय है
दश महीना व्यतीत होजाय तव इस रक्त गुल्म की चिकित्सा
करनी चाहिये- कोई कहते हैं कि यह गर्भ है- अथवा रक्त गुल्म
है- यह शकां जानकर माधवा चार्य ने (दश महीना व्यतीत
होने पर) ऐसा कहा है- कारण इसका यह है कि नवमा औ
र दशमा महीना यह प्रसूत होने का समय है- शंका- क्योंजी
(यःस्पंदते पिंडित एव नांगैः) इत्यादिक विशेषण स्पष्ट प्र
तीति होय है- क्यों कि गर्भतो निरंतर प्रत्येक अवयव के साथ
शूल रहित फरकता है- और रक्त गुल्म के इस से विपरीतल
क्षण हैं- फिर दश महीना व्यतीत होने पर चिकित्सा करना
चाहिये ये क्योंकहा +उत्तर+ इसका कारण इस प्रकार है
कि इस रोग में जब नो- दश- महीना व्यतीत होजाय जव चि
कित्सा करै तो सुख साध्य होय है- कुछ प्रसब के नियम से
नहीं कहा क्यों कि प्रसव ग्यारह बारह महीना में भी होय है सो
(चरक) ने भी लिखा है ((तंस्त्रीप्रसूते सुचिरेण गर्भस्थ
होयदावर्षगणैरपिस्यात्)) जैसे जीर्णज्वर होने परदूध
पीना- और दस्त का लेना हित कारक होय है- इसी से ग्रन्थान्त
रों में भी लिखा है ((रक्तगुल्मे पुराणत्वं सुखसाध्यस्य लक्षणम्))
इस रक्त गुल्म को दस महीना व्यतीत होने पर पुराना पना होय

है + और (जेज्जटने) भी कहा है कि यदि दस महीना के पहले मदनादि क्रिया करने सैं गर्भाशय को बिकार होय है क्यौं कि रुधिर उस ठिकाने पर जमा होय है- और ग्यारै महीना में गुल्म का गोला बहुत अच्छा जम जाय है इसी से ग्यारवे महीना स्नेहादिक करके सब शरीर मृदु (नरम) करने से भेदन क्रिया करै तो गर्भाशय भले प्रकार अच्छा रहै- अब कहते हैं कि बहुत दिनका गुल्म रोग ऐसी अवस्था होने पर असाध्य होजाय है उस्को कहते हैं।

संचितः क्रमशो गुल्मो महावास्तुपरिग्रहः।
कृतमूलः शिरानद्धो यदा कूर्म इवोन्नतः १७।
दौर्बल्यारुचिहृल्लासकासच्छर्द्यरतिज्वरैः।
तृष्णातन्द्राप्रतिश्यायैर्युज्यते न स सिद्ध्यति १८

अर्थ- क्रम क्रम से बढ़ा गुल्म जब सब उदर (पेट) में फैलजाय- और धातुन्में उस्का मूल जाय पहुंचे-तथा उस परनाड़ीन्का जाल लिपट जाय- और कछुवा की पीठ के समान गुल्म ऊंचा होय-तब इस रोगी के निःसत्त पना- अरुचि- सूखी रद- खांसी- वमन- अरति- और ज्वर-तथा प्यास- तन्द्रा- और पीनस यह लक्षण होंय ऐसा रोगी असाध्य है ॥१८॥

असाध्यलक्षण

गृहीत्वा सज्वरः श्वासश्छर्द्यतीसारपीडिते। हृन्नाभिहस्तपादेषु शोथः क्षिपति गुल्मिनम् १९॥
श्वासः शूलं पिपासान्नविद्वेषो ग्रन्थिमूढता।
जायते दुर्बलत्वं च गुल्मिनां मरणाय वै ॥ २०॥

अर्थ- बमन- और अतिसार इन से पीड़ित ऐसा गुल्म रोगी का हृदय- नाभि- हाथ पैर- इन ठिकानें सूजन होय- और ज्वर- दमा जिसके होय- ऐसे लक्षण होने से रोगी बचे नहीं ॥

श्वास- शूल- प्यास- अन्न में अरुचि- और गुल्म की गांठ का एका एकी नष्ट सा होजाना- और दुर्बलता ये लक्षण होने से जानना कि गुल्म रोग वाले की मृत्यु समीप है ÷ **शंका**- क्यौंजी अंतर्विद्रधि और गुल्म रोग इन में क्या भेद है (फ़रक़) है क्यौंजी इन दोनों के स्थान और स्वरूप एकसा है फेर भेद क्या है ÷ **उत्तर** ÷ तुमने कहा सो ठीक है अन्तर्बिद्रधि पचता है- और गुल्म नहीं पचे है- इस का कारण यह है कि गुल्म तौ निराश्रय है सो (सुश्रुतने) कहाभी है ॥

ननिबंधोस्तिगुल्मस्यविद्रधिःसनिबंधनः।
गुल्मस्तिष्ठतिदोषेस्वेविद्रधिर्मांसशोणिते
विद्रधिःपच्यतेतस्माद्गुल्मश्चापिनपच्यते ÷
इति।

अर्थ- गुल्मका निबंध नहीं हैं और विद्रधिका निर्बंध है- गुल्म अपने दोषों में रहता है- और बिद्रधिका ठिकाना मांस- रुधिर- में है इसी से विद्रधि का पाक होय है- और गुल्म का- पाक नहीं होय- गुल्म मुट्ठी के समान बड़ा है- और बिद्रधि इससे कुछ ज्यादः बड़ा होय है ॥

इतिगुल्मनिदानम्

—[*]—

अथ हृद्रोग निदानम्

अत्युष्णगुर्वम्लकषायतिक्तैः श्रमाभिघा-
ताध्यशन प्रसंगैः संचिन्तनैर्वेगविधारणैः

ष्य हृदामयः पंचविधः प्रदिष्टः ॥ १ ॥ + ॥

अर्थ- अति गरम- अतिभारी- अतिखट्टा- अति कषेला- अति कडुवा- ऐसे पदार्थ सेवन करने से- श्रम- (धनुष आदिका खेंचना) अभिघात- (हृदय में चोट लगना) और भोजन के ऊपर भोजन नित्य करने से- संचिंतन (राजाके भय से चिंता) मल मूत्र आदि वेगों के रोकने से- वातादिक के क्षय और सन्निपात करके- तथा कृमि से - हृदय का रोग होय है वो पांच प्रकार का है १

उसकी संप्राप्ति और सामान्यलक्षण

दूषयित्वारसंदोषाविगुणाहृदयंगताः।हृदिबाधांप्रकुर्वन्तिहृद्रोगंतंप्रचक्षते २

अर्थ- कुपित भये दोष रसको (हृदये में जो रहता है) दुष्ट करके हृदय में अनेक प्रकार की पीड़ा करे उस को हृदयरोग कहते हैं ॥२॥

वातहृद्रोगकेलक्षण +

आयम्यतेमारुतजेहृदयंतुद्यतेतथा । निर्मथ्यतेदीर्यतेचस्फोट्यतेपाट्यतेपिच ॥

अर्थ- वातज हृदय रोग में- हृदय खैंचा सरीखा- सुई से चोंटने सरीखा- फोरने सरीखा- दोटुकड़ा करने के समान- मथने- के समान- कुल्हाड़ी से फारने के समान पीड़ा करै है ॥३॥

पित्तकेहृद्रोगकेलक्ष-

तृष्णोष्णदाहसोह्राः स्युः पैत्तिकेहृदयक्लमः । धूमायनंचमूर्च्छाचस्वेदः शोषोमुखस्यच ॥ ४ ॥

अर्थ- पित्त के हृदय रोग में प्यास - किंचित् दाह - मोह - और हृदय की ग्लानि - धूआं निकलतासा मालूम होय - मूर्च्छा - पसीना - और मुख का सूखना - यह लक्षण होय हैं ॥४॥

कफकेहृदयरोगकेल॰

गौरवंकफसंस्रावो ऽरुचिः स्तंभोऽग्नि
मार्दवं ॥ माधुर्यमपिचास्यस्यबला-
सावतत्तेहृदि ॥५॥

अर्थ- कफ से हृदय व्याप्त होने से - भारीपना - कफ का गिरना - अरुचि - हृदय जकड़ जाय - मन्दाग्नि - मुख में मिठास - ये लक्षण होते हैं ॥५॥

त्रिदोषजकेलक्षण

विद्यात्त्रिदोषंत्वपिसर्वलिंगम्

अर्थ- जिस में सब लक्षण मिलते होंय - वो त्रिदोष का हृद्रोग जानना - इस में कुछ भी अपथ्य होने से - गांठ उत्पन्न होती है - उस गांठ से कृमि पैदा होय हैं - ऐसे चरक में कहा है ॥

कृमिजहृद्रोगकेलक्षण

तीव्रार्तितोदंकृमिजंसकंडु - उत्क्लेदः ष्ठीवनं
तोदः शूलंहृल्लासकस्तमः । अरुचिः श्याव
नेत्रत्वं शोषश्चकृमिजेभवेत् ६

अर्थ- तीव्र पीड़ा करके - तथा नोचने कीसी पीड़ा करके - तथा खुजली करके - युक्त ऐसा हृद्रोग कृमिजन्य जानना - उत्क्लेद (ओकारी आने के समान मालूम हो) थूकना तोद (सुई

१ त्रिदोषजेतुहृद्रोगे यो दुरात्मा निषेवते । तिलक्षीरगुडादींश्च ग्रन्थिस्तस्योपजायते मर्मैकदेशे संक्लेदं रसश्चाप्युपगच्छति । संक्लेदात्कृमयश्चास्य भवंत्युपहतात्मनः ॥

चुभाने कीसी पीड़ा) शूल - हृल्लास - अंधेरा आवे - अरुचि - नेत्र काले पड़जांय - और मुख शोष - यह लक्षण क्रमिज हृदय रोग में होते हैं - (जेज्जट का - यह मत है कि ((उत्क्लेद से लेकर तमपर्यंत)) त्रिदोष के लक्षण कहे हैं जैसे तोद - शूल ये वादी से होंय उत्क्लेद हृल्लास - और ष्ठीवन ये कफ से और तम यह पित्त से लक्षण होते हैं - और अरुचि से कर शोष पर्यन्त क्रमिज हृद्रोग के लक्षण जानने इस विषय में प्रत्येक आचार्यों के भिन्न भिन्न मत हैं ॥

सबोंकेउपद्रव

क्लोमः सादोभ्रमः शोषोज्ञेयास्तेषामुपद्रवाः
क्रमिजेक्रमिजातीनांश्लैष्मिकाणांचयेमताः ७

अर्थ - क्लोम कहिये पिपासा (प्यास) स्थान उसमें ग्लानि होय - भ्रम - शोष - ये सब उन हृद्रोगों के उपद्रव जानने और कफ की क्रमि रोग के जोउपद्रव पिछाड़ी कहि आये हैं सोई - क्रमिज हृद्रोग के लक्षण होते हैं - तथा ((हृल्लासमास्यस्रवणमविपाक मरोचकम् इत्यादि + इतिहृद्रोगनिदानम्

इतिहृद्रोग निदानम्

मूत्रकृच्छ्र निदान

व्यायामतीक्ष्णौषधरूक्षमद्य प्रसंगनित्य
द्रुतपृष्ठयानात् । आनूपमत्स्याध्यशनाद
जीर्णात्स्युर्मूत्रकृच्छ्राणिनृणामिहाष्टौ १

अर्थ - व्यायाम (दंड कसरत आदि) तीक्ष्णौषध (राई आदि) रूखा पदार्थ - और नित्य प्रति मद्यपान करना और निरंतर घोड़े

पर चढ़ने से- और जल समीप रहने वाले पक्षी (हंस-सारस- चकवा- आदि) का मांस खाने से- और मछली - भोजन के ऊपर भोजन करने से- और कच्चे पदार्थ-इत्यादिकों के खाने से- मनुष्यों के आठ प्रकार का मूत्र कृच्छ्र रोग होय है- पृथक् दोषों से ३ सन्निपात से १ चोट लगने का १ मल रोकने का १ वीर्यरोकनेका १ और पथरीका १ यह सब मिल कर के आठ ८ भये ॥१॥

संप्राप्ति

पृथङ्मलाः स्वैःकुपितानिदानैः सर्वेऽथवाकोपसुपेत्यवस्तौ मूत्रस्यमार्गंपरिपीड़यंति । यदातदासूत्रयतीहकृच्छ्रात् ॥२॥

अर्थ- अपने कारण से कुपित भये जो बातादिक दोष अथवा सब दोष बस्ती में कुपित होकर मूत्र के मार्ग कोपीड़ित करें तब मनुष्य के बड़े कष्ट से मूत्र उतरे ॥२॥

पैत्तिकमूत्रकृच्छ्रकेल०

पीतंसरक्तंसरुजंसदाहं कृच्छ्रंमुहुर्मूत्रयतीहपित्तात्

अर्थ- पैत्तिक मूत्र कृच्छ्र से-पीला कुछ लाल पीड़ायुक्त-अग्नि के समान बारंबार और कष्ट से मूत्र उतरे ॥

बातिकमूत्रकृच्छ्रकेल०

तीव्रार्तिरुग्वंक्षणवस्तिमेढ्रे स्वल्पंमुहुर्मूत्रयतीहवातात् ॥३॥

अर्थ- बातके मूत्र कृच्छ्र से वंक्षण (जांघ और पेडू इनकी संधि) मूत्राशय और इन्द्री इन में पीड़ा होय और मूत्र बार

वार थोड़ा थोड़ा उतरे ३

कफमूत्रकृच्छ्रकेलक्ष.

वस्तेः सलिंगस्य गुरुत्वशोथौ मूत्रं सपिच्छं
कफमूत्रकृच्छ्रे

अर्थ- कफ के मूत्र कृच्छ्र में- लिंग और मूत्राशय भारी हो· तथा सूजन होय- और मूत्र चिकना होय ॥

सन्निपातमूत्रकृच्छ्रकेलक्ष.

सर्वाणिरूपाणितुसन्निपातात् । भवन्तितत्कृ
च्छ्रतमंतुकृच्छ्रं ४

अर्थ- सन्निपात से सर्व लक्षण होते हैं - यह मूत्र कृच्छ्र कष्ट साध्य है ॥४॥

शल्यजमूत्रकृच्छ्रकेल.

मूत्रबाहिषुशल्येनक्षतेष्वभिहतेषुच ॥
मूत्रकृच्छ्रंतदाघाताज्जायतेभृशदारुण
म् । वातकृच्छ्रेणतुल्यानि तस्यलिंगानिल
क्षयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ- मूत्र बहने वाले स्रोत (मार्ग) शल्य (तीर आदि) से विंधजाय- अथवा पीड़ित होंय तौ उस घात से भयंकर· मूत्र मूत्रकृच्छ्र होय है - इस के लक्षण बात मूत्रकृच्छ्र के समान होंय ॥५॥

मलकेमूत्रकृच्छ्रकेलक्ष.

शकृत्तस्य प्रतीघाता द्वायु र्विगुणतांगतः ॥
आध्मानंबातसंगंचमूत्रसंगंकरोतिच ॥ ६ ॥

अर्थ- मलके (विष्टाके) अवरोध करने सें- वायु विगुण (उलवटा) होकर-अफरा-बात-सूल-मूत्र नाश करे तब मूत्रकृच्छ्र

प्रगट होय ६

अश्मरीजन्यमूत्रकृच्छ्र

अश्मरीहेतुतत्पूर्वंमूत्रकृच्छ्रमुदाहरेत् ७

अर्थ- पथरी के योग से जो मूत्र कृच्छ्र होय उसको पथरीकामूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥ ७ ॥

शुक्रजमूत्रकृच्छ्र केलक्षण

शुक्रेदोषैरुपहतेमूत्रमार्गेविधाविते।
सशुक्रंमूत्रयेत्कृच्छ्रात्बास्तिमेहनशूलवान् ॥ ७ ॥

अर्थ- दोषों के योग से शुक्र (वीर्य) दुष्ट होकर मूत्रमार्ग में गमन करे- तब उस मनुष्य के मूत्राशय- और लिंग इनमें शूल होय- और मूतते समय मूत्रके संग वीर्य का पतन होय ७

अश्मरी और शर्करा इन्केसाम्य और अवांतरभेद

अश्मरी शर्कराचैवतुल्यसम्भवलक्षणे
बिशेषणं शर्करायाः शृणुकीर्त्तयतोमम
पच्यमानाऽश्मरीपित्ताच्छोष्यमाणाचवायुना ॥ विमुक्तकफसंधानाक्षरंतीशर्करामता ६ हृत्पीड़ावेपथुःशूलंकुक्षावग्निश्चदुर्बलः। तथाभवतिमूर्च्छाचमूत्रकृच्छ्रंचदारुणम् १०

अर्थ- अश्मरी (पथरी) और शर्करा- इन दोनों की संप्राप्ति और लक्षण समान हैं- परंतु इन में थोड़ासा भेद है- उस्को कहता हूं- पित्त से पकने वाली- और वायु से शुष्क होनेवाली ऐसी पथरी कफ से अधीन होय- तब मूत्र के मार्ग से रेतके स

मान झरने लगे - उसको शर्करा कहते हैं- उसे हृदय में पीड़ा- कम्प- कूख में शूल- मन्दाग्नि- मूर्च्छा- और भयंकर मूत्र कृच्छ्र- ये रोग होंय- ✣ इति मूत्र कृच्छ्र निदानम् ✣ ॥

अथमूत्राघातनिदानम्

जायन्तेकुपितैर्दोषैर्मूत्राघातास्त्रयोदश। प्रा
योमूत्रबिघाताद्यैर्बातकुण्डलिकादयः १

अर्थ- मूत्र के वेग रोकने से (आदि शब्द सें मल-शुक्रादि बेग रोकना और रूक्ष भोजन आदि जानना) कुपित भये दोषोंसे बातकुंडलिकादिक तेरह प्रकार का मूत्राघात-रोग को करै ॥१॥

बातकुंडलिकाकेलक्ष·

रौक्ष्याद्वेगविघाताद्वाबायुर्बस्तौसबेदनः।
मूत्रमाविश्यच रतिविगुणःकुंडलीकृतः२
मूत्रमल्पाल्पमथवासरुजंसंप्रवर्त्तते ॥
बातकुंडलिकांतांतुव्याधिंबिद्यात्सुदा
रुणम् ॥३॥

अर्थ- रूखे पदार्थ खानेसे- अथवा मलमूत्रादिवेगोंकेधारण करने से-कुपित भई जो बायु सो बस्ती (मूत्राशय) में प्राप्तहोपीड़ाकरे- और मूत्र से मिलकर मूत्रकेबेगको बिगुण (उलटा) करके वहां आप कुंडल के आकार होकर (गोलाकार) मूत्राशय में बिचरे तब मनुष्य उस बात से पीड़ित हो मूत्र को बारंबार थोड़ा थोड़ा पीड़ा के साथ त्याग करे- इस दारुण व्याधिको बात कुण्डलिका रोग कहते हैं ॥३॥

अष्ठीलाकेलक्षण

आध्मापयन्बस्तिगुदंरुध्वावायुश्चलोन्नतां।
कुर्यात्तीव्रार्त्तिमष्ठीलांमूत्रमार्गावरोधिनीम् ४

अर्थ- वस्ती - (मूत्राशय) और गुदा - इनमें यह बायू आफरा करे - तथा गुदा की बायू को रोककर - चञ्चल - और उन्नत - (ऊंची) ऐसी अष्ठीला (पत्थ र की पिंडी के समान) को प्रगट करे - यह मूत्र के मार्ग को रोकनेवाली और भयङ्कर पीड़ा करने वाली है ॥ ४॥

वातवस्तीकेलक्षण

वेगंविधारयेद्यस्तुमूत्रस्याकुशलोनरः।
निरुणद्धिमुखंतस्यबस्तेर्वस्तिगतोऽनिलः
५ मूत्रसंगोभवेत्तेनबस्तिकुक्षिनिपीडितः
वातबस्तिः सविज्ञेयोव्याधिःकृच्छ्रप्रसाध
नः॥६॥

अर्थ- जो मनुष्य अड़ (जिद्द) से मूत्र वाधा को रोके उसके वस्ती (मूत्राशय) का वायू वस्ती के मुख को वन्द करदे तब उस का मूत्र बंद होजाय - और वो बायू वस्ती में और कूख में पीड़ा करे - उस व्याधी को - वात्तबस्ती - ऐसे कहते हैं - यह बड़े कष्ट से साध्य होय ॥६॥

मूत्रातीतकेलक्षण

चिरंधारयतोमूत्रंत्वरयानप्रवर्त्तते। मेहमा
नस्यमन्दंवामूत्रातीतःसउच्यते७

अर्थ- मूत्र को बहुत देर रोकने से पीछे वो जल्दी नहीं उतरे - और मूतते समय धीरे धीरे उत्तरे इस रोग को मूत्रातीत कहते हैं ·

मूत्रजठर केलक्षण

मूत्रस्यवेगेऽभिहतेतदुदावर्त्तहेतुकः।अ

पानः कुपितोवायुरुदरंपूरयेद्भृशम् ॥ ८
नाभेरधस्तादाध्मानंजनयेत्तीव्रवेदनम् । त
न्मूत्रजठरंविद्यादधोबस्तिनिरोधजम् ९

अर्थ- मूत्र के वेगरोकने से मूत्र वेग धारण जनित और उदावर्त्त का कारण भूत- ऐसा अपान बायु कुपित होय करपेट बहुत फूलजाय- और नाभिके नीचे तीव्र वेदना संयुक्त अफरा करे- अधो बस्ती का रोध करने वाला- ऐसे इस रोगको (मूत्रजठर- ऐसे कहते हैं ॥ ९ ॥

मूत्रोत्संगकेलक्षण

बस्तौवाप्यथवानालेमणौवायस्यदेहिनः
मूत्रंप्रवृत्तंसज्जेतसरक्तंवाप्रवाहतः १०
स्रवच्छनैरल्पमल्पंसरुजंवाथनीरुजम्
विगुणानिलजोव्याधिःसमूत्रोत्संगसंज्ञि
तः ॥ ११ ॥

अर्थ- प्रवृत्त भया मूत्र बस्ती में अथवा शिश्न में (लिंगमें) अथवा शिश्न के अग्र भाग में अटक जाय- और बल से मूत्र को करै बीतौ बादी से बस्ती को फाड़ कर जो मूत्र निकले वो मंद मंद थोड़ा थोड़ा पीड़ा के साथ अथवा पीड़ा रहित रुधिर सहित निकले- विगुण बायु से उत्पन्न भया इस व्याधिको मूत्रोत्संग कहते हैं ॥ ११ ॥

मूत्रक्षयकेलक्षण

रूक्षस्यक्लांतदेहस्यबस्तिस्थौपित्तमारुतौ ।
मूत्रक्षयंसरुग्दाहंजनयेतांसदाह्वयम् १२

अर्थ- रूखाभया- अथवा क्लांत- (थकगया) देह ऐसे पुरुष के बस्ती (मूत्राशय में रहे जो पित्त और बायु सो मूत्रका

क्षय करे- और पीड़ा तथा दाह होता है- उसको मूत्रक्षय- ऐसे कहते हैं ॥२२॥

मूत्रग्रन्थिकेलक्षण

अन्तर्बस्तिमुखेवृत्तः स्थिरोऽल्पः सहसा
भवेत् । अश्मरीतुल्यरुक्ग्रन्थिर्मूत्र
ग्रन्थिःसउच्यते ।२३।

अर्थ- वस्ती के मुखमें गोल- स्थिर- छोटीसी- गांठ अकस्मात् होय- उसमें पीड़ा पथरी के समान होय- इस रोगको मूत्रग्रन्थि- ऐसे कहते हैं ॥

मूत्रशुक्रकेलक्षण

मूत्रितस्य स्त्रियंयातो वायुनाशुक्रमुद्धत
म । स्थानाच्च्युतंमूत्रयतः प्राक्पश्चाद्वाप्र
वर्त्तते २४ भस्मोदकप्रतीकाशंमूत्रशु
क्रंतदुच्यते ॥

अर्थ- मूत्रबाधा को रोकके जो मनुष्य स्त्री सङ्ग करे उसके वायु शुक्र को उड़ाय स्थान से भ्रष्ट करे- तब मूतने के पहिले अथवा मूतने के पीछे शुक्र गिरे और उसका वर्ण राख मिला पानी के समान होय- उसको मूत्रशुक्र- ऐसे कहते हैं ॥

उष्णवातकालक्षण

व्यायामाध्वातपैःपित्तंबस्तिंप्राप्यानिलायुतं
॥२५॥ बस्तिंमेढ्रंगुदंचैव प्रदहेत्स्रावयेद
धः । मूत्रंहारिद्रमथवासरक्तंरक्तमेवच
॥२६॥ कृच्छ्रात्पुनःपुनर्जंतोरुष्णवातं-
वदंतितम् ॥

अर्थ- व्यायाम (दंडकसरत) अति मार्गकाचलना- और

धूप में डोलना- इन कारणों से कुपित भया जो पित्त सो ब-स्ती में प्राप्त हो वायू से मिल- बस्ति- अंडकोश- और गुदा- इन्में दाह करे- और हलदी के समान अथवा कुछ लाल- वा लाल ऐसा मूत्र का स्राव बारंबार कष्ट से होय- उसको उष्णवात रोग कहते हैं॥

मूत्रसादकेलक्षण

पित्तंकफोवाद्वौवापिसंहन्येतेऽनिलेनचेत्। कृच्छ्रान्मूत्रंतदापीतंरक्तंश्वेतंघनंसृजेत्। सदाहंरोचनाशंखचूर्णवर्णंभवेत्तुतत्॥१९॥ शुष्कंसमस्तवर्णंवामूत्रसादंवदंतितम्॥

अर्थ- पित्त अथवा कफ- वा दोनों वायू करके बिगड़े हुए होंय- तब मनुष्य पीला- लाल- सपेद- गाढ़ा- ऐसा कष्ट से मूते- और मूतने के समय दाह होय- और जब वो मूत्र पृथ्वी में सूख जाय तब गोरोचन- शंख का चूर्ण ऐसा वर्ण होय- अथवा सब वर्ण का होय- इस रोग को (मूत्रसाद) कहैं हैं॥

विड्विघातकेलक्ष•

रूक्षदुर्बलयोर्वातेनोदावर्त्तंशकृद्यदा। मूत्रस्रोतोऽनुपद्येतविड्संसृष्टंतदानरः॥ विड्गंधंमूत्रयेत्कृच्छ्राद्विड्विघातंविनिर्दिशेत्॥२०॥

अर्थ- रूक्ष और दुर्बल पुरुष के शकृत् (मल) जब वायु करके प्रेरित उदावर्त्त को प्राप्त हो तब वह मल मूत्र के मार्ग में आवै उस समय मनुष्य मूतने लगे- तौ बड़े कष्ट से मूत्र उतरे- और उसके मूत्र में विष्ठा कीसी दुर्गंध आवै उस्को (विड्विघात)

कहते हैं ॥ २० ॥

बस्तिकुंडलरोगकेल०

द्रुताध्वलंघनायासैरभिघातात्प्रपीडना
त् । स्वस्थानाद्वस्तिरुद्वृत्तः स्थूलस्तिष्ठति
गर्भवत् ॥ २१ ॥ शूलस्पन्दनदाहार्तो बिन्दुं
विन्दुं स्रवत्यपि । पीडितस्तु स्रजेद्धारां संर
भोद्वेष्टनार्त्तिमान् ॥ २२ ॥ बस्तिकुंडलमाहु
स्तं घोरं शस्त्रविषोपमम् । पवनप्रबलं प्रायो
दुर्निवारमबुद्धिभिः ॥ २३ ॥

अथ- जल्दी जल्दी चलने से - लंघन करने से - परिश्रम से - लकड़ी आदि की चोट लगने से - पीड़ा से - बस्ती - अपने स्थान को छोड़ ऊपर जाय कर मोटी होकर गर्भ के समान कठिन रहै - उस्से - शूल - कम्प - और दाह ये होय - मूत की एक एक बून्द गिरे - यदि बस्ती ज़ोर से पीड़ित होय तौ बड़ी धार पड़े - वस्ती में सूजन होय - पेट में पीड़ा होय - इस रोग को (वस्तीकुण्डल) ऐसे कहते हैं - यह शस्त्र के समान जल्दी प्राण नाशक - और बिषके समान कालांतर में प्राण का नाश कर्त्ता भयङ्कर है - इस में प्रायः वायू प्रबल है - मन्द बुद्धि वाले - वैद्यों से इसका निवारण (चिकित्सा) करना कठिन हैं २३

इसका अन्य दोषों का सम्बन्ध होने से जो लक्षण होतेहैं उन्को कहताहूं

तस्मिन्पित्तान्विते दाहः शूलं मूत्रविवर्णता
श्लेष्मणा गौरवं शोथः स्निग्धं मूत्रं घनं सित
म् ॥ २४ ॥ श्लेष्मरुद्धबिलो वस्तिः पित्तोदी
र्णो न सिद्ध्यति ॥ अविभ्रांत बिलः साध्यो

नचयःकुण्डलीकृतः। स्याद्बस्तौकुंडलीभू
तेतृष्णादाहश्वासएवच २५

अर्थ- वहीबस्ति कुंडल पित्त युक्त होने से - दाह और मूत्र का रंग बुरा होय- और कफ युक्त होने से जड़त्व- सूजन-मूत्र-चिकना-गाढ़ा-सपेद- ऐसा होय-

साध्यासाध्यलक्षण

कफ करके जिसका मुख बन्द होय- ऐसा और पित्त करके व्याप्त भई ऐसी बस्ती साध्य नहीं होय- और जिस बस्ती का मुख खुला होय तथा जो कुण्डलीकृत होय नहीं सो साध्य है-

कुंडलीभूतकेलक्षण

बस्ती कुंडली भूत होने से - प्यास- दाह- और श्वास- यह लक्षण होय २५

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मितभावार्थ
बोधनीमाथुरीभाषाटीकायांमूत्राघात
निदानसमाप्तम्

अथअश्मरीरोगनिदान.

वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थीशुक्रजाऽपरा। प्रा
यःश्लेष्माश्रयाःसर्वा अश्मर्यःस्युर्यमोपमाः १॥

अर्थ- वात-पित्त-कफ-इनसे ३ चौथी शुक्र से- अश्मरीरोग-(पथरी) होय है- ये पथरी बिशेष करके - कफाश्रित है- यमोपमा कहिये अच्छी चिकित्सा न होय तो यहअवश्य प्राण नाशक है १॥

सम्प्राप्तिमाह

विशोषयेद्बस्तिगतंसशुक्रं। मूत्रंसपित्तंप

वनःकफंवा। यदायदाश्मयुपजायतेच।
क्रमेण पित्तेष्विवरोचनागोः २

अर्थ- जिन मनुष्यों के बायू बस्ती में प्राप्त होय-शुक्रयुक्त अथवा पित्त युक्त मूत्र अथवा कफको सुखावै तब उस स्थान में पथरी पैदा होती है। जैसे गऊके पित्त में गोरोचन जमै हैं उसी प्रकार बस्ती में वीर्य से पथरी होय॥

पूर्वरूप

नैकदोषाश्रयाः सर्वा अश्मर्याः पूर्वलक्षणम्।
बस्त्याध्मानं तदासन्नदेशेषु परितोऽतिरुक् ३
मूत्रे बस्तसगंधत्वं मूत्रकृच्छ्रं ज्वरोऽरुचिः।

अर्थ- सब अश्मरी (पथरी) एक दोष के आश्रय नहीं हैं (अर्थात्) अनेक दोषाश्रित हैं- बस्ती का फूलना-बस्ती के आस पास अत्यंत पीड़ा होनी- मूत्र में बकरा के पेशाब कीसी दुर्गंध आवे- मूत्रकृच्छ्र-ज्वर- अरुचि- ये पथरी के पूर्व रूप जानने॥

पथरी के सामान्यलक्षण

सामान्यलिंगं रुङ्नाभिसेवनीबस्तिमूर्धसु ४
विशीर्णधारं मूत्रं स्यात्तया मार्गनिरोधने। तद्व्य-
पायात्सुखं मेहेदच्छं गोमेदकोपमम् ५ तत्सं
क्षोभात्क्षते सास्रमायासाच्चातिरुग्भवेत्।

अर्थ- नाभि सेवनी (अंडकोश के समीप का भाग) और बस्ती का अग्रभाग इनमें शूल होय- पथरी के योग से मूत्रमार्ग रुकने से मूत्र की धार कटी निकले- पथरी मूत्रमार्ग के पास से हट जाय तो मूत्र अच्छी रीति से उतरे- और स्वच्छ गोमेद मणी के समान होय- अश्मरी (पथरी) के योग से बस्ती में घाव होने से रुधिर मिला मूत्र उतरे- और मूतते समय ज़ोर करने से बड़ा क्लेश और पीड़ा होय- ऐसा सामान्य लक्षण जानना॥

बातकी पथरीके लक्षण

तत्रवाताद्भृशंव्याप्तो दन्तान्खादतिपेपते। म
थ्नातिमेहनंनाभिंपीडयंत्यनिशंक्कणन् ६ सा
निलंमुंचतिशक्तृन्मुहुर्मेहतिविन्दुशः। श्या
वारूक्षाश्मरीचास्यस्याच्चिताकंटकैरिव ७॥

अर्थ- बायूकी पथरीसेरोगी अत्यंत पीड़ा करके व्याप्त होय-दां तों को चबावे- कांपे- लिंगको हाथसे रगड़े- नाभिको रगड़े-औररात दिन दुख से रोवै- और मूत्र आने के समय पीड़ा होने के कारण अधोबायू को परित्याग करे- मूत्र उतरे बारंबार टपक टपक गिरे उसकी पथरी का रंग नीला और रूखा होय-उसके ऊपर कांटे होंय ॥७॥

पित्तकीपथरीकेलक्षण

पित्तेनदह्यतेबस्तिः पच्यमानइवोष्मवान्।
भल्लातकास्थिसंस्थानारक्तापीताऽसिताऽश्मरी ८

अर्थ- पित्तकी पथरीसेरोगीके बस्तीमें दाह होय- और खारसे जैसा दाह होय-ऐसी बेदना होय- बस्ती के ऊपर हाथ धरने से गरम मालूम होय- और भिलाए की मींगी के समान होय- लाल-पीली-काली-होय ॥८॥

कफकीपथरीकेलक्षण

बस्तिर्निस्तुद्यतइवश्लेष्मणाशीतलोगुरुः। अ
श्मरीमहतीश्लक्ष्णामधुवर्णाथवासिता ९

अर्थ- कफकी पथरी सेबस्ती में नोचनेकीसीपीड़ाहोय-शीतलपनाहोय- औरपथरीबड़ी। मुर्गी के अंडे समान-स्वच्छ औरमद्य (दारू) के रंगकीसी अर्थात् कुछ पीरीसी होय- ऐसी होय ९ यह कफ की पथरी बहुधा बालकों के होती है सो कहै हैं॥

एताभवंतिबालानामेषामेवचभूयसा । अल्प
योपचयाल्पत्वात्ग्रहणाहरणेसुखाः १०

अर्थ- पूर्वोक्त त्रिदोषजा अश्मरी (पथरी) विशेष करके बालकों के होय है- कारण उनका आहार भारी- मीठा- शीतल- चिकना है- और उनकी बस्ती छोटी तथा पुष्टता थोड़ी होय है- इसी से वैद्यों को उसका चीरना- फाड़ना- काटना- निकालना कठिन नहीं होय सो (सुश्रुत) नेभी कहा है १०॥

शुक्राश्मरीकेलक्षण

शुक्राश्मरीतुमहतां जायतेशुक्रधारणात् ॥
स्थानाच्च्युतममुक्तंहिमुष्कयोरन्तरेऽनिलः॥११॥
शोषयत्युपसंहृत्य शुक्रंतच्छुष्कमश्मरी ॥ ब
स्तिरुक्कृच्छ्रमूत्रत्वंमुष्कश्वयथुकारिणी १२
तस्यामुत्पन्नमात्रायांशुक्रमेतिविलीयते । पी
डितेत्ववकाशेस्मिन्नश्मर्येवचशर्करा १३

अर्थ- शुक्राश्मरी यह शुक्र (वीर्य) के रोकने से बड़े मनुष्यों कोही यह पथरी होती है । मैथुन करनेके समय अपने स्थानसे चलायमान हो गया जो वीर्य उस समय मैथुन न करे तब शुक्र (वीर्य) बाहर नहीं निकले भीतर ही रहै तब वायु उस शुक्रको उगकर सुखादेता है। इसीको शुक्रजाश्मरी कहते हैं। इस करिके अंडकोषों में सूजन बस्तिमें पीड़ा और मूत्रका कृच्छ्रताहोती है। शुक्राश्मरी को आदिमें लिंग और अंडकोष पेडू इनमें पीड़ा होती है वी र्यके नाश होने कारण पथरीकीनाई शर्करा उत्पन्न होती है ॥१३॥

पथरीशर्कराकेउपद्रव

अणुशो वायुनाभिन्नासातस्मिन्ननुलोमगे ॥
निरेतिसहमूत्रेण प्रतिलोमेविबध्यते ॥१४॥

मूत्रस्रोतः प्रवृत्तासा सक्ता कुर्यादुपद्रवान् । दौर्बल्यंसदनंकार्श्यं कुक्षिशूलमथारुचिम् । पांडुत्वमुष्णवातंचतृष्णांहृत्पीडनंवमिम्

अर्थ- बायु बस्ती में अनुलोमगति से प्रवेश होय तो वह शर्करा बायु करके छोटे छोटे इकट्ठी होकर मूत्र के साथ बाहर निकले - और यदि बायु प्रतिलोम होय तौ मूत्र मार्ग को रोक दे - यदि मूत्र मार्ग में प्राप्त होय तौ मूत्र के बहने वाले छिद्रों को रोक दे - फिर इतने उपद्रवों को प्रगट करे - दुर्बलता - ग्लानि - कृशता - कूख में शूल - अरुचि - पांडुरोग - उष्णबात - प्यास - हृदय - में पीड़ा - बमन - ये सब उपद्रव होंय ॥ २५ ॥

असाध्यलक्षण

प्रशूननाभिवृषणंबद्धमूत्रंरुजान्वितम् ॥ अश्मरीक्षपयत्याशु शर्करासिकतान्विता ॥२६॥

अर्थ- जिसकी नाभि- और वृषण सूजजांय - मूत्र उतरे नहीं - पीड़ा होय - ऐसे पुरुष को शर्करा - और सिकता युक्त पथरी - प्राण नाश करै ॥ २६ ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामभाथुरनिर्मितमाधवार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायांअश्मरीनिदानंसमाप्तम् ॥

इतिपूर्वार्द्धंसमाप्तम्

माधवनिदान
का
उत्तरभाग
प्रमेहनिदान

आस्यासुखंस्वप्नसुखंदधीनिग्राम्योदकानूप रसाःपयांसि ॥ नवान्नपानंगुड़वैकृतंचप्र मेहहेतुःकफकृच्चसर्वं १

अर्थ- बैठने के सुख से- निद्रा के सुख से अथवा स्वप्नसुख कहिये स्वप्न में स्त्री प्रसंग आदि सुख सें - दही-ग्रामके-संचारी जीव भेड़- बकरी आदि जलके संचारी जीव - मच्छी - कछुआ- आदि- अनूप (जलसमीप) के रहने वाले जीव हंस- चकवा-आदि ऐसे प्राणीन्केमांसरस- दूध-नया अन्न- और नया जलतथा शर्करा आदिगुड़के पदार्थ-अथवा गुड़के बिकार ए और जितने कफ कारक पदार्थ हैं सो सब प्रमेह होने के कारण हैं ॥१॥

कफपित्तबातप्रमेहोंकीक्रमसेसंप्राप्ति

मेदश्चमांसंचशरीरजंचक्लेदंकफोबस्तिगतःप्रदूष्य। करोतिमेहान्समुदीर्णमुष्णैस्तानेवपित्तंपरिदूष्यचापि २ क्षीणेषुदोषेष्ववकृष्यधातून्संदूष्य मेहान्कुरुतेऽनिलश्च।साध्याःकफोत्थादशपित्तजाःषट्याप्यानसाध्याःपवनाश्चतुष्काः ३॥ समक्रियत्त्वाद्विषमक्रियत्त्वान्महात्ययत्वाच्च

यथाक्रमन्ते॥

अर्थ- बस्ति (मूत्रस्थान) गत कफ मेद मांस- और शरीर के क्लेद को बिगाड़कर प्रमेह को उत्पन्न करै है- उसी प्रकार गरम पदार्थ से पित्त कुपित होकर पूर्वोक्त मेद- मांस को बिगाड़कर- प्रमेह को उत्पन्न करे- और बायू- यह दोष क्षीण होने सें धातू- (कहिये वसामज्जादिक) को ईंचकर- (वस्तीकेमुख परलायकर) प्रमेह को प्रगट करै कफ से प्रगट- दस प्रमेह साध्य हैं कारण इस्का यह है- कि कफ दोष और मेदः प्रभृति दूष्य इनपर कटुतिक्तादि क्रिया समान है- इसरोग में रोग काही प्रभाव ऐसा है कि इसें तुल्य दूष्य को साध्यत्व कहा है- और प्रमेह के विना और रोगों को अतुल्य (असमान) दूष्यत्व साध्य का हेतु होय है ॥ पित्त की छः प्रमेह बिषम चिकित्सा करने से याप्य होंय हैं- अर्थात् पित्त हरण करने वाले जे शीत- मधुर आदि द्रव्य वो मेद को बढाने वाले हैं- और मेद हरण कर्त्ता उष्णकटुकादि द्रव्य वो पित्त कर्त्ता हैं ऐसे क्रिया बिषम है- बादी सें प्रगट चार प्रमेह मज्जादिगंभीर धातू के आकर्षण करने से अत्यन्त पीड़ा कर्त्ता है और इन्की बिषमही क्रिया है इसी से ए चार असाध्य हैं ॥

प्रमेहकादोषदूष्यसंग्रह

कफः सपित्तं पवनश्चदोषामेदोस्त्र शुक्रांबुवसालसीकाः। मज्जारसौजः पिशितंच दूष्याः प्रमेहिणां विंशतिरेवमेहाः

अर्थ- कफ- पित्त- और बादी ए दोष और मेद- रुधिर- शुक्र- जल- मांस स्नेह (चर्वी) लसिका (मांसकाजल) मज्जारस- ओज और मांस ए दूष्य जानने- इन दोष- और दूष्य

दोनों से बीस प्रकार के प्रमेह होते हैं ॥

पूर्वरूप

दन्तादीनांमलाढ्यत्वं प्राग्रूपंपाणि पादयोः
दाहश्चिक्कणतादेहे तृट् श्वासश्चोपजा
यते ॥

अर्थ- दांतों में आदि शब्द से जिव्हा तालू आदि का ग्रहण है इन्में मैल बहुत रहै- हाथ पैर में दाह- अंग का चिकना पना- प्यास - श्वास- चकार से केशों (बारों) का आपसमें लिपट जाना - और नखों का बढ़ना जानना ए प्रमेह के पूर्व रूप होते हैं ॥

सामान्यलक्षण

सामान्यंलक्षणंतेषांप्रभूताविलमूत्रता ॥

अर्थ- बहुत और गाढ़ा मूत्र उतरे ए प्रमेह के सामान्य लक्षण हैं-

प्रमेहके कारण

दोषदूष्याविशेषेपितत्संयोगविशेषतः । मू
त्रवर्णादिभेदेनभेदोमेहेषुकल्प्यते ॥

अर्थ- दोष और दूष्य इन्के भेद नहोने से परंतु दोष और दूष्य इन्के संयोग भेद से मूत्र वर्णादि भेद करके प्रमेह में भेद होय है दस छः चार- इत्यादिक- दोष (बात-पित्त-कफ-) दूष्य (मांस-मेदा मज्जादि) जैसे सपेद-पीला-काला-तामेके रंगका- और श्याम इन पांच रंगों के- संयोग करने सें पिंगल- पाटलादि अनेक व र्ण भेद होते हैं- इसी प्रकार दोषादिकों के संयोग सें नाना प्रका र के प्रमेह होते है- संयोग भेद की कैसे प्रतीत हो ऐसे कोई पूछे तो उस्के वास्ते कहते हैं-मूत्रकेवर्णादिभेद सें समान कारणोंके भेद कल्पना करने चाहियें- जैसे घट (घड़ा) बनानेके समय मृत्ति-

कादि कारण सामग्री में भेद नहीं है- परन्तु- कुम्भकारादि (कुह्मार आदि) संयोग भेद करके- घड़ा- सरवा- मटकना- आदि अनेक जाति भेद होजाते हैं ॥

कफ की १० प्रमेह के लक्षण

अच्छं बहु सितं शीतं निर्गंधमुदकोपमम् ।
मेहत्युदकमेहेन किंचिदाविलपिच्छिलम् ।
इक्षोरसमिवात्यर्थमधुरं चेक्षुमेहतः । सांद्री
भवेत्पर्युषितं सान्द्रमेहेन मेहति ॥ सुरामेही
सुरातुल्यमुपर्यच्छमधोघनम् ॥ संहृष्टरोमा
पिष्टेन पिष्टवद्बहुलं सितं । शुक्राभं शुक्रमि
श्रं वा शुक्रमेही प्रमेहति । मूत्राणून् सिकता
मेही सिकतारूपिणो मलान् । शीतमेही सुब
हुशो मधुरंभृशशीतलम् । शनैः शनैः शनै
र्मेही मन्दं मन्दं प्रमेहति । लालातंतुयुतं मूत्रं
लालामेहेन पिच्छिलम् ॥

अर्थ-१ उदकप्रमेह करके- स्वच्छ- बहुत- सपेद- शीतल- गंधरहित- पानी के समान कुछ गाढ़ा, और चिकना मूते है-

२ इक्षुप्रमेहसे- ईखके रससमान अत्यंत मीठा ऐसा मूत्र होय-

३ सांद्रप्रमेहसे- रात्रमें पात्र में धरने में जैसा होवे ऐसा मूत्र होय-

४ सुराप्रमेहसे- दारू के समान ऊपर निर्मल- और नीचे गाढा ऐसा मू

५ पिष्टप्रमेहसे- पिसे चामलों के पानी समान सपेद- और बहुत मूते तथा मूतते समय रोमांच होय

६ शुक्रप्रमेहसे- शुक्र (वीर्य) के समान अथवा शुक्रमिला मूत्र होय)

७ सिकतामेहसैं- मूत्र के कण और वालू रेतके समान मलके कण

८ शीतमेहसे- मधुरतथाअत्यंतशीतलऐसाबारंबारबहुतमूते
९ शनैर्मेहसे- धीरे धीरे और मंदमंदमूते
१० लालाप्रमेहसे- लारकेसमानतारयुक्तऔरचिकनामूत्रहोयहै

पित्तका ६ प्रमेहके लक्षण

गंधवर्णरसस्पर्शैः क्षारेणक्षारतोयवत् । नी
लमेहेन नीलाभंकालमेहीमषीनिभं ॥ हारि
द्रमेहीकटुकंहरिद्रासन्निभंदहत् । विस्रमां
जिष्ठमेहेनमंजिष्ठासलिलोपमम् । विस्रमु
ष्णंसलवणंरक्ताभंरक्तमेहतः ॥

अर्थ- ११ क्षारप्रमेहसे- खारेजलकेसमान गंध वर्ण रस और स्पर्श ऐसा मूत्र होता है ॥
१२ नीलप्रमेहसे- नीलेरंगका अर्थात् पपैया पक्षीके पंखकेसदृशमूते
१३ कालप्रमेहसे- स्याई के समान कालामूते ॥
१४ हारिद्रप्रमेहसे- तीक्ष्ण हलदी के समान औरदाहयुक्त मूते-
१५ मांजिष्ठप्रमेहसे- आम दुर्गंध और मजीठ केसमान मूते-
१६ रक्त प्रमेहसे- दुर्गंधयुक्त गरम खारी और रुधिर के समान लाल मूत्र करे ॥

बातकी ४ प्रमेहकोलक्ष॰

वसामेहीवसामिश्रंवसाभंमूत्रयेन्मुहुः । मज्जाभंम
ज्जमिश्रंवामज्जमेहीमुहुर्मुहुः । कषायमधुरंरूक्षंक्षौ
द्रमेहंवदेद्बुधः । हस्तीमत्तइवाजस्रंसूत्रंवेगविवर्जित
म् । सलसीकंविबद्धंचहस्तिमेहीप्रमेहति ॥

अर्थ- २७ वसाप्रमेही- वसा (चर्वी) युक्त अथवावसाकेसमानमूते
२८ मज्जाप्रमेही- मज्जाकेसमान अथवामज्जामिला बारंबार मूते
२९ क्षौद्रप्रमेही- कषैला मीठा और चिकना ऐसा मूते ॥

२० हस्तिप्रमेही- मस्त हाथी के समान निरंतर वेगरहित जिसमें तार निकलें- और ठहर ठहर के मूते ॥

कफ प्रमेहके उपद्रव

अविपाकोऽरुचिश्छर्दिर्ज्वरः कासः सपीनसः
उपद्रवाः प्रजायन्ते मेहानां कफजन्मनाम् ॥

अर्थ- अन्न का परिपाक न होय- अरुचि- वमन- ज्वर- खांसी- पीनस- ए कफ प्रमेह के उपद्रव हैं ॥

पित्तप्रमेहके उपद्रव

बस्तिमेहनयोः शूलं मुष्कावदरणं ज्वरः । दाह
स्तृष्णाम्लिका मूर्च्छा विड्भेदः पित्तजन्मनां

अर्थ- वस्ती और लिंग इन्में पीड़ा होय- अंडकोशों का पककर फटना ज्वर प्यास- खट्टी डकार- मूर्च्छा- और पतला दस्त होय ये पित्तप्रमेहके उपद्रव हैं ॥

बातप्रमेहके उपद्रव

बातजानामुदावर्त्तकंठहृद्ग्रहलोलताः । शूल
मुन्निद्रता शोषः कासः श्वासश्च जायते

अर्थ- उदावर्त्त- गला- हृदय इन्का रुकना- लोलता (सर्वरसभक्षणेच्छा) शूल निद्रानाश- शोष- सूखी खांसी- श्वास ए बात प्रमेहके उपद्रव हैं

प्रमेहके असाध्यलक्षण

यथोक्तोपद्रवाविष्टमतिप्रस्रुतमेव च । पिडिका
पीड़ितं गाढं प्रमेहो हन्ति मानवम् ॥

अर्थ- ऊपर कहि आए जो अविपाकादि उपद्रव वो सब होंय जिस्के मूत्र का श्राव बहुत हुआ होय- शराविका आदि जो पिड़िका आगे कहेंगे वो होंय रोग अंगमें प्रवेश हो गया हो ऐसे लक्षण होंनेसे वो प्रमेह मनुष्य को मारडाले ॥

दूसरे असाध्यलक्षण

जातः प्रमेहीमधुमेहिनायो नसाध्यरोगःसहि बीजदोषात्।

अर्थ- मधुमेहीपुरुष सैउत्पन्न भया जो प्रमेह वान् पुरुषका रोग बीज दोषके कारण से साध्य नहीं होय - इस जगे मधुमेहशब्द से साधारण प्रमेह जानना इस जगे बी मधुकोश टीका वाले ने मधुमेह शब्द पै बहुतसा शास्त्रार्थ लिखा है॥

कुलपरंपरागत अन्यविकारोंको असाध्यत्वकहते·

येचापिकेचित्कुलजाविकाराभवन्तितांश्चप्र बदन्त्यसाध्यान्।

अर्थ- जो कोई कुष्टादिक कुल परं परागत्त विकार हैं वोसब असाध्य हैं - अब कहते हैं कि सर्व प्रमेहों की उपेक्षा करने से मधुमेहत्वको प्राप्त होते हैं - इस्को कहते हैं॥

सर्वप्रमेहकीअपेक्षाकरने से मधुमेहहोयहै

सर्वएवप्रमेहास्तुकालेनाप्रतिकारिणः। मधुमेहत्त्वमायांतितदाऽसाध्याभवंतिहि

अर्थ- सब प्रमेह औषधके बिना काल करके मधुमेह को प्राप्त होते हैं तब वो असाध्य होजाते हैं॥

धातुक्षयऔरआवरणइन्सेकुपितभयीवायुकोमधुमेहकासंभवहोयहै॥

मधुमेहेमधुसमंजायत्तेसकिलद्विधा।क्रुद्धे धातुक्षयाद्वायौदोषावृतपथेऽथवा॥

अर्थ-मधुमेहमेंमूत्रमधु(सहत)केसमानहोयहैसोदोप्रकार

कोई एक तो धातुक्षय होने में वायु कुपित होकर होय और दूसरा दोषो करके पवन का मार्ग आवृत (ढकने) करके होय है॥

आवरण के लक्षण

आवृतो दोषलिंगानि सोऽनिमित्तं प्रदर्शयन्। क्षीणः क्षणात्पुनः पूर्णो भजते कृच्छ्रसाध्यताम्॥

अर्थ- आवृत वायु से प्रगट मधुमेह जिस पित्तादि दोष करके आच्छादित होय उसके लक्षण अकस्मात् दीखें क्षण भर में क्षीण होय क्षण में पूर्ण होय वो कष्टसाध्य जानना॥

मधुमेह शब्द की प्रवृत्ति-विषय निमित्त

मधुरं यच्च मेहेषु प्रायो माध्विव मेहति। सर्वेऽपि मधुमेहाख्या माधुर्याच्च तनोरतः॥

अर्थ- प्रमेहों में रोगी प्रायशः मधु (सहत) के समान मीठा मूते और सब शरीर को मीठा करदे इसीसे सब प्रमेह को मधुप्रमेह संज्ञा दीनी है और अमृत सागर में जो छः प्रमेह आत्रेय के मत से लिखी है वो प्रमाण रहित है और प्रसिद्ध में भी प्रमेह बीस प्रकार के हैं इसीसे हमने छोड़दीने हैं॥

इति दत्तरामकृत माधवभावार्थबोधनी भाषा माथुरी टीकायां प्रमेहनिदानं

प्रमेहपिटिकानिदान

शराविका कच्छपिका जालिनी विनताऽलजी। मसूरिका सर्षपिका पुत्रिणी सविदारिका॥१॥ विद्रधिश्चेति पिडिकाः प्रमेहोपेक्षया दश। संधिमर्मसु जायन्ते मांसलेषु च धामसु॥२॥

अर्थ- प्रमेहकी उपेक्षा करने सें शरावि कादिदशोपिटिका संधिम
मे और मांसल- ठिकाने में होती है ॥२॥

सबके लक्षण

अंतोन्नताचतद्रूपानिम्नमध्याशराविका। सदा-
हाकूर्मसंस्थानाज्ञेयाकच्छपिकाबुधैः ३ जालनी
तीव्रदाहातुमांसजालसमावृता। अवगाढरुजो
क्लेदापृष्टेवाप्युदरेऽपिवा ४ महतीपिटिकानी
लासाबुधैर्विनतास्मृता। रक्तासितास्फोटवतीदा
रुणात्वलजीभवेत् ५ मसूरदलसंस्थानाविज्ञे
यातुमसूरिका। गौरसर्षपसंस्थानातत्प्रमाणा
चसर्षपी ६ महत्यल्पचिताज्ञेयापिडिकाचापिपु
त्रिणी। बिदारीकंदवद्वृत्ताकठिनाचविदारिका ७
विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ताज्ञेयाविद्रधिकातुसा ॥।

अर्थ- १ शराविका - येपिटिका ऊपरके भाग में ऊंची और म
ध्य में बैठी सी होय- जैसा मट्टी का सराब होय है ऐसी होय है॥
२ कच्छपिका- ये कछुवाकिपीठके समान कुछदाहयुक्त ऐसी होयहै
३ जालनी- येतीब्रदाहकर्के संयुत औरमांसके जालसें व्याप्त होय है
४ विनता- ये फुन्सी पीठमें अथवा पेटमें होय है- इसकोपीड़ाबहुत
होय- ठंडी होय- तथाबड़ी और नीले रंग की होय है-॥
५ अलजी- लाल- काली- बारीक- फोडान्कर्के व्याप्त भयकर
६ मसूरिका- मसूरकीदाल के समान बड़ी होय है॥
७ सर्षपिका- सपेदसरसों के समान बड़ी होय है॥
८ पुत्रिणी- येबीच में एक बड़ी फुंसी होय उसके चारो और छो
टी- छोटी- फुंसी और होंय- उसको पुत्रिणी कहते हैं ॥
९ विदारिका- येविदारीकंदके समानगोल और करडी होय है

२ विद्रधिका ये विद्रधिके लक्षण करके युक्त होय है - भोज और सुश्रुत के मत सें जो पीड़िका हैं - और चरक के मत सें साठ होहैं॥

ये पिटिका कैसे उत्पन्न होती हैं

येयन्मयाःस्मृतामेहास्तेषामेतास्तन्मयाः बिनाप्रमेहमप्येताजायन्तेदुष्टमेदसः॥ तावच्चैतानलक्ष्यन्तेयावद्वास्तुपरिग्रहः॥

अर्थ- जो प्रमेह जिस दोष करके उल्वण होय है तिस करके तिसी दोष के उल्वण करके पिटिका होय है - ए पिटिका प्रमेह के विना दुष्ट मेद के होने से प्रगट होती है जबतक इन्की गांठ न हो बंधे तबतक नहीं दीखे (येयन्मयास्स्मृतामेहाः) इस पद के ऊपर मधुकोश वाले ने शास्त्रार्थ लिखा है ग्रन्थ बढ़ने के भय से हमने नहीं लिखा॥

असाध्यपिटिकालक्षण

गुदेहृदिशिरस्यंसे पृष्ठेमर्मसुचोत्थिताः। सोपद्रवादुर्बलाग्नेःपिडिकाःपरिवर्जयेत्॥

अर्थ- गुदामें - हृदयमें - शिरमें - कंधामें - पीठमें - और मर्मस्थानमें - उठी पिटिका और उपद्रव युक्त हो - तथा दुर्बलाग्नि पुरुष की पिटिका त्याज्य है पिटिका के उपद्रव चरक ने कहे हैं सो या प्रकार (तृट्का समांससंकोचमोहहिक्कामदज्वराः विसर्पमर्मसंरोधाः पिटिकानामुपद्रवाः) इसका अर्थ सुगम है इसी से नहीं लिखा - शंका ÷ क्यों जी - स्त्रीन्के प्रमेह क्यों नहीं होय - ÷ उत्तर ÷ इस्का कारण और ग्रन्थों में इसप्रकार लिखा है (रजःप्रसेकान्नारीणांमासिमासिविशुद्ध्यतिकृत्स्नंशरीरंदोषाश्चनप्रमेहत्यतःस्त्रियः॥ ÷॥

अर्थ- स्त्रीनके महीना के महीना रज बहा करे है - इसी सें सर्वदे

ह और दोष शुद्ध होते हैं - इसी से स्त्रीन के प्रमेह नहीं होय-औ र स्त्रीन्के प्रमेह होना कहीं नहीं देखा- येभी एक बलवान् कारण है- और सोमादिक रोग होते हैं कदाचित कोई कहै कि औररोग का होना असंभव है- तो ये केवल झगड़े का स्थान है इस्का कि सी ने यथार्थ निर्णय नहीं करा प्रमेह निवृत्त के लक्षण सुश्रु तमें कहेहैं- यथा ÷ प्रमेहिणोयदामूत्रमनाविलमपि च्छिलम् ॥ विशदंकटुतिक्तंचतदारोग्यंप्रचक्षते ÷॥

इति प्रमेहमधुमेहपिडिकानिदानम्

मेदोनिदान

कारण औरसम्प्राप्ति-

अव्यायामदिवास्वप्नश्लेष्मलाहारसेविनः।
मधुरोऽन्नरसः प्रायः स्नेहान्मेदो विवर्द्धते १
मेदसावृत्तमार्गत्वात्पुष्यंत्यन्येनधातवः। मे
दस्तुचीयतेयस्मादशक्तः सर्वकर्मसु-२

अर्थ- दंड कसरत के न करने सें- दिन में सोनेसे- और कफका री पदार्थ के सेवन करने से ऐसी रीति सै वर्त्तने वाले पुरुष का अ न्नरस केवल मधुर कहिये आम रूप ही स्नेह (कर्केमेद) को व- ढावे- मेद कर्के मार्ग बंद होने सें अन्य धातु हाड मज्जा वीर्य-आदि पुष्ट होंय नही और मेद बढ़े तब वह पुरुष सब कर्म करने को अश क्त होय ॥

मेदस्वीपुरुषकेलक्षण

क्षुद्रश्वासतृषामोहस्वप्नक्रथन ——— सादनैः
युक्तःक्षुत्स्वेददौर्गंध्यैरल्पप्राणोल्पमैथुनः ÷।

मेदस्तुसर्वभूतानामुदरेष्वस्थिषुस्थितम् । अ
तएवोदरेवृद्धिः प्रायोमेदस्विनोभवेत् ॥ ÷ ॥

अर्थ— क्षुद्र स्वासः रूक्षायासोद्भव इत्यादिक पिछाड़ी कहिआ
ऐसा) तृषा · मोह · निद्रा · अकस्मात् श्वास का रोध · अंग ग्लानि
भूख · पसीना · और दुर्गंधि · इन लक्षण करके वह पुरुष युक्त होय
उसकी शक्ति घटजाय · और मैथुन करने में उत्साह न होय · मेद ·
यह सब प्राणी मात्रों के उदर और हड्डीन में रहै है · इसी से मेद
वाले पुरुषका पेट बढा करता है ॥

मेदस्वीकीअवस्थाविशेष ·

मेदसावृत्तमार्गत्त्वाद्वायुःकोष्ठे विशेषतः । च
रन्संधुक्षयत्यग्निमाहारं शोषयत्यपि ॥ तस्मा
त्स शीघ्रंजरयत्याहारंचापेकांक्षति । विकारां
श्चाश्नुतेघोरान्कांश्चित्कालव्यतिक्रमात् । एता
वुपद्रवकरौविशेषादग्निमारुतौ । एतौहिद
हतःस्थूलंवनंदावानलोयथा

अर्थ— मेद से मार्ग रुक जाने सें कोठे में पवन का संचार विशे
ष होय · तब अग्नि को यह पवन बढावे भोजन करे आहार को तु
रंत शोषण करे · तब वह आहार शीघ्र पचकर फेर जमने की इ
च्छा को प्रगट करे · और भोजन करने में कालका व्यतिक्रम होने
सें भयंकर वात के रोग उत्पन्न होंय · यह अग्नि और वायु बड़ा उप
द्रव करे हैं जैसें दावानल (अग्नि) वन को जरावै है उसी प्रका
र ये दोनो उस स्थूल (मोटे) पुरुष को जराती है ॥

अत्यंतमेदवढ़नेकापरिणाम ·

मेदस्यतीवसंवृद्धे सहसैवानिलादयः । वि

कारान्दारुणान्कृत्वानाशयंत्याशुजीवितम्

अर्थ-मेद अत्यन्त बढ़ने से वायु आदि रा अकस्मात् भयंकर (प्रमेह-पिटिका ज्वर-भगंदर-विद्रधि-वातरोग-इत्यादि) उत्पन्न करके शीघ्र ही जीवका नाश करै ॥

स्थूललक्षण

मेदोमांसातिवृद्धत्त्वाच्चलस्फिगुदरस्तनः
अयथोपचयोत्साहोनरोऽतिस्थूलउच्यते।

इतिमेदोनिदानम्

अर्थ- मेद और मांस रा अत्यन्त बढ़ने से जिस पुरुषके कूले पेट और स्तन ए थलथल हलैं और उसके शरीर की स्थूलता बढ़ी होय अर्थात् जैसी चाहिये तैसी नहोय-तथा उत्साह (हुशयारी) नरहै-ऐसे मनुष्य को अति स्थूल कहते हैं ॥

इतिमाधवभावार्थबोधनीमाथुरीटीकायां मेदो निदानम् ॥ + ॥

प्रसंगवससैंकार्श्य (क्षीण) रोगकानिदानग्रन्थान्तरसे लिखते हैं

बातोरूक्षान्नपानानिलंघनं प्रमिताशनं । क्रियातियोगः शोकश्चवेगनिद्राविनिग्रहः १
नित्यंरोगोरतिर्नित्यंव्यायामोभोजनाल्पता ॥
भीतिर्धनादिचिंताचकार्श्यकारणमीरितं २
क्रोधोतिमैथुनंचैवशुक्रव्याधिस्तथैवच ॥
कार्श्यस्यहेतवःप्रोक्ताः समस्तैरपितांत्रिकैः ३

अर्थ- कुपित वायु-रूखा अन्न (चना-कांगुनी-सामखिआ आदि) रूक्षपान (औंटायाजल आदि) लंघन-थोड़ा भोजन-क्रियाति योग कहिये-वमन-विरेचन-का बहुत होना शोक बंधु वियोगादिक-मूत्र-मल आदि वेगों का रोकना-निद्रा का

रोकना · नित्यही रोगी रहना · सर्वदा इच्छारहित होना· व्या याम (दंड कसरत और मार्ग का चलना आदि श्रम) अ ति भय · धन आदि की चिन्ता· क्रोध· अति मैथुन· शुक्र व्याधि (प्रमेहारोगादिक) एसर्व कार्श्य (क्षीण) होनेके कारण वैद्य कहते हैं ॥ ३॥

कृशमनुष्यकेलक्षण

शुष्कस्फिगुदरग्रीवाधमनीजालसन्ततिः॥
त्वस्थिशेषोतिकृशतःस्थूलपर्वनरोमतः ४

अर्थ- जिस्के कूले·पेट·गरदन·और धमनी कहिये नाड़ीन्काजाल एसव सूखजाय· तथा हड्डी सूखजाय· और पर्व कहिये जोड़ मोटे होंय वह पुरुष कृश (लटा) कहाता है ४॥

अतिकृशकोवर्जनीयवस्तु

व्यायाममतिसौहित्यंक्षुत्पिपासामहौषधं।
नकृशःसहतेतद्वदतिशीतोष्णमैथुनम् ५

अर्थ- व्यायाम·(दंड कसरत) का करना· अति सौहित्य (अच्छोवात)भूख·प्यास·उत्कट औषध·तथा शीतलता·गरमी और मैथुन इन्कोकृश मनुष्य नहीं सहिसके है· इसीसे इनको त्यागदे -

अतिकृशकेजेरोगहोतेहैं उन्कोकहतेहैं

मोहःकासःक्षयःश्वासगुल्मार्शास्युदराणि
च।भ्रशंकृशंप्रधावंतिरोगाश्चग्रहणीमुखाः६

अर्थ- जो मनुष्य ज्वरादिरोग सैं कृश होय·अथवा वात रूक्षान्नपानादिक सैं कृश होय और वो कुपथ्य करे तो इतने रोग होंय· जो विदाही और अभिष्यंदी वस्तु खाइतो· मोह· (तापति

ली) होय और खटाई खायतौ खांसी होय- और अति मैथुन करै तौ खई का रोग होय- और व्यायाम शीतल भोजन-पानादिक करै तौ श्वास रोग होय- जोरूखा अन्न पान कडुवा-खट्टा- भक्षण और शीतल- भारी- चिकना आदि का सेवन करै तौ गुल्म (गोला) होय- और अर्श (बबासीर) कारक पदार्थ सेवन सैं ववासीर हो- इसी प्रकार उदर रोग संग्रहणी आदि रोग होते हैं ॥ ६ ॥ अब कहते हैं कि कोई कृशभी बलवान होय है इसमें क्या हेतु है ॥

आधानसमयेयस्यशुक्रभागोधिकोभवेत् ।
मेदोभागस्तुहीनःस्यात्सकृशोऽपिमहाबलः ७

अर्थ- गर्भ रहने के समय शुक्र का भाग अधिक होय और मेद का भाग थोड़ा होय तौ मेद थोड़े होने सैं तो कृश होय- और शुक्राधिक्य होने से बलवान होय ॥ ७ ॥

कस्यचित्स्थूलस्यापिताहकबलं
नदृश्यतेतत्रहेतुमाह

मेदसोंऽशोधिकोयस्यशुक्रभागोल्पकोभवेत्।
सस्निग्धोपिसुपुष्टोपिबलहीनोविलोक्यते ८

अर्थ- गर्भ रहते समय मेद का भाग अधिक होय और शुक्र का भाग थोड़ा होयतौ वह पुष्टभी है परंतु बलहीन होय है ॥ ८ ॥

दृष्टान्त

यथापिपीलिकास्वल्पायथाचवरटीबलात्
स्वतश्चतुर्गुणंभारंनीत्वागच्छतिसन्मुखं ९

अर्थ- जैसे पिपिलिका (चैंटी) आप अति कृश है और खाने की वस्तु दाल- चांवल आदि भारी वी है परंतु उन को खींचकर बिल में लेजाती है- और बरटी (पीली मांखी) झींगर आदि आपसे चौ

गुने भारी वी है परन्तु खींचकर अपने स्थान में लेजाती है इसी प्रकार वलवान् पुरुष जानना ॥ ९ ॥

असाध्यकार्श्यमाह

स्वभावात्कृशकायोयः स्वभावादल्पपावकः।
स्वभावादवलोयश्चतस्यनास्तिचिकित्सितं १०।

अर्थ- जिसका स्वत स्वभाव सें कृश शरीर है और जिस्की स्वभावसें मंदाग्नि है औरजोस्वभाव सें वलहीन है उस्कोचिकित्सा नहीं है-

इतिकार्श्यरोगनिदानम्

उदररोग निदानम्

अग्नि का दुष्ट होना यही उदर रोगकाविशेषकर्के कारण है ÷

रोगाःसर्वेऽपिमन्देऽग्नौसुतरामुदराणिच।अ
जीर्णान्मलिनैश्चान्नैर्जायन्तेमलसंचयात् ÷।

अर्थ- अग्नि मन्द होने सें सब रोग होते हैं औरउदरतो विशेष कर्के होयहै-कारण यह है कि अग्निमांद्य यह त्रिदोषजनकहै और अजीर्ण सैं मलिन अन्न सैं (विरुद्ध अध्यशनादिक) औरमल (दोषतथा पुरीषादिक) इन्के संचय सैं उदररोग होय है। इसजगे उदर शब्दकरके उदरस्थितरोगजानने सो ग्रंथान्तर में लिखा है ॥

---

१ तथामग्निवलेहीनेकुप्यंतिपवनादयः ॥ इति

२ तास्थ्यतद्धर्मताभ्यांवतलत्सर्मीपतयापिच तत्सात्तर्चर्याच्छब्दानांवृत्तिरेषाचतुर्विधेति

३ अग्निसंचितदोषाणांपापकर्म्मचकुर्वतां उदराण्युपजायंतेमंदाग्नीनांविशेषतः स्वेदवहानां मेदोमूलं लोम कूपश्चात्

४ उदकवहानां स्रोतसां तालु मूलं क्लोमच

उदरकीसम्प्राप्ति

रुध्वास्वेदांबुवाहीनिदोषाःस्त्रोतांसिसंचिताः।
प्राणाग्न्यपानान्संदूष्यजनयंत्युदरंन्तृणाम् २

अर्थ- बातादिदोष-स्वेद-(पसीना) बहने वाली और जलकोब हने बाली नाड़ीनके मार्ग को रुद्ध (रोक) कर और वे दोष बढकर-प्राण वायु-अग्नि और अपान वायु इन्को अत्यन्त दुष्ट कर मनुष्यों के उदररोग उत्पन्न करै है ॥+॥ उदर रोग का पूर्वरूप ॥+॥

सुश्रुतमेंलिखाहैं + तत्पूर्वरूपंवलवर्णकांक्षाव-लीविनाशोजठरेतुराज्यः जीर्णापरिज्ञानबिदाहवत्यो वस्तौरुजःपादगतश्चशोथः ॥+॥

उदरकेसामान्यरूप

आध्मानंगमनेऽशक्तिर्दौबेल्यंदुर्बलाग्निता
शोथःसदनमंगानांसंगोवातपुरीषयोः॥ दाह
स्तंद्राचसर्वेषुजठरेषुभवंतिहि॥

अर्थ-अफरा-चलने की शक्ति का नाश-दुर्बलता-मन्दाग्नि-सूज न-अंगग्लानि-वायुकातथामलकारुकना-दाह-तन्द्राएलक्षणसवउदर में होतेहैं॥

उदर रोग संख्या

पृथक्दोषैःसमस्तैश्चप्लीहबद्धक्षतोदकैः॥
संभवंत्युदराण्यष्टौतेषांलिंगंपृथक्श्रृणु+

अर्थ- पृथक् दोषों सें (अर्थात् वात-पित्त-कफ) सन्निपात सैं (सन्निपातोदर) प्लीहोदर १, क्षतोदर १ और जलोदर १ सबमि लायकर ८ भये इन्के लक्षण पृथक् पृथक् कहते हैं तिनमें

बातोदरकेलक्षण

तत्रवातोदरेशोथःपाणिपन्नाभिकुक्षिषु। कु
क्षिपार्श्वोदरकटीपृष्ठरुक्पर्वभेदनम्॥ रू

ष्ककासोऽगमर्दोऽधोगुरुतामलसंग्रहः ।
श्यावारुणत्त्वगादित्वमकस्माद्वृद्धिह्रासवत्
सतोदभेदमुदरंतनुकृष्णाशिराततम् । आ
ध्मातदृतिवच्छब्दमाहतंप्रकरोतिच । वा
युश्चात्रसरुक्शब्दोविचरेत्सर्वतोगतिः

अर्थ- वातोदर में हाथ- पैर- नाभि- और कूख इन्में सूजन हो
य- संधीन् का टूटना तथा कूख- पसबाड़े- पेट- कमर- पीठ- इन्में
पीड़ा- सूखी खांसी- अंगों का टूटना- कमर सें नीचे भाग में भारीप
ना- मल का संग्रह होना- त्वचा- नख- नेत्रादिक का- काला लाल
होना- पेट अकस्मात् (निमित्तकेविना) बड़ा हो जाय- छोटा हो
जाय- सुई चुभाने कीसी तथा नोचने कीसी पीड़ा होय- पेटमें चारों
तरफ बारीक- काली शिरा (नाड़ीन्) सें व्याप्त होय- चुकटी मा
रने सें फूली पखाल के समान शब्द होय- इसउदर में बायू चारो
तरफ डोलकर शूल करे तथा गूंजे ॥

पित्तोदरकेलक्षण

पित्तोदरेज्वरोमूर्च्छादाहस्तृट्कटुकास्यता
भ्रमो तिसारः पीतत्त्वंत्वगादावुदरंहरित्
पीतताम्रशिरानद्धंसस्वेदंसोष्मदह्यते । धू
मायतेमृदुस्पर्शंक्षिप्रपाकंप्रदूयते

अर्थ- पित्त के उदर रोग में- ज्वर- मूर्च्छा- दाह- प्यास- मुखमें
कड़ आसभ्रम- अतिसार- त्वगादिक (नखनेत्र) इन्में पीला
पना- पेट हरा होय- पीली तांबे के रंग की नाड़ीन्सें उदर व्याप्त
हो- पसीना आवे- गरमी सें सब देह में दाह होय- आंतों सें
धूंआं सा निकलता दीखे- हाथ के स्पर्श करने से नरम मालूम
हो शीघ्र पाक होय- अर्थात् जलोदरत्त्व को प्राप्त होय- और इसमें

घोर पीड़ा होय ॥

कफोदरकेलक्ष.

श्लेष्मोदरेंऽगसदनंस्वापःश्वयथुगौरवम्।
निद्रोत्क्लेशोऽरुचिःश्वासःकासःशुक्लत्वगा
दिता।उदरंस्तिमितंस्निग्धंशुक्लराजीततंमहत्
चिराभिवृद्धिकठिनशीतस्पर्शंगुरुस्थिरम् ॥

अर्थ- कफ के उदर रोग में हाथ पैर आदि अंगों में शून्यता हो. और निकड़जाय - सूजन होय- अंग भारी होजाय- निद्रा आवै वमनहोयगी ऐसा मालूम होय- अरुचि होय- स्वांस- स्वांसीहोय- त्वचा नख नेत्रादिक सफेद हों- पेट निश्चल चिकना- सफेद नाड़ी नसें व्याप्त हो- इस्की वृद्धी बहुत काल में होय- पेट करी और शीतल मालूम होय- तथा भारी और स्थिर होय ॥

सन्निपातोदरकेलक्ष.

स्त्रियोऽन्नपानंनखरोममूत्रविडार्तवैर्युक्तमसा
धुवृत्ताः।यस्मैप्रयच्छंत्यरयोगराश्च दुष्टांबुदू
षीविषसेवनाद्वा। तेनाशुरक्तंकुपिताश्चदो
षाः कुर्युःसुघोरंजठरंत्रिलिंगं। तच्छीतवा
तेभ्रद्रदुर्दिनेवा विशेषतःकुप्यतिदह्यतेच
सचातुरोमूर्च्छतिहिप्रसक्तं पांडुःकृशःश
—ष्यतिसेवयाच। दूष्योदरंकीर्तितमेत-
देव ॥

अर्थ- खोटे आचरण वाली स्त्री जिस पुरुष को नख - केश - (बार) मल-मूत्र- आर्त्तव (रजोदर्शकारुधिर) इन्को मिलाय अन्न पान देय- अथवा जिसका शत्रु बिष देवे- अथ

वा दुष्टांबु (जहरमिला मछली तिनका - पत्ता आदि औंटा हुआ औसा - जल और दूषी विषे (मन्दविष) इन्के सेवन करने सें रुधिर - और वातादिक दोष शीघ्र कुपित होकर अत्यन्त भयंकर त्रिदोषात्मक उदर रोग उत्पन्न करें हैं - वे शीत काल में अथवा - शीतल पवन चलै उस समय अथवा जिसदिन वर्षा का झड़ लगै उस दिन विशेष करके कोप को प्राप्त हो और दाह होय ((इसका कारण ये है कि उस समय दूषी बिषका कोप होय है)) वो रोगी निरन्तर बिषके संयोग सै मूर्च्छित होय - देहका पीला वर्ण तथा कृश होय - और परिश्रम करने सें शोष होय इस्को दूष्योदर[२] औसे कहते हैं ॥

प्लीहोदरकेलक्ष -

प्लीहोदरंकीर्त्तयतोनिबोध । बिदाह्यभिष्यंदि
रतस्यजंतोः प्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ॥ प्ली
हाभिवृद्धिंकुरुतः प्रवृद्धौ प्लीहोत्थमेतज्जठ
रंवदन्ति ॥ तद्वामपार्श्वेपरिवृद्धिमेति विशे
षतःसीदतिचातुरोत्र । मन्दज्वराग्निः कफ
पित्तलिंगैरुपद्रुतःक्षीणबलोऽतिपांडुः

अर्थ - प्लीहोदरके लक्षण कहता हूं तुम सुन विदाही (वंशकरीरादि

१ यवुक्रम् - जीर्णं विषघ्नौषधिभिर्हतंवादावाग्निवाता तपशोषितंवा स्वभावतोवा गुण विप्रहीनं विषंहि दूषी विषतामुपैति इति

२ एतदेव सन्निपातोदरं दूष्योदरं कीर्त्तितं न पुनरधिकं इत्यर्थः ॥ रक्तंदूष्यं दूषयित्वाभवतीति दूष्योदरं ❖ किंवा परस्परंदूषयंतीति दोषा स्व दूष्यास्तैः कृत मुदरं दूष्योदरम् ॥

अर्थात् दाह करने वाली और अभिष्यंदी (दध्यादि) अर्थात् स्रोत (छिद्रोंके रोकने वाली) ऐसे अन्न निरंतर सेवन करने वाले पुरुष के अत्यंत दुष्ट भए जो रुधिर और कफ बढ कर प्लीह (ता पतिल्ली) को बढावे इस उदर को प्लीहोत्थ उदर कहते हैं ये बाई तरफ बढता है· इस अवस्था में रोगी बहुत दुःख पाता है दे हमें मंद· ज्वर होय· मंदाग्नि होय· तथा कफ पित्तोदर के लक्षण इ स में मिलते हों· बल क्षीण होय· अत्यंत पीला वर्ण होय ॥

यकृद्दाल्युदर के लक्षण

सव्यान्यपार्श्वे यकृति प्रदुष्टे ज्ञेयं यकृद्दा-
ल्युदरं तदेव ॥

अर्थ- दहने तरफ जो यकृत् कहिये कलेजा है वो दुष्ट कहिये रोग युक्त होने से प्लीहोदर के समान उदर होय उसको· यकृद्दाल्युदर कहते हैं (१ दोषों करके यकृत्त का भेद होय है इसी से यकृद्दाल्युदर कहते हैं ॥

इसमें दोषों का संबंध कहे·

उदावर्त्तरुजानाहैर्मोहतृड्दहनज्वरैः । गौरवा
रुचिकाठिन्यैर्विद्यात्तत्रमलान्क्रमात्

अर्थ- उदावर्त्त· शूल· अफरा· इनसें वायु + मोह· प्यास· ज्व र· इनसे + और भारीपना· अरुचि· कठिनता इनसें कफ + ऐसे क्रम पूर्वक दोषों का संबंध जानना ॥

बद्धगुदोदर के लक्षण

यस्यांत्रमन्नैरुपलेपिभिर्वा बालाश्मभिर्वापि
हितं यथावत् । संचीयते तस्य मलः सदोषः
शनैः शनैः संकरवच्च नाड्याम्

१ यकृद्दालयति दारयति भेदयतीति यकृद्दाल्युदरम् ॥

निरुध्यतेतस्यगुदेपुरीषंनिरेतिकृच्छ्रादपि

चाल्पमल्पम् । हृन्नाभिमध्येपरिवृद्धिमेति

तस्योदरंबद्धगुदंवदन्ति

अर्थ- जिस पुरुषकी आंत-उपलेपकहिये गाढे अन्न करके (शाकादिक) अथवा वालू तथा वारीक पत्थरके टुकडेक के बद्ध होजाय उस पुरुषका दोष युक्त मल धीरे धीरे आंतडी के नली में होकर जैसे बुहारी से भारा तृण धूर आदि क्रम से बढै है उसी प्रकार बढे और वह मल बडे कष्ट से गुदा द्वारा थोडा थोडा निकले - जब मलका निकलना बंद होजाय तब मल दोषों करके गुदा सें ऊपर आवै - इसीसें उदर बढे है - अर्थात् हृदय - और नाभि के मध्य अन्न पाकस्थान की बृद्धी होय - इसी सें इस उदरको बद्धगुदोदर कहते हैं अथवा गुदा के ऊपर आंतों को वद्ध होने सै बद्ध गुद कहते हैं - यह (चरक) का मत है ॥

क्षतोदरके लक्षण

शल्यंतथान्नोपहितंयदंत्रंभुक्तंभिनत्यागतमन्यथावा ॥ तस्मात्स्रुतोऽन्त्रात्सलिलप्रकाशः स्रावःस्रवेद्वैगुदतस्तुभूयः । नाभेरधश्चोदरमेति वृद्धिंनिस्तुद्यतेदाल्यतिचातिमात्रम् ॥ एतत्परिस्राव्युदरंप्रदिष्टं ॥

अर्थ- कांटा - धूल - आदि अन्न के साथ मिलकर पेट - में चलाजाय अर्थात् पक्काशय में बिलोम (टेढातिरछा) चलाजाय - तब आंतों को काटे और सीधा जायतो नहीं काटे अथवा जँभाई अति अशन करने सें अर्थात् रोकने से आंत फटजाय सो (चरकमें -) लिखा भी है उन फटे आंतों

में गलित पानी के समान स्राव पुनः गुदाके मार्ग होकर झरै· नाभिके नीचे का भाग बढ़े· नोचने कीसी तथा भेद (चीरने) कीसी पीड़ा से अत्यन्त व्यथित होय-इसक्षतोदरको ग्रन्थांतरमें परिस्रावि उदर कहते हैं· और इसीको· छिद्रोदर कहते हैं यह· गयदास का मत है॥

जलोदरकीउत्पत्तिसह लक्षण

दकोदरंकीर्त्तयतोनिबोध॥ यःस्नेहपीतोप्यनुवासितोवा वांतोविरिक्तोऽप्यथवा निरूढः॥ पिबेज्जलंशीतलमाशुतस्य स्रोतांसिदूष्यन्तिहितद्वहानि॥ स्नेहोपलिप्तेष्वथवापितेषुदकोदरंपूर्ववदभ्युपैति स्निग्धंमहत्तत्परिवृद्धनाभि समाततंपूर्णमिवांबुनाच॥ यथादृतिःक्षुभ्यतिकंपतेच शब्दायतेचापिदकोदरंतत्।

अर्थ- अब जलोदर कैसे होय है उसको कहते हैं जिसने· स्नेह (घृततैलादि) पान करा होय अथवा अनुवासनवस्तिकरी हो·वमन करी हो-अथवादस्तकरे हों·अथवा निरूह बस्तिकरी होय· ऐसा पुरुष शीतल जल पीवै तब उसकी जल बहनेवाली नसों के मार्ग तत्काल दुष्ट होय है वे उदक बहने वाले स्रोत (मार्ग) स्नेह सें उपलिप्त (चीकने) होने सें पूर्व वत्

१ शर्करा तृण लोष्टा स्थिकंटकै रन्न संयुतैः भिद्येतान्त्रंयदाभुक्तैर्जृंभवात्यशने नवा इति॥

(अर्थात् अन्नरस उपस्नेह न्याय करके अर्थात् इन्को बाहर लायकर उदर को उत्पन्न करे) जलोदर होय है · उसमें चिकनापन दीखै - ऊंचा होय - नाभि के पास बहुत ऊंचा होय - चारों ओर तनासा मालूम होय - पानी की पोट भरीसी होय - जैसी पानी सें भरी परवाल में जल हले है उसी प्रकार हले - गुड़ुशब्दकरे कांपे - इन्को · (जलोदर) अर्थात् जलंधर कहते हैं · ॥

साध्यासाध्यविचार

जन्मनैवोदरंसर्वंप्रायःकृच्छ्रतमंविदुः ॥
बलिनस्तदजातांबुयत्नसाध्यंनवोत्थितम् ·

अर्थ सर्व प्रकार के उदर जन्म सैंही प्राय अत्यन्त कष्टसाध्य होते हैं - बलवान् पुरुष के नवीन प्रगट भया हो और उसें पानी नहीं प्रगट भया हो ऐसा बड़े यत्न से साध्य होय · पानी नहीं प्रगट भया हो ऐसे उदर के लक्षण चरक में कहे हैं ॥

अशोथमरुणाभासंसशब्दंनातिभारिकम् । सदागुड़गुड़ायंतंशिराजालगवाक्षितम् । नाभिंविष्टभ्यपायौतुवेगंकृत्वाप्रणश्यति । हृद्वंक्षणकटीनाभिगुदंप्रत्येकशूलिनः कर्कशस्तजतोपाननातिमन्देचपावके लौल्यस्याचिरमेवास्यमूत्रेऽल्पेसंहतेविशि अजातोदकमित्येतैर्युक्तंविज्ञायलक्षणैः

जातोदक के लक्षण भी चरक में · इस प्रकार के कहे हैं सो लिखते हैं

यथा

पयपूर्णोदृतिरिवक्षोभशब्दकरंमृदु । अभ्यक्तशिरंभूतंनितान्तमुदरंमहत् । आ

लस्यमास्यवैरस्यंमूत्रंवहुशकृत्स्रुतं। जा
तोदकस्यलिंगंस्यात्मंदोऽग्निः पांडुतापिच
इति
पक्षाद्बद्धगुदंतूर्ध्वं सर्वंजातोदकंतथा। प्रा
यांभवत्यभावायच्छिद्रांत्रंचोदरंनृणाम्

अर्थ- बद्ध गुदोदर पंधरै दिवस के पिछाड़ी असाध्य होय है उसी प्रकार सब प्रकार के उदर पानी उत्पन्न होने सैं नाशकारक होय है- और छिद्रांत्रोदर ए प्राय: नाशक होय है- कदाचित् शल्य अथवा शस्त्र चिकित्सा जैसी होनी चाहिये ऐसी होय तो उदक (पानी) प्रगट भया उदर रोग- छिद्रांत्र- अथवा बद्धगुदसाध्य होय है ये (प्राय:) इस पद सैं सूचना करी-

असाध्यलक्षण

शूनाक्षंकुटिलोपस्थमुपक्लिन्नतनुत्वचम्।
वलशोणितमांसाग्निपरिक्षीणंचवर्जयेत् ÷

अर्थ- जिस उदर रोगी के- नेत्रों पर सूजन होय- लिंग टेढा हो गया हो- पेट की त्वचा गीली तथा पतली हो गई होय- बल- रुधिर मांस- और अग्नि ए जिस्के क्षीण होगये हों- ऐसा रोगी त्याज्य है॥

दूसरे असाध्य लक्षण

पार्श्वभंगान्नविद्वेषशोथातीसारपीडितम्।
विरिक्तंचाप्युदरिणंपूर्यमाणंविवर्जयेत् ÷।

इतिउदरनिदान

अर्थ- पार्श्वभंग (पसरिया में पीड़ा) अन्न में अरुचि- शोथ- अतिसार- इन्सै पीड़ित और दस्त कराने सैं जिस्का पेट फेर पानी सैं भर जाय- ऐसा उदर रोगी को वैद्य त्यागदेय- ÷ इतिश्रीदत्तरामकृत माथुरी टीकायां उदररोग समाप्तम्॥ ÷ शुभम्॥

शोथकीसंप्राप्ति

रक्तंपित्तकफान्वायुर्दुष्टोदुष्टान्वहिःशिराः
नीत्वारुद्धगतिस्तैर्हिकुर्यात्वङ्मांससंश्रयम्
सोत्सेधंसंहतंशोथंतमाहुर्निचयादतः ॥ १ ॥

अर्थ- कुपित भई बायु- स्वकारण सैं दुष्टभयेरक्त पित्त कफ को वाह्य शिरा (वाहरकी नाड़ी न्में प्राप्त हो) तब उन्कोगति बंद करैं इसी सैं वह पवन त्वचा- और मांस इन्के आश्रय सैं सूजन उत्पन्न करे- वह सूजन ऊंची- और कठिन होय - इस्को रक्त सहित- त्रिदोषों का संबंध है- अर्थात् सन्निपातात्मक ऐसे कहते हैं (त्वङ्मांससंश्रयम्) इस पदसै- व्रण शोथ जो शोथ का भेद है सो दिखाया - क्योंकि आठ व्रण वस्तु न्में ब्रण का संभव होने सें सो कहा है भी है- ((त्वङ् मांस- सिरास्नायु अस्थिसन्धि कोष्ठ मर्माणि इति अष्टौ ब्रण वस्तूनिभवंति)) इति ॥

सर्वंहेतुविशेषैस्तुरूपभेदान्नवात्मकम् ॥
दोषैःपृथक्द्वयेःसर्वैरभिघाताद्विषादपि २

अर्थ- वो सूजन कारण भेद सैं कार्य भेद होकर ९ नौ प्रकार की होय है **यथा**- अलग अलग दोषों सें ३ द्वंद्वज ३ सन्निपातज १ अभिघातज १ और बिष सै १ ऐसे सब मिलकर नौ प्रकार का शोथ रोग भया- ॥ २ ॥

निदान

शुद्धामयाभक्तकृशावलानां क्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवादध्याममृच्छाकविरोधिपिष्टगरोपसृष्टान्ननिषेवणंच । अर्शांस्यचेष्टाव

पुषोत्थशुद्धिर्मर्माभिघातोविषमाप्रसूतिः
मिथ्योपचारः प्रतिकर्मणांच निजस्यहेतुः
श्वयथोप्रदिष्टः २

अर्थ- वमन आदि· ज्वरादिक · अभोजन ·(विगुणभोजन) इन्सैं जो कृश और बलहीन मनुष्यों के ·क्षीरादिक का सेवन सूजने का कारण होय है · तहां नोन · खटाई · तीखी · उष्ण · भारी वस्तु में दही · अपक्व · मद्दी · निसिद्धसाग · बिरुद्ध (क्षीरमत्स्यादिक) संयोग जविष से दूषित भया अन्न के सेवन करने से · बवासीर · दंड कसरत के नकरने सैं · शोधन के योग्य दोषों के नशोधने सैं हृदयादि मर्मों के दोष जन्म उपघात सैं कच्चा गर्भ पात होना बिषम प्रसूति · वमनादि पंच कर्मों का मिथ्या योग ये सर्व दोषज सूजने का कारण कहा है ॥

पूर्वरूप

तत्पूर्वरूपंक्षवथुः शिरायामो ऽ ङ्गगौरवम् ३

अर्थ संताप · नसोंका तनने के समान पीड़ा देह भारी · ए लक्षण सूजन होने वाले पुरुष के होते हैं ॥

सामान्यलक्षण

सगौरवंस्यादनवस्थितत्वंसोत्सेधमूष्माथ-
शिरातनुत्वं । सलोमहर्षश्चविवर्णताच सा
मान्यलिंगंश्वयथोःप्रदिष्टम् ६

अर्थ- अंग भारी हो - चित्त में स्वस्थता न होना - ऊंची सूजन और दाह नस पतली होजाय - रोमांच - और देह का रंग बदल जाय - ये सूजन के सामान्य लक्षण हैं ॥

वातजशोथकेलक्षण

चलस्तनुत्वक्परुषोऽरुणोऽसितः ससुप्ति
हर्षार्तियुतोऽनिमित्ततः । प्रशाम्यति प्रोन्न-
मति प्रपीडितो दिवाबली स्यात् श्वयथुः
समीरणात् ॥ ७ ॥

अर्थ- बादी से सूजन- चंचल- त्वचा पतली होजाय- कठोर हो- लाल - काली- तथा त्वचा शून्य पड़जाय- भिन्न भिन्न बेदना हो - अथवा- रोमांच- और पीड़ा हो - कदाचित् निमित्त - के बिना शांति होजाय- उससूजन के दाबने सैं तत्क्षण ऊपर को उठ आवे- दिन में जोर बहुत करे ॥ ७ ॥

पित्तजशोथकेलक्षण

मृदुः सगंधोऽसितपीतरागवान्भ्रमज्वरस्वे
दतृषामदान्वितः । यउष्यते स्पर्शरुगक्षिरागकृत्
सपित्तशोथो भृशदाहपाकवान् ८

अर्थ- पित्त की सूजन- नरम- कुछ दुर्गंध युक्त- काली- पीली- और लाल होय- उसके होने से भ्रम- ज्वर- पसीना- प्यास- और मस्तपना ए लक्षण होंय- दाह होय- हाथ लगाने सै दूखै- इसी सै नेत्र लालहो- उसमें अत्यन्त दाह तथा पाक होय- ॥८॥

कफजशोथकेलक्षण

गुरुः स्थिरः पांडुररोचकान्वितः प्रसेकनिद्राव
मिवन्हिमांद्यकृत् । सकृच्छ्रजन्मप्रशमोनिपीडि
तो नचोन्नमेद्रात्रिबलीकफात्मकः ॥ ९ ॥

अर्थ- कफकी सूजन- भारी- स्थिर- पीली- होय है- इसके योग से अन्नद्वेष- लारका गिरना- निद्रा- वमन- मन्दाग्नि एलक्ष

ण होय · तथा इस सूजनकी उत्पत्ति और नाश बहुत काल में होय· इसको दबाने से ऊपर को नहीं उठे रात्रि में इस्की प्रबलता हो ॥८॥

द्वंद्वजऔरसंनिपातजशोथकेलक्षण

निदानाकृतिसंसर्गाच्छ्वयथुःस्याद्द्विदोषजः
सर्वाकृतिःसन्निपाताच्छोथोव्यामिश्रलक्षणः

अर्थ-दोदोषों के लक्षण और कारण एकत्र मिलनेसें द्वंद्वजशोथ जाननो· और सन्निपात सें सूजन होय-उसमें बातादिकतीनों दोषों के लक्षण होते हैं ॥

अभिघातजशोथकेलक्ष·

अभिघातेनशस्त्रादिछेदभेदक्षतादिभिः। हिमानिलोदध्यनिलैर्भल्लातकपिकच्छुजैः ११ र
सःशूकैश्चसंस्पर्शाच्छ्वयथुःस्याद्विसर्पवान्।
भृशोष्मालोहिताभासःप्रायशःपित्तलक्षणः १२

अर्थ- काष्ठादिक की चोट लगनेसे· शस्त्रादिक से छेदन होनेसे पत्थर आदि से फूटने से अथवा घाव के होने सें आदि शब्द से लकड़ी आदि प्रहार से शीतल पवन लगने से · समुद्र की पवन लगने सें भिलायें के तेल लगाने सें और· केंचकी फलीके स्पर्श होने से· जो सूजन होय सो चारों तरफ फैल जाय उसमें · अत्यन्त दाह होय-उस्का रंग लाल होय · और विशेष करके इसमें पित्त के लक्षण होते हैं ॥१२॥

बिषजशोथकेलक्षण

बिषजःसविषप्राणिपरिसर्पणमूत्रणात्॥
दंष्ट्रादंतनखाघातादबिषप्राणिनामपि १३।

विण्मूत्रशुक्रोपहतमलवद्वस्त्रशंकरात् ॥
विषवृक्षानिलस्पर्शाद्गरयोगावचूर्णनात् २४
मृदुश्चलोऽबलंबोच शीघ्रोदाहरुजाकरः ॥

अर्थ- बिष वाले प्राणीन्के अंग पर चलने सें अथवा मूतने सै अथवा निर्बिष (बिषरहित मनुष्यादिक) प्राणीनके डाढ-दांत- नख लगने से अथवा सविष प्राणी का विष्टा-मूत्र-शुक्र इन्से भरा- अथवा मलिन- वस्त्र अंग में लगने से अथवा विषवृक्षकीहवाके लगने सें अथवा संयोगज बिषका अंग में लगने से जो सूजन उत्पन्न होय सो विषज कहाती है- वो सूजन- नरम- चंचल- भीतर प्रवेश करने वाली- जल्दी प्रघटहोने वाली दाह- और पीड़ा करने वाली होय है ॥

जिसजिसठिकानेदोषसूजनउत्पन्नकरेंउन्कोकहते हैं

दोषाः श्वयथुमूर्ध्वंहिकुर्वन्त्यामाशयास्थिताः
पक्वाशयस्थामध्येतुवर्चस्थानगतास्त्वधः २५
कृत्स्नदेहमनुप्राप्ताःकुर्युःसर्वसरंतथा ॥

अर्थ- आमाशय स्थित दोष- ऊपर (उरस्थानादि केमें) सूजन को करे- पक्वाशय में स्थित दोष मध्य (कहिये उर और पक्वाशय इन दोनों के बीच में सूजन करे- मल स्थान गत दोष नीचे के स्थान (पैर आदि) में सूजन करै- और सर्व देह में दोष स्थित होने से सब देह में सूजन को करते हैं ॥

सूजनकेकृच्छ्रादिभेद

योमध्यदेशेश्वयथुःसकष्टः सर्वगश्चयःअ
र्धांऽगेऽरिष्टभूतःस्याद्यश्चोर्ध्वेपरिसर्पति २७

अर्थ- जो सूजन मध्य देह में तथा सब देह में होय सो कष्ट साध्य है और सूजन नीचे के अंग में प्रगट हो ऊपर को चढ़े वो असाध्य है

असाध्यलक्षण

श्वासः पिपासाछर्दिश्च दौर्बल्यं ज्वरएवच ॥
यस्यचान्नेरुचिर्नास्तिशोथिनंपरिवर्जयेत् १८

अर्थ- स्वास· प्यास· वमन· दुर्बलता· ज्वर· ए लक्षण होंय औरजिस्को अन्न में अरुचि होय ऐसे सूजन वाले रोगी को वैद्य त्यागदे ॥

अनन्योपद्रवकृतः शोथः पादसमुत्थितः ॥
पुरुषंहंतिनारींतुमुखजोगुह्यजोद्वयम् १९ ॥
नवोऽनुपद्रवः शोथः साध्योऽसाध्यःपुरेरितः

इतिशोथनिदानम्

अर्थ- अन्यरोगों के उपद्रव सें प्रगट न भयी हो ऐसी सूजन पहिले पैरों में उत्पन्न हो फिर मुख आदि ऊपर के स्थानों में प्राप्त होय· (उस्को उल्टी सूजन कहते हैं) वह पुरुष का नाश करे और जो प्रथम मुख पर होय कर पीछें पैरों पै उतरे वो सूजन स्त्रीन् को घातक है और जो प्रथम गुदा में उत्पन्न होकर सबदेह में - व्याप्त हो वो स्त्री· पुरुष दोनों को नाशक हैं

नवीन· और उपद्रव रहित जो सूजन होय वह साध्य है और (अधोंगेरिष्टसंभूत) इत्यादिश्लोक मैं कही हुई सूजन असाध्य है

शोथकेउपद्रव

छर्दिस्तृष्णारुचिःश्वासोज्वरोऽतीसारएवच
सप्तकोयंसदौर्बल्यः शोथोपद्रवसंग्रहः २०।

अर्थ- छर्दि· प्यास· अरुचि· श्वास· ज्वर· अतिसार· दुर्बलता ए सात सूजन के उपद्रव हैं यह चरक में लिखा है ॥

इतिमाथुरीटीकायांशोथरोगनिदानम्।

अंडवृद्धिनिदान

सम्प्राप्ति

क्रुद्धोऽन्वूर्ध्वगतिर्वायुः शोथशूलकरश्चरन्
मुष्कौवंक्षणतः प्राप्यफलकोशाभिवाहिनीः
प्रपीड्यधमनीर्वृद्धिंकरोत्ति फलकोशयोः

अर्थ- कुपित भई अधोगमन शील (नीचे विचरनेवाली) तथा सूजन और शूल उत्पन्न करने वाली वायू·कूख में संचार करती हुई·अंडकोश और वंक्षण (अंडकोश औरजंघाकीसंधि) में अंड में आयकर अंडकी वृद्धि और कोश इन्के बहनेवाली धमनी (नाड़ी) न्कोदुष्टकर अंडकी (दोनोंअंडकी अथवा एक औरके अंडकी) वृद्धिकरै ॥

दोषास्त्रमेदोमूत्रांत्रैः सवृद्धिः सप्तधागदः।
मूत्रांत्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तु केवलम् ॥

अर्थ- वह वृद्धि रोग तीनों दोषोंसेति ३ रुधिरसे १ मेद १ मूत्र १ और आंतों से १ सात प्रकार का है·मूत्रज और-अंत्रजवृद्धि ए दोनों वायू से होती हैं· परन्तु इनदोनों का निदान औरचिकित्सा में भेद होने सैं·पृथक् ग्रहण करा है·सो लिखावी है (मूत्रांत्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तु केवलमिति)

वात·पित्त·कफ·औरमेद इन्सै प्रगट भईवृद्धिकेलक्षण

वातपूर्णादृतिस्पर्शोरूक्षोवातादहेतुरुक्
कृष्णस्फोटावृतः पित्तवृद्धिलिंगश्चपित्तजः
कफवन्मेदसोवृद्धिर्मृदुस्तालफलोपमः॥

अर्थ- वात से भरी (मसक) जैसी हाथ के लगाने से मालूम होय· ऐसा मालूम होय · रूक्ष और बिना कारण दुखने लगे · वो वात की अंड वृद्धि जाननी ॥

काले फोडान्सें व्याप्त तथा जिसमें पित्त वृद्धि के लक्षण मिलते होंय उस अंड वृद्धि को पित्त की तथा रक्त की कहते हैं ·

मेद से जो अंडवृद्धि होय है वो कफ की वृद्धि के समानमृदु (नरम) तथाताल फल के समानहो अर्थात् पीले रंगकी और गोल होय है ॥

तथापित्तकीअंडवृद्धिके·

पक्वोदुम्बरसङ्काशः पित्ताद्दाहोष्मपाकवान्

अर्थ- पित्त की अंड वृद्धि पके गूलर के समान होय है तथा दाह और गरमी· तथा पकने वाली होय है ॥

कफकीअंडवृद्धिकेलक्षण

कफाच्छीतोगुरुःस्निग्धःकंडूमान्कठिनोल्परुक्

अर्थ- कफ से अंड वृद्धि· शीतल·भारी·चिकनी· तथा खुजली युक्त· कठिन और थोड़ी पीड़ा युक्त होय है ॥

मूत्रवृद्धिकेलक्षण

मूत्रधारणशीलस्यमूत्रजःसचगच्छति।
अंभोभिःपूर्णदृतिवत्क्षोभंयातिसरुङ्मृदुः
मूत्रकृच्छ्रमधःस्याच्चचलयन्फलकोशयोः

अर्थ- मूत्र को रोकने का जिस्को अभ्यास होय उस्के यह रोग होय है· वो पुरुष जब चले तब पानी से भरी परवाल के समान डबक डबक हले· तथा बजे· और उसमें पीड़ा थोड़ी होय· हाथ के छूने सें नरम मालूम होय· उस्मे मूत्रकृच्छ्र कोसी पीड़ा होय· फल (और· कोश दोनो इधर उधर चलायमान होंय ॥

अंत्रवृद्धिकेलक्षण

वातकोपिभिराहारैः शीततोयावगाहनैः। धारणेरणभाराध्वविषमांगप्रवर्त्तनैः॥ क्षोभणैः क्षुभितोऽन्यैश्चक्षुद्रांत्रावयवंयदापवनोविगुणीकृत्यस्वनिवेशादधोनयेत्। कुर्याद्वंक्षणसंधिस्थोग्रंथ्याभंश्वयथुंतदा

अर्थ- बात कोप कारक आहार के सेवन करने से· शीतल जल में प्रवेश करके स्नान करने में उपस्थित मूत्रादि वेगों के धारण अप्राप्तवेग (अर्थात् करने की इच्छा न होय) उस्को बलपूर्वक प्रेरणा करने से· भारी बोझ के उठाने से· अति मार्ग के चलने सें· अंगों की बिषम चेष्टा (अर्थात् टेढा तिरछा अंग करके गमनादिक करना) बलवान् से बैर करना· कठिन धनुष का ईंचना· इत्यादि· ऐसेही और कारणों सें· कुपितभई जो वायु सो छोटी आंतों के अवयवों के एक देश को बिगाड़कर अर्थात् उस्का संकोचकर अपने रहने के स्थान से उस्को नीचे ले जाय तब बंक्षण संधिमें स्थित होकर उस स्थान में गांठ के समान सूजन को प्रगट करे ॥

इस्की औषधनकर्नेका परिणाम

उपेक्ष्यमाणस्यचमुष्कवृद्धिमाध्मानरुक्स्तंभवतींसवायुः। प्रपीडितोंऽतःस्वनवान्प्रयातिप्रध्मापयन्नेतिपुनश्चमुक्तः

अर्थ- जिस अंडबृद्धि में· अफरा होय· पीड़ाहोय· जड़ता होय· उस्की· उपेक्षा करने से (अर्थात् औषधनकरने सें) तथा अंडकोशों के दाबने से जो बायु कों कों शब्द करे तथा

हाथ के दाबने से वायु ऊपर को चढ जाय· और छोड़ने से फिर नीचे उतर कर अंडों को फूलाय दे ॥ सहींय हैं ॥

असाध्यलक्षण

क्षुद्रांत्रावयवान्श्लेष्मामुष्कयोर्वातसंचयात्। अंत्रवृद्धिरसाध्योऽयंबातवृद्धिसमाकृतिः

अर्थ- छोटी आंतों के अवयव (अंगवाला) कफ बात के संचय सें मुष्क के बिषे प्राप्त होय· तथा जिस्में बात के लक्षण कहे वो सब मिलते होंय· वो अंड वृद्धि असाध्य है (वर्ध्म) अर्थात् बद रोग का निदान ग्रन्थान्तर में लिखा है यथा-

वर्ध्मरोगनिदान

अत्यभिष्यंदिगुर्वामसेवनान्निचयंगतः। कफोलिग्रन्थिवच्छोफंदोषोवंक्षणसन्धिषु।ज्वरशूलांगदाहांत्यंतंवर्ध्ममितिनिर्दिशेत्।यस्यपूर्वंफिरंगाख्यारोगोभूत्वाप्रशाम्यति।तस्यजंतोर्वर्ध्मरोगमित्युक्तःसुश्रुतादिभिः।तथाष्णबातजुष्टस्यभेद्रव्रणयुतस्यच।तस्य पुंसोवर्ध्मरोगंप्रवदन्तिभिषग्वराः॥

अर्थ- अभिष्यंदि बस्तु के खाने सें· भारी अन्न के खाने सें- कच्चे अन्न के खाने सें वृद्धि को प्राप्त भए दोष अथवा (अत्यभिष्यंदिगुर्वाम) इस जगे (अत्यंभिष्यंदिगुर्वन्नशुष्कपूज्याभिषाशनात्) ऐसा वी पाठ है अर्थात्· अभिष्यंदि· भारी अन्न के खाने से तथा सूखा और पूज्य कहिये गौ आदि के मांस खाने सें दोष (वात· पित्त· कफ·) कुपित होकर वंक्षण की सन्धि मैं अर्थात् वस्तिस्थान के समीप जिन्को नरे कहते हैं। उन्में सूजन को प्रगट करै उस सूजन के होने सैं ज्वर होय· तथा

सूजन में पीड़ा होय· अंगो में अत्यंत दाह होय· जिस मनुष्यके पहिले फिरंग (आतशक) का रोग होकर शांति होगया होय ·उस्के यह बदका रोग होय है · अथवा गरमी वाले पुरुषके लिंगमें व्रण (घाव होय उस्के यह बदरोग होय है ॥

इति अंडवृद्धिनिदान समाप्तम्

गलगंड निदान

निबद्धः श्वयथुर्यस्य मुष्कवल्लंबते गले। महान्वा यदि वा ह्रस्वो गलगंडं तमादिशेत् १।

अर्थ- जिस्के गलेमें अनुबंध युक्त बड़ी· अथवा छोटी अंडकोश के समान सूजन होय उस्को गलगंड कहते हैं ॥

गलगंडकी संप्राप्ति

वातः कफश्चापि गले प्रदुष्टौ मन्ये समाश्रित्य तथैव मेदः। कुर्वन्ति गंडं क्रमशः स्वलिंगैः समन्वितं तं गलगंडमाहुः २ ॥

अर्थ- गले में दुष्ट भये वातकफ और उसी प्रकार मेद ये गले की जो दोनों मन्या नाड़ी उन्का आश्रय लेकर क्रम से आप आपने लक्षण संयुक्त ऐसा गंड (गोला) उत्पन्न करे है उस्को गलगंड रोग कहते हैं ये रोग वात· कफ· और मेद इन कारणों से तीन प्रकार का है ये रोग· अपनेही स्वभाव सें पैत्तिक नहीं होय है जैसें चातुर्थिक ज्वर अपने प्रभाव सें जंघा में कफ का और मस्तक में वात का प्रथम आना है इसमें भी पित्त का नहीं होय है उसी प्रकार इस रोगमेंभी जानो ॥

वातिकगलगंडके लक्ष·

तोदान्वितः कृष्णशिरावनद्धः श्यावोऽरु

णोवापवनात्मकस्तु । पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्धि पाकोयदृच्छयापाकमियात्कदाचित् । वैर स्यमास्यस्यचतस्यजन्तोर्भवेत्तथातालुगल प्रशोषः॥

अर्थ- बातकी गलगंडकाली नसों में व्याप्त होय और उस्में सु ई के चुभाने कीसी पीड़ा होय उस्का रंग काला और लाल होय त था कठोर होय· बहुत काल में बढ़े तथा पके नहीं· और जो प के तो कदा चित् यदृच्छा पूर्वक पके उस रोगी के मुख में बिरस ता होय तथा तालुव गले में शोष होय·॥

कफजगलगंडकेलक्षण

स्थिरःसवर्णोगुरुरुग्रकंडूःशीतोमहांश्चापिक फात्मकस्तु । चिराभिवृद्धिंभजतेचिराद्वाप्रपच्य तेमन्दरुजःकदाचित् । माधुर्यमास्यस्यचत स्यजंतोर्भवेत्तथातालुगलप्रलेपः

अर्थ- कफकी गलगंड स्थिर· त्वचा के रंग के समान वर्ण हो य · भारी हो· खुजाल बहुत चले · शीतल· और बड़ी होय है वह बहुत दिन में बढ़े और बहुत काल में पके पीड़ा थोड़ी होय· मुख में मिठास होय· तथा गले में और तालुए में कफ ल्हिसासा होय·॥

मेदजगलगंडकेलक्ष·

स्निग्धोगुरुःपांडुरनिष्टगंधोमेदोभवःस्व- ल्परुजोऽतिकंडूः । प्रलंबतेऽलाबुवदल्प मूलोदेहानुरूपक्षयवृद्धियुक्तः । स्निग्धा- स्यतातस्यभवेच्चजंतोर्गलेऽनुशब्दंकुरु

तेचनित्यम् ॥

अर्थ- मेद से प्रगट गलगंड चिकना होय. भारी. पीलावर्ण दुर्गंध युक्त मंद पीड़ा करनेवाला. और अत्यन्त खुजली चले. वो तुंबी फल के समान लंबा होय. उस्की जड़ छोटी होय. और देहानुरूप क्षय और वृद्धि इन्सै युक्त होय. अर्थात् देहके क्षीण होने से क्षीण होजाय- देहके बढ़ने सैं बढ़जाय. उस्का मुख तेल लगा होय. औसा चिकना होय. और बोलते समय गले से दोशब्द निकलैं ॥

असाध्यलक्षण

कृच्छ्राच्छ्वसन्तंमृदुसर्वगात्रंसंवत्सरातीत मरोचकार्त्तं ॥ क्षीणंचवैद्योगलगंडनुर्यभि न्नस्वरंचापिविवर्जयेत् ॥

अर्थ- बडे कष्ट सै श्वास लेने वाला. नरम शरीर वाला. जिस्के गलगंड होकर वर्षदिन व्यतीत होगया हो. अरुचि सें पीड़ित क्षीण होगया होय. और स्वरभेद युक्त औसा गलगंड पीड़ित मनुष्य को वैद्य त्याग दे ॥ इति गलगंडनिदानम् ॥

गंडमालानिदान

कर्कंधुकोलामलकप्रमाणैः कक्षांसम न्यागलवंक्षणेषु । मेदःकफाभ्यांचिरमंद पाकैःस्याद्गंडमालाबहुभिस्तुगंडैः

अर्थ- मेद और कफ इन्सैं प्रगट भया कूख. कंधा. नाड़के पिछाड़ी मन्या नाड़ी में गले में और वंक्षण (जानुमेढ्र संधि) इन ठिकाने छोट बेर के बराबर- बड़े बेर के समान. आमले के समान औसी अनेक प्रकार की गंड होतीहैंवे बहुत दिनमेंहो

ले होले पके-उन्को (गंडमाला) कहते हैं ॥

अपचीकेलक्षण

तेग्रंथयः केचिदवाप्तपाकाः स्रवन्तिनश्यं
तिभवन्तिचान्ये । कालानुबंधंचिरमादधा
तिसैवापचीतिप्रवदंतिकेचित्

अर्थ- अब गंडमाला काभेद अपची है उसको कहते हैं ÷ पूर्वोक्त गंडमाला की गांठ पाक होने सें स्रवे-कोई नष्ट होजाय-दूसरी नवीन उठे ऐसी पीड़ा बहुत दिन रहै उसको कोई अ-पची ऐसें कहते हैं ॥

असाध्यऔरसाध्यलक्ष०

साध्यास्मृतापीनसपार्श्वशूलकासज्वर
च्छर्दियुतानसाध्या । इत्यपची निदानम् ॥

अर्थ- पूर्वोक्त अपची रोग साध्य है और उसमें पीनस होय-पसवाड़ों में शूल-खांसी-ज्वर-बमन-ए होंय तो वो अपची अ-साध्य है ॥ ॥ ÷ इतिअपचीनिदानम् ÷ ॥ ॥

ग्रंथिनिदान

वातादयोमांसमसृक्प्रदुष्टाः संदूष्यमेद
स्तथाशिराश्च ॥ वृत्तोन्नतंविग्रथितंतु शो
थंकुर्वंत्यतोग्रंथिरितिप्रदिष्टः

अर्थ- अत्यन्त दुष्टभए वातादि दोष-मांस-रुधिर-और मेद-उसी प्रकार शिरा (नस) - इन्को दुष्टकर (इस जगेदुष्ट-का अर्थ वृद्धि करना चाहिये-क्षयरूप न करना चाहिये का-रण इस्का यह है कि क्षीण विकारों की सामर्थ्य रोग करनेकी नहीं होती है) गोल-ऊंची-गांठ के समान अथवा कठि

न·सूजन को उत्पन्न करे उस्को ग्रंथि (गाँठ) ऐसे कहते हैं

वातजग्रंथिकेलक्षण

आयम्यतेवृश्च्यतितुद्यतेच प्रत्यस्यतेमथ्य
तिभिद्यतेच । कृष्णोगुरुर्बस्तिरिवाततश्च
भिन्नःस्रवेच्चानिलजोऽस्रमच्छम्·

अर्थ– बादी की गाँठ· तनेके समान करड़ी मालूम हो· छीलने के समान मालूम हो· सुई चुभने कीसी पीड़ा होय· मानोगि· रा चाहती है· मथने की पीड़ा होय· फैरने कीसी पीड़ा होय काला वर्ण हो· नरम हो· वस्ति के समान चोड़ी होय· और उसके फूटने से स्वच्छ रुधिर निकले ॥

पित्तकीग्रंथिकेलक्षण

दंदह्यतेधूम्यतिचूष्यतेच पापच्यतेप्रज्व
लतीवचापि । रक्तःसपीतोऽप्यथवापिपि
त्ताद्भिन्नःस्रवेदुष्णमतीवचास्रम् ॥

अर्थ– पित्त की गांठ आग से भरे के समान अत्यन्त दाहक रे· आंखों से धूंआ निकलतासामालूम हो चुष्यते· कहियेमानों सिंगी लगायके कोई चूसे है· खार लगाने के सदृश पकामालूम होय· अग्नि के समान जलीसी मालूम होय·उस गाँठका रंगलाल अथवा उस्का रंग किंचित् पीला होय· और फूटने सें उसमें से दुष्ट रुधिर बहुत निकले· ॥

कफकीग्रंथिकेलक्ष·

शीतोविवर्णोऽल्परुजोतिकंडूः पाषाण
वत्संहननोपपन्नः। चिराभिवृद्धिश्चकफप्र-
कोपाद्भिन्नःस्रवेच्छुक्लघनंचपूयम् ॥

अर्थ- कफ की ग्रंथि (गांठ) शीतल· प्रकृति समान वर्ण (कोई किंचित् विवर्ण हो ऐसे कहते हैं· थोड़ी पीड़ा हो· अत्यंन्त खुजली चले· पत्थर के समान कठिन बडी होय· और चिरकाल में बढनेवाली· ऐसी होय· फूटने सें उसमें से सपेद गाढी राध निकले

मेदजग्रंथिकेलक्षण

शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिहानिः स्निग्धो महान्कंडुयुतोऽरुजश्च। मेदःकृतो गच्छति चात्र भिन्ने पिण्याकसर्पिःप्रतिमं तु मेदः।

अर्थ- मेद की ग्रंथि शरीर के बढ़ने सें बढ़े और शरीर के क्षीण होने सें क्षीण होजाय· चिकनी बड़ी खुजली युक्त· पीड़ारहित होय है· और जब वो फूटजाय तब उसमें सें तिलों के कल्क के समान· अथवा घृत के समान मेदा निकले ॥

शिराजग्रंथिकेलक्षण

व्यायामजातैरबलस्य तैस्तैराक्षिप्य वायुस्तु शिराप्रतानम्। संकुच्य संपीड्य विशोष्य चापि ग्रंथिं करोत्युन्नतमाशु वृत्तम्

अर्थ- निर्बल पुरुष शरीर को परिश्रम कारक कर्म करे तब वायु कुपित होकर शिरा के जाल को संकुचित कर एकत्र कर और सुखाय कर ऊंची गांठ को शीघ्र प्रगट करे है ॥

उसके साध्यासाध्यलक्षण

ग्रंथिः शिराजः सच कृच्छ्रसाध्यो भवेद्यदि स्यात्सरुजश्चलश्च। अरुक्स एवाप्यचलो महांश्च मर्मोत्थितश्चापि विवर्जनीयः॥ ॥

इति ग्रंथिनिदानम्

अर्थ- वह शिरा (कोहिंयनसकी) गांठ कृच्छ्र साध्य है· यदि वो

पीड़ा युक्त तथा चंचल होय तो वह गांठ साध्य है· और पीड़ारहित तथानिश्चल· वड़ी और मर्मस्थान में प्रगट भई होय तो वह असाध्य है उस्को वैद्य त्यागदे ॥ ✣ ॥ इतिग्रंथिनिदानसमाप्तं ॥ ✣

अर्बुदनिदान

संप्राप्ति

गात्रप्रदेशेक्कचिदेवदोषाः संमूर्च्छितामां समस्रक्प्रदूष्य । वृत्तंस्थिरंमन्दरुजंमहान्तमनल्पमूलंचिरवृद्धिपाकम् । कुर्वन्ति मांसोच्छ्रयमत्यगाधंतदर्बुदंशास्त्रविदोवदन्ति ॥

अर्थ- शरीर के किसी भाग में दुष्ट भये जो दोष सो मांसरुधिर को दुष्ट कर·गोल·स्थिर·मंद पीड़ा युक्त·यहग्रंथिरोग सेबड़ी होय है·बड़ी जिस्की जड़ होय· वहु काल में बढ़ने वालीतथा पकनेवाली ऐसी मांस की गांठ उठे उस्को वैद्य अर्बुद ऐसे कहते हैं ॥

वातेनापित्तेनकफेनचापिरक्तेनमांसेनच मेदसाच ॥ तज्जायतेतस्यचलक्षणानिग्रंथेःसमानानिसदाभवंति

अर्थ- वह अर्बुदरोग बादी सें· कफ सें· पित्त सें·रुधिर सें· मांससें· और मेद सें ऐसे छः प्रकार का है उस्के लक्षण· सर्वदा ग्रंथि के सदृश होते हैं ॥

रक्तार्बुदकेलक्षण·

दोषः प्रदुष्टोरुधिरंशिरास्तु संकुच्यसंपीड्य

ततोऽस्यपाकम् । स्रावमुन्नह्यतिमां सपिंडं मांसांकुरैराचितमाशुवृद्धं ॥ करोत्यजस्रं रुधिरप्रवृद्धिमसाध्यमेतद्रु धिरात्मकन्तु । रक्तक्षयोपद्रवपीड़ितत्वा त्पांडुर्भवेत्सोर्बुदपीडितस्तु

अर्थ- दुष्ट भए जो दोष सो नसों में रहे जो रुधिर उस्को संको च कर तथा पीड़ित कर मांसके गोलाको प्रगट करे वो यत्किंचि त् पकने वाला तथा कुछ स्राव युक्त हो और मांसांकुरसैं व्या प्त और शीघ्र बढनेवाला ऐसा होय है उसमें सैं रुधिर बहाक रे - यह रक्तार्बुद असाध्य है - वो रक्तार्बुद पीड़ित रोगी रक्तक्ष य के उपद्रवों करके पीड़ित होनेसे उस्का वर्ण पीला होजा- य ए रक्तार्बुद के लक्षण हैं ॥

मांसजार्बुदकीसंप्राप्ति

मुष्टिप्रहारादिभिरर्दितेंऽगेमांसं प्रदुष्टं जनयेद्धि शोथं ॥ अवेदनंस्निग्धमन न्यवर्णमपाकमश्मोपममप्रचाल्यम् ॥ प्रदुष्टमांसस्य नरस्य गाढ़मेतद्भवेन्मां सपरायणस्य ॥ मांसार्बुदंत्त्वेतदसा ध्यमुक्तं ॥

अर्थ- मुक्का आदिके लगने सैं अंगमें पीड़ा होय उस पीड़ा सै दुष्ट भया मांस सो सूजन उत्पन्न करे उस सूजन में पीड़ा नहीं हो य और वो चिकनी - देहके वर्ण होय - पके नहीं - पत्थर के समा न् कठिन - हले नहीं - ऐसी होय है जिस मनुष्य का मांस बिग ड़जाय - अथवा जो नित्य मांस को खाया करे उस्के यह अर्बुद रोग होय है यह मांसार्बुद असाध्य कहा है ॥

साध्यमें असाध्यप्रकार

साध्येष्वपीमानितुवर्जयेच्च ॥ संप्रस्रुतं
मर्मणियच्चजातं स्रोतःसुवायच्चभवेद
चाल्यम् ।

अर्थ- साध्यमें भी यह आगेका अर्बुदरोग वर्जित है- स्राव (झरे) और मर्मस्थान में प्रगट भया हो अथवा नासा आदि स्रोत (मार्ग) में प्रगट भई हो- और जो स्थिर होय- वो असाध्य है ॥

अध्यर्बुदलक्षण

यज्जायतेऽन्यत्खलुपूर्वजाते ज्ञेयंतदध्य
र्बुदमर्बुदज्ञैः ॥

अर्थ- पहिले जिस ठिकाने पर अर्बुद भया होय उसी ठिकाने पर दूसरा अर्बुद प्रगट होय उस्को अध्यर्बुद कहते हैं ॥

द्विरर्बुदकेलक्षण

यद्द्वंद्वजातंयुगपत्क्रमाद्वाद्विरर्बुदंतच्चभ
वेदसाध्यं ॥

अर्थ- एक काल में दो अर्बुद- अथवा एकके पिछाड़ी दूसरा अर्बुद क्रमसैं प्रगट होय उस्को द्विरर्बुद कहते हैं ये असाध्य है-

अर्बुदनपकनेकाकारण

नपाकमायांतिकफाधिकत्वान्मेदोबहु-
त्वाच्चविशेषतस्तु । दोषस्थिरत्वाद्ग्रथना
च्चतेषांसर्वार्बुदान्येवनिसर्गतस्तु

इति गलगंड- गंडमाला- अपची- ग्रन्थि-
अर्बुदनिदानम्

अर्थ- कफ अधिक होने सैं- अथवा विशेष करके मेद अ

धिक होनेसैं तथा दोषों के स्थिर होने में. अथवा दोषों के ग्रंथिरू
प होने सैं. सर्व प्रकारकी अर्बुद स्वभाव सैंही पके नहीं है ॥ ✤ ॥
✤ इति गलगंड. गंडमाला अपचीग्रंथि. अर्बुदनिदानसमाप्तम् ✤

श्लीपदनिदानकी संप्राप्ति

यः सज्वरोवंक्षणजोभृशार्त्तिः शोथोनृणां
पादगतः क्रमेण तत्श्लीपदंस्यात्करकर्ण
नेत्रशिश्नौष्ठनासास्वपिकेचिदाहुः १

अर्थ- जोसूजन प्रथम पहिले वंक्षण (रांग) में उत्पन्न होकर.
धीरे धीरे पैरों में आवे. और उसके साथ ज्वर भी होय इसरोग को
(श्लीपद) कहते हैं. यह श्लीपद. हाथ. कान. नेत्र. शिश्न. हो
ठ. नाक. इनमें भी होती है ऐसें कोई कहते हैं ॥ २॥

वातजश्लीपद

वातजंकृष्णरूक्षंचस्फुटितंतीव्रवेदनम् ॥
अनिमित्तरुजंतस्यबहुशोज्वरएवच २

अर्थ- बातकी श्लीपद कालीरूखी. फटी. और जिसमें तीव्रपी
डाहोय. बिनाकारणके दुखे. और उसमें ज्वर बहुत होय.

पित्तजश्लीपद

पित्तजंपीतसंकाशंदाहज्वरयुतंमृदु ✤

अर्थ- पित्तकी श्लीपद पीले रंगकी दाह और ज्वर युक्त हो
य तथा नरम होय ॥

श्लैष्मिकश्लीपद

श्लैष्मिकंस्निग्धवर्णंचश्वेतंपांडुगुरुस्थिरम ३

अर्थ- कफकीश्लीपदकावर्णचिकना. सपेद. पीला भारी और

कठिन होयहै॥ असाध्यलक्षण

वल्मीकमिवसंजातंकंटकैरुपचीयते।अ
ब्दात्मकंमहत्तच्च वर्जनीयंविशेषतः॥४॥

अर्थ– सर्पकीबांवीकेसमानबढ़ीभई औरजिस्के ऊपरकांटे-होंय· ऐसीएकवर्ष की होगईहो औरबड़ी होयउस्को वैद्यत्यागदे ४॥

श्लीपदमेंकफकोप्राधान्यअव्यभिचारकर्केहै उस्कोकहतेहैं

त्रीण्यप्येतानिजानीयाच्छ्लीपदानिकफोच्छ्रयात्।गुरुत्त्वंचमहत्त्वंचयस्मान्नास्तिविनाकफात् ५

अर्थ– सर्वोपूर्वोक्ततीनोंश्लीपदों में कफकी आधिक्यता है कारण इन्कायहहै भारी और महत्त्व ए दोनोंकफकेबिनानहीं होतेहैं॥

श्लीपदकौनसेदेशमेंउत्पन्नहोयहै उस्कोकहतेहैं

पुराणोदकभूयिष्ठाःसर्वर्तुषुचशीतलाः।
येदेशास्तेषुजायन्तेश्लीपदानिविशेषतः ६

अर्थ– बर्षाऋतु में पानी अधिकबर्षने सें पृथ्वीके नीचे होनेसें सूखे नहीं इसीसें पुराने पानी का संचय (इकट्ठा) होय· और सर्वऋतु में सरदी रहाकरै ऐसे जे अनूप (पूरब) आदिदेश उन्में यहश्लीपद रोग बिशेषकर्के होय है· जांगलदेशों मेंअग्निका अधिक अंश होय है यासें उनदेशोंमेंजलकोपुराणत्त्व नहीं होय है और अनूपदेशमें गरमी मंदपड़ने सें उष्णऋतुमेंभी शीतलता होय है· हाथ· कान आदि में श्लीपद रोगकी शंका होने सें दोषोंके कोपद्वारा ज्वर कर्के श्लीपद को जानले॥

असाध्यलक्षण

यच्छ्लेष्मलाहारविहारजातं पुंसःप्रकृत्याच

कफात्मकस्य। सास्रावमत्युन्नतसर्वलिंगं सकंडुरंश्लीष्मयुतंविवर्ज्यम् ॥ ७ ॥

इतिश्लीपदनिदानम्

अर्थ- जोश्लीपदकफकारकआहारविहारसैं प्रगटभया-तथा कफ प्रकृति वाले पुरुषके कफ सैं प्रगटभयाहोय-तथास्रावयुक्त तथा जिस दोष सैं प्रगट भया होय उस दोष के लक्षण उसैंमें बढगए होंय और जिसें खुजली बहुत होय और कफ युक्त होय सो श्लीपदरोगी वैद्य करके त्याज्य है- ॥ ✣ ॥

॥ इतिश्लीपदनिदानम्समाप्तम् ॥

बिद्रधिनिदानम्

त्वग्रक्तमांसमेदांसिप्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः। दोषाःशोथंशनैर्घोरंजनयंत्युच्छ्रिताभृशम् १ महामूलंरुजावंतंवृत्तंवाप्यथवायतम्। सविद्रधीरितिख्यातोविज्ञेयःषड्विधश्चसः २ पृथक्दोषैःसमस्तैश्चक्षतेनाप्यसृजातथा षण्णामपिहितेषांतुलक्षणंसंप्रचक्षते ॥ ३ ॥-

अर्थ- अत्यंतवढे तथा अस्थि (हड्डी) का आश्रय करके रहनेवाले-वातादिदोष-त्वचा-रुधिर-मांस औरमेद इन्को दुष्टकरधीरेधीरे भयंकर शोथ उत्पन्न करें उस्की जड़ हड्डी पर्यंत पहुंचजाय-उत्पत्तिकालसें अत्यन्त पीड़ाकारक तथा गोल अथवालंबा जो शोथ (सूजन) होय उस्को (विद्रधि) कहते हैं पृथक् दोषों सैं ३ सन्निपात सैं १ क्षत (घाव) सैं १ और रुधिरसैं १ मिलकर छः प्रकारकी विद्रधि होय है- उन छःहों विद्रधि के-लक्षण कहते हैं ॥

वातजविद्रधिकेलक्षण

कृष्णोऽरुणोवाविषमोभृशमत्यर्थवेदनः।
चित्रोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिर्वातसंभवः ४

अर्थ- जो विद्रधिकाली · लाल · बिषम कहिये कदाचित्छोटी · कदाचित मोटी हो · अत्यन्त वेदनायुक्त और उस्का प्रगट होना तथा पाक ये नाना प्रकार की होय उस्को बात बिद्रधि कहते हैं ॥४॥

पित्तकीबिद्रधिकेलक्ष·

पक्वोदुंबरसंकाशः श्यावोवाज्वरदाहवान्
क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिःपित्तसंभवः ५

अर्थ- पित्तकीविद्रधिपकेगूलरकेसमान होय· अथवा कालावर्ण होय· ज्वर· दाह· करनेवाली· उस्काप्रगटऔरपाक शीघ्र होय·

कफकीविद्रधिकेलक्षण

शरावसदृशःपांडुःशीतःस्निग्धोऽल्पवेदनः
चिरोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिःकफसंभवः ६।

अर्थ- कफ की बिद्रधि शराव (मट्टीके शरवा) सदृशबड़ी-होय· पीलावर्ण शीतल· चिकनी · अल्पपीड़ा · होय उस्का पैदा और पाक देरसें होय है·॥६॥

पकनेके अनंतरउन्कास्राव

तनुपीतसिताश्चैषामास्रावाः क्रमशः स्मृताः

अर्थ- ये तीन प्रकार बिद्रधि पकनेके अनन्तर इन्सें वातादिकों के क्रमसें पतला· पीला· और सुपेद राधनिकले ॥

सन्निपातकीविद्रधिकेल·

नानावर्णरुजास्रावोघंटालोबिषमोमहान् ७
बिषमंपच्यतेचापिविद्रधिःसान्निपातिकः।

अर्थ- सन्निपातकी विद्रधिमें अनेकप्रकारकीपीड़ा जैसेंतो द-दाह-खुजली-पीड़ा-तथा अनेक प्रकारका स्राव जैसे पतला-पीला-सपेद-स्राव होय-घंटाले कहिये नीचे स्थूल होय और ऊपर पतरी हो अर्थात्-अग्रभाग अति ऊंचा होय-छोटी बड़ी कदाचित् पके कदाचित् नहीं पके ऐसी होय-॥

आगंतुजविद्रधिकी संप्राप्ति

तैस्तैर्भावैरभिहते क्षतेवाऽपथ्यकारिणः ८
क्षतोष्मावायुविस्तृत:सरक्तंपित्तमीरयेत्।ज्व
रस्तृष्णा चदाहश्चजायन्तेतस्यदेहिनः ९।
आगंतुविद्रधिर्ज्ञेयःपित्तविद्रधिलक्षणः॥

अर्थ- तिनतिनभावकहिये लकड़ीपत्थर डेला आदिका अभिघात (चोटलगना पिचजानाइत्यादि) होने सैं अथवा तलवार-तीर-बरछी-इत्यादिक लगने सैं घावहोजाने सैं अपथ्यकरनेवाले पुरुष के कुपित वायु करके विस्तृत (फैला) क्षतोष्मा (घावकीगरमी) और रुधिर सहित पित्तको कोपकरै उस पुरुषके ज्वर-प्यास और दाह होय और उसमें पित्त की विद्रधिके लक्षण मिलते होय-इसको आगंतुजविद्रधिजाननी

रक्तजविद्रधिकेलक्ष.

कृष्णस्फोटावृतःश्यावस्तीव्रदाहरुजाकरः
पित्तविद्रधिलिंगस्तुरक्तविद्रधिरुच्यते १०॥

अर्थ- काले फोडेन सैं व्याप्त-श्यामवर्ण-दाह-पीड़ा-और ज्वर ए उसमें तीव्र होंय तथा पित्तकी विद्रधिके लक्षण करकेयुक्त होय-उसको रक्त विद्रधि जानना-॥१०॥

अंतर्विद्रधिकेलक्षण

पृथक्संभूय वा दोषाः कुपिता गुल्मरूपिणम्। वल्मीकवत्समुन्नद्धमंतः कुर्वन्ति विद्रधिम् ११

अर्थ- कुपित भये पृथक् २ अथवा मिले भए दोष शरीर में गोला के समान · बांबी के समान बढ़ी ऐसी विद्रधि उत्पन्न करे है · ११

विद्रधि के स्थान

गुदे बस्तिमुखे नाभ्यां कुक्षौ वंक्षणयोस्तथा। वृक्कयोः प्लीह्नि यकृति हृदये क्लोम्नि चाप्यथ १२
एषामुक्तानि लिंगानि बाह्यविद्रधिलक्षणैः। गुदे वातनिरोधस्तु बस्तौ कृच्छ्राल्पमूत्रता १३॥
नाभ्यां हिक्का तथाऽऽटोपः कुक्षौ मारुतकोपनम्· कटिपृष्ठग्रहस्तीव्रो वंक्षणोत्थे च विद्रधौ १४ वृक्कयोः पार्श्वसंकोचः प्लीह्न्युच्छ्वासावरोधनम् सर्वांगप्रग्रहस्तीव्रो हृदि कंपश्च जायते॥१५॥
श्वासो यकृति हिक्का च क्लोम्नि पेपीयते पयः॥

अर्थ- गुदा · बस्ती · मुख · नाभी · कूख · बंक्षण · वृक्क (कूख पिंडी प्लीह) यकृत (कलेजा) हृदय · क्लोम (प्यासका स्थान) इन ठिकाने पर विद्रधि होय है इन्के लक्षण बाह्य विद्रधि के समान जानने ·

(गुदामें) विद्रधि होने सें अधोवायू को रोध होय -
(बस्तीमें) अर्थात् मूत्राशयमें होने सें कठिनता से थोड़ा २ मूते॥
(नाभिमें) होने सें हिचकी तथा पीड़ा पूर्वक क्षोभ होय ·
(कूखमें) होने से पवन का कोप होय
(वंक्षण) में होने सें कमर और पीठ का वल्कपूर्वक जकड़ जाना होय ·
(कूखकी पिंडमें) होने सें पसवाड़ों के संकोच होय ·
(प्लीहमें) होने सें श्वास रुक जाय ·

(हृदयमें) होनेसें सब अंग जिकड़जांय और कंप होय
(क्लेजेमें) होनेसें श्वास और हिचकी होंय॰
(क्लोममें) अर्थात् पिपासा स्थानमें बिद्रधि होनेसें बारंबार पानी पीनेकी इच्छा होय है ॥

स्रावनिर्गम

नाभेरुपरिजाःपक्वायांत्यूर्ध्वमितरेत्त्वधः १६
अधःस्रुतेषुजीवेत्तुस्रुतेषूर्ध्वेनजीवति

अर्थ– नाभिके ऊपर जो बिद्रधि होय उन्के पकनेसें जो स्राव कहिये राध आदिका वहना होय वो मुखके रास्ते होय हैं॰ और नाभिके नीचे होनेसें जो स्राव होय वो गुदाके मार्गसे होय है और नाभिके समीप होनेवाली बिद्रधिन्का स्राव दोनो मार्गसें होय जिन्का स्राव नीचेके मार्ग हो वो रोगी जीवे॰ और ऊपरके मार्ग जिस्का स्राव होय वो रोगी बचे नहीं ॥

बिद्रधिमेंसाध्यासाध्य

हृन्नाभिबस्तिवर्ज्यायेतेषुभिन्नेषुबाह्यतः १७
जीवेत्कदाचित्पुरुषोनेतरेषुकथंचन । सा
ध्याबिद्रधयःपंचबिवर्ज्यःसान्निपातिकः। आ
मपक्वविदग्धत्वंतेषांशोथवदादिशेत् १८।

अर्थ– हृदय॰नाभि॰और बस्ती इन ठिकानेको छोड़कर फूटनेवाली बिद्रधि (अर्थात् प्लीह क्लोम इत्यादि ठिकाने) बाहर फूटनेसें कदाचित् पुरुष बचजाय॰ और ठिकाने पर फूटनेसें नहीं॰ बचे ॥ ÷

पहिली पांच बिद्रधि साध्य हैं॰ सन्निपातकी बिद्रधि असाध्य है इन बिद्रधीनको आम॰ पक्व॰ और बिदग्ध ये तीन अवस्था शोथ रोगके समान जाननी चाहियें ॥

असाध्यलक्षण

आध्मातंबद्धनिष्यंदंछर्दिहिक्कातृषान्वितम्
रुजाश्वाससमायुक्तंविद्रधिर्नाशयेन्नरम् १९

अर्थ- अफरायुक्त·मूत्ररुकगया होय· हिचकी·बमन और प्यास इन्सें पीडित·शूलश्वास इन्केकै युक्त होय ऐसे मनुष्य के बिद्रधि रोग असाध्य होय है ॥ ❋ ॥ इति माधवभावार्थ दीपिका-टीकायां बिद्रधिनिदानसमाप्तम्

व्रणनिदानम्

एकदेशोत्थितःशोथोव्रणानांपूर्बलक्षणम्
षड्विधःस्यात्पृथक्सर्वरक्तागंतुनिमित्तजः१
शोथाःषडेतेविज्ञेयाःप्रागुक्तैःशोथलक्षणैः।
विशेषःकथ्यतेतेषांपक्वापक्वविनिश्चये २

अर्थ- एक ठिकाने परसूजन उत्पन्न होने सें जाने किइस्के व्रण (फोड़ा) होयगा सो व्रण रोग पृथक् दोषों सें ३ सन्निपात से १ रुधिर से १ और आगंतुज १ ऐसे मिलकर छः प्रकार का है इन छहों व्रणों में जो प्रथम सूजन होय उन्के लक्षण शोथ रोग लक्षण के समान जानने इन्में पक्व (पकना) अपक्व (नपकना) के बिषय में जो बिशेषता है उस्को इस जगे कहते हैं ॥२॥

व्रणपाक

विषमंपच्यतेवातात्पित्तोत्थश्चाचिरंचिरम्॥
कफजःपित्तवच्छोफोरक्तागंतुसमुद्भवः॥३॥

अर्थ- बादी सें विषम पाक होय अर्थात् कहीं पके कहीं नहीं पके पित्त सें बहुत जल्दी पके·कफ का फोड़ा देर में पके और रु

धिर का तथा आगंतुज फोड़े का पकना पित्तके समान अर्थात् ज ल्दी पके है ॥ ३ ॥

कच्चे फोड़े के लक्षण

मंदोष्मताऽल्पशोथत्वं काठिन्यंत्वक्सवर्णता।
मंदवेदनताचैव शोथानामामलक्षणम् ॥ ४ ॥

अर्थ- सूजन हाथके छूने सें थोड़ी गरम लगे. थोड़ी सूजन हो य. फोड़े का स्थान करा होय. तथा देह के रंग समान उसका रंग होय. और उस्में पीड़ा मंद होय. ये सूजन कच्चों के लक्षण हैं ॥

पच्यमानव्रणके लक्ष.

दह्यते दहनेनेव क्षारेणेव च पच्यते। पिपीलि
कागणेनेव दश्यते छिद्यते तथा ५ भिद्यते चै
व शस्त्रेण दंडेनेव च ताड्यते। पीड्यते पाणिने
वांतः सूचीभिरिव तुद्यते ६ शोषश्चो षोविव
र्णः स्यादंगुल्येवावपाट्यते। आसने शयने स्था
ने शांतिं वृश्चिकविद्धवत्। नगच्छेदातत‌ः शो
थो भवेदाध्मातबस्तिवत्। ज्वरस्तृष्णाऽरुचि
श्चैव पच्यमानस्य लक्षणम् ८

अर्थ- जिस समय व्रण पकने को होय उस समय ए लक्षण हो ते हैं. अग्नि सें भरासा फोड़े का स्थान मालूम हो. रवार लगाने का सा चिन मिनावे. चैंटी काटने कीसी पीड़ा होय. वो दो टूकक रने के समान तथा शस्त्र सें फारने के समान. दंड आदि के मारने के समान. तथा हाथ सें मीड़ने के समान तथा भीतरी सूई सें छेदने के समान पीड़ा होय. और उस्में अत्यंत दाह होय. अग्नि सें सेकने के समान उस्में वेदना होय. उस फोड़े का रंग बदल जाय. उंगली के लगाने से उखारने कीसी पीड़ा होय. बैठने में. सोने में. खड़े

रहने से बीछू काटने कीसी पीर पीड़ा होय. वो पीड़ा कभी शां
ति नहीं होय. वो सूजन फूली हुई वस्ती (मूत्रस्थान) के सदृश
तनीसी होय. उसमें ज्वर. प्यास और अरुचि. ए लक्षण होते हैं॥

पक्वव्रणके लक्षण

वेदनोपशमः शोथोऽलोहितोऽल्पोनचोन्नतः
प्रादुर्भावोवलीनांचतोदः कंडूर्मुहुर्मुहुः १९ उ
पद्रवाणांप्रशमोनिम्नतास्फुटनंत्वचः। बस्ता
विवांबुसंचारःस्याच्छोथेंऽगुलिपीडिते २० पू
यस्यपीडयत्येकमंतमंतेचपीडिते। भक्ताकां
क्षाभवेच्चैवशोथानांपक्वलक्षणं २१

अर्थ- व्रण पकने सैं पीड़ा शांति होजाय -उसकी सूजन तामेंके
रंग की होय. और थोड़ी होय- ऊंची नहोय -उसमें गुजलट पड़े सुई
चुभाने कीसी पीड़ा होय- बारंबार खुजली चले पित्त दाहादि उप-
द्रवों की शांति हो. खुजाने सैं उसजगे गढेला होजाय त्वचा फट
जाय- सूजन हाथके दबानेसें जैसे वस्ती के नीचेका पानी इधरउध
र होय- उस प्रकार राध इधरउधर होय. अन्नमें इच्छा हो

एकदोषसैंसूजनउत्पन्नहोयउसमें प कनेकेसमयतीनोंदोषोंकासं बंधहोयहै

नर्तेऽनिलाद्रुग्विनानापित्तं पाकः कफंवापि
विनानपूयः। तस्माद्धिसर्वेपरिपाककाले प
चन्तिशोथास्त्रिभिरेवदोषैः २२

अर्थ- बादीके बिना पीड़ा नहीं होय- पित्तके बिना दाह नहीं हो
य. और कफके बिना राध नहीं होय. अर्थात् पकनेके समयतीनों
दोषों के मिलने सें सब प्रकार की सूजन पकती है ✣ रक्तपाक

लक्षण ग्रन्थांतरों में कहे हैं ÷ यथा ÷ कफजेषुचशोथेषुगंभीरंपाकमेत्यसृक् । पक्वंस्निग्धंततःस्पष्टंयत्रस्यात्क्लिन्नशोफता । त्वक्सावर्ण्यंरुजोल्पत्वंघनस्पर्शित्त्वमश्मवत् । रक्तपाकमितिब्रूयात्तंप्राज्ञोमुक्तसंशयः ÷ इस्का अर्थ सुगम है ॥

राधननिकालनेसैंजोपरिणामहोय हैउस्कोदृष्टांतदेकरकहतेहैं

कक्षंसमासाद्ययथैववन्हिर्वाय्वीरितःसंदहतिप्रसह्य । तथैवपूयोप्यविनिःसृतोहिमांसंशिराःस्नायुचखादतीह २३

अर्थ- फूंसके गंज में आगलगे और उस्को पवनकी सहाय मिलकर जैसे वो जलाकर खाक करदे उसी प्रकार व्रण में से राध न निकालने सैं तो राध मांस· शिरा और स्नायु· इन्को खाय लेती है॥

आमादिलक्षणज्ञानसैंवैद्यके गुणदोषदिखातेहैं

आमंविदह्यमानंचसम्यक्पक्वंचलक्षणैः । जानीयात्सभवेद्वैद्यः शेषास्तस्करवृत्तयः । २४ ।

अर्थ- आंम (कच्चा) पच्यमान और जो अच्छीरीतिसैंपकगया हो ऐसे व्रणके लक्षण जो वैद्य जाने हैं· उसी को वैद्य जानना चाहिये वाकीके सब चोर हैं

अपक्वकाछेदन और पकेको अपेक्षाकरनेमें दोष·

यश्छिनत्त्याममज्ञानाद्यश्चपक्वमुपेक्षते । श्वपचाविवमंतव्यौतावनिश्चितकारिणौ ॥ २५ ॥

अर्थ- जो अज्ञान सैं कच्चे फोड़ाको पका समझकर फोड़े और जो पके फोड़ाको कच्चा समझकर चीरे नहीं· ये दोनों अविचारवा

न वैद्य चांडाल के समान जानने ॥ ✣ इतिव्रणशोथनिदानम् ॥

व्रणनिदान

द्विधाव्रणःपरिज्ञेयः शारीरागन्तुभेदतः । दो
षैराद्यस्तयोरन्यःशस्त्रादिक्षतसंभवः १

अर्थ- शरीर और आगंतुक इन भेदोंसे· व्रण दो प्रकारका है पहिला (शारीर) दोषों के कोप से होय है· औरदूसरा शस्त्रादिक करके (घाव के होनेसे) होय है ॥१॥

वातिकव्रण

स्तब्धःकठिनसंस्पर्शोमन्दस्रावोमहारुजः ।
तुद्यतेस्फुरतिश्यावोव्रणोमारुतसंभवः ॥२॥

अर्थ- बादी से प्रगट व्रणमें जिकड़ना· तथा हाथकेछूनेसे कठिन मालूम होय· उसमें से थोड़ा स्राव होय· तथा पीड़ा बहुतहोय· तथा सुई के चुभाने कीसी पीड़ा होय · और उस्का रंग काला होय ॥२॥

पित्तव्रणकेलक्षण

तृष्णामोहज्वरक्लेददाहदुष्टयवदारणैः । व्र
णंपित्तकृतंविद्याद्गंधैःस्रावैश्चपूतिकैः ३

अर्थ- प्यास· मोह· ज्वर· क्लेद· दाह· सड़ना· चिरासा होय· बांस आवे· स्राव होय· एपित्त व्रणकेलक्षण हैं ॥३॥

कफव्रणकेलक्षण

बहुपिच्छोगुरुःस्निग्धःस्तिमितोमन्दवेदनः ।
पांडुवर्णोऽल्पसंक्लेदोचिरपाकीकफोद्भवः ४

अर्थ- कफ कास्राव अत्यंतगाढ़ा· भारी · चिकना · निश्चल· मन्द पीड़ा - पीलारंग - थोड़ा स्रावनेवाला - औरबहुत कालसे पके-

रक्तजद्वंद्वज व्रण

रक्तोरक्तस्नुतोरक्ताद्विद्वंजःस्यात्तदन्वयैः ५

अर्थ- जोरक्तके कोपसे व्रणहोयवोरक्त व्रण उसमेंसेरुधिर स्रवे एकदोष औररुधिरके संबंधमेंजोहोय वो द्वंद्व-अथवादोदोष तथारुधिर इन्के मिलनेसे संनिपातकाव्रण जानना॥

सुखव्रणकेलक्षण

त्वङ्मांसजःसुखेदेशेतरुणस्यानुपद्रुतः।

धीमतोऽभिनवःकालेसुखसाध्यःसुखव्रणः६

अर्थ- जो व्रण त्वचा औरमांस तथा मर्म-रहित स्थान में उपद्रव रहित होय और जो तरुण तथा ज्ञानी पुरुषके हेमंत-शिशिर काल में प्रगट होय-उस्को सुख व्रण कहते हैं-वो सुखसाध्य है-॥

कृच्छ्रसाध्यऔरअसाध्यल-

गुणैरन्यतमैर्हीनस्ततःकृच्छ्रोव्रणःस्मृतः

सर्वैर्विहीनोविज्ञेयःसोऽसाध्योनिरुपक्रमः७

अर्थ- जोपूर्वश्लोक में लक्षण कहि आये उन्में से कुछलक्षण थोड़े होनेसें व्रणकृच्छ्रसाध्य होय है और गुण रहितहोय-वो असाध्य है उस्की चिकित्सा न करनी चाहिये॥

दुष्टव्रणकेलक्षण

पूतिपूयातिदुष्टास्रक्स्राव्युत्संगोचिरस्थितिः

दुष्टव्रणोऽतिगंधादिःशुद्धलिंगविपर्ययः८

अर्थ- जिसमें से दुर्गंधयुक्त राध और सड़ा भया रुधिरवहेजो ऊपर ऊंचातथा भीतरसे पोलाहो-बहुत दिन रहनेवाला होय-उस्को दुष्टव्रण कहते हैं-वो शुद्धलिंग के विपरीत होय है॥

शुद्धव्रणकेलक्षण

जिव्हातलाभोऽतिमृदुः श्लक्ष्णः स्निग्धोऽल्पवेदनः
सुव्यवस्थो निरास्रावः शुद्धो व्रण इति स्मृतः ९

अर्थ– जो व्रण जीभके नीचे भागके समान· अत्यंत नरम होय· स्वच्छ· चिकना· थोड़ी पीड़ा युत· भले प्रकार का कहिये ऊंचा आदि जो दुष्ट व्रणादिक में लक्षण कहे वो न होंय· दोषरक्तादि स्राव रहित है उसको शुद्ध व्रण जानना ॥

भरनेवाले व्रणके लक्षण

कपोतवर्णप्रतिमा यस्यान्ताः क्लेदवर्जिताः। स्थि
राश्च पिडकावंतो रोहतीति तमादिशेत् १०

अर्थ– जिसका घाव कबूतरके रंग सदृश होय और जिसमें क्लेद न बहता होय और घाव स्थिर हो जिसमें फुंसी सी मालूम होंउस्को वैद्य जाने· कि यह व्रण (घाव) भरने वाला है ॥

जो व्रण भरगया होउस्के लक्ष·

रूढवर्त्मानमग्रंथिमशूनमरुजं व्रणम्। त्वक्स
वर्णं समतलं सम्यग्रूढं तमादिशेत् ११

अर्थ– जिस्का मार्ग भरगया होय गांठ बंधी होय· सूजन· और पीड़ा जिसमें होय नहीं· त्वचा के समान वर्ण होगया हो· घाव का गढ़ेला भरकर बराबर होगया हो· वो व्रण उत्तम भरा जानना ॥

व्याधिविशेषकर के व्रण कृच्छ्रसा· ध्य होय है सो कहते हैं ॥

कुष्ठिनां विषजुष्टानां शोषिणां मधुमेहिनाम्। व्र
णाः कृच्छ्रेण सिद्ध्यंति येषां चापि व्रणे व्रणाः १२

अर्थ– कोढी पुरुष· विषवाला पुरुष· खई रोगवाला पुरुष· मधुमेही पुरुष ऐसोंका व्रण बड़े कष्ट से साध्य होय है· और जिस्के पहले व्रणमें व्रण प्रगट होय· उस्के ये व्रण कष्टसाध्य होय हैं ॥१२॥

साध्यासाध्यलक्ष.

वसांमेदोऽथमज्जानंमस्तुलुंगंचयःस्रवेत् ॥
आगन्तुजोव्रणःसिद्धोन्नसिद्धोदोषसंभवः २३

अर्थ- जिसव्रणमेंसें चर्बी·मेद·मज्जा·और वस्तिस्नेह·स्रवेंहैंवोव्रण आगंतुजहोयतोसाध्यहै·और दोषकृत होय तो साध्य नहीं होय।

असाध्यव्रणकेल.

मद्यागुर्वाज्यसुमनःपद्मचन्दनचम्पकैः। सु
गंधादिव्यगंधाश्चमुमूर्षुणांव्रणाःस्मृताः२४

अर्थ- मद्य·अगर·घृत·फूल·कमल·चन्दन·और चंपा केफूल के समान अथवा चमत्कारी पारिजाति आदि फूलकीसी गंधजिस व्रण में से आवै वो व्रण मरने वाले रोगी के जानना ॥

दूसरे असाध्यलक्षण

येचमर्मस्वसंभूताभवंत्यत्यर्थवेदनाः।दह्य
न्तेचान्तरत्यर्थंबहिःशीताश्चयेव्रणाः २५ द
ह्यन्तेबहिरत्यर्थंभवंत्यंतश्चशीतलाः। प्राण
मांसक्षयश्वासकासारोचकपीड़िताः २६ प्र
वृद्धपूयरुधिराव्रणायेषांचमर्मसु। क्रियाभिः
सम्यगारब्धानसिद्ध्यन्तिचयेव्रणाः २७ वर्जयेदे
वतान्वैद्यःसंरक्षन्नात्मनोयशः॥

अर्थ- जे व्रण मर्म स्थान में प्रगट भए हों और उन्में अत्यंत पीड़ा होय· वे·तथा जिस जिस व्रण के भीतर दाह होय और बाहर शीतल होय· वे अथवा बाहर दाह होय और भीतर शीतलता होय· वे· तथा जिन्में बल- मांस इन्का क्षय होय· श्वास·खांसी·अरुचि·इन्सें अत्यंत पीड़ित होय· ऐसे · अथवा जे व्रण मर्म स्थान में प्रगट भए हों·उन्में से राध·रुधिर· बहुतवहे·वे·

अथवा जिन व्रणों को अच्छी चिकित्सा करने सें भी अच्छे न होय ऐसे व्रणों को अपने यशकी रक्षा करनेवाला वैद्य त्यागदे -

व्रणरोगमेंअपथ्य

व्रणेश्वयथुरायासात्सचरागश्चजागरात्। तौ
चरुक्चदिवास्वापात्ताश्चमृत्युश्चमैथुनात् १८

अर्थ- परिश्रम करने से व्रण में सूजन होती है - और जागने सें सूजन आय कर लाल होजाय - और दिनमें सोने सें सूजन परलाली आयकर पीड़ा होजाय - और मैथुन करने से सूजन-लाली-पीड़ा होकर मृत्यु होय ॥ इतिश्रीमाधवभावार्थबोधनी-माथुरी (भाषाटीकायांशारीरव्रणनिदानम्समाप्तम् ॥)

आगंतुव्रणनिदान

नानाधारामुखैः शस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ॥
भवंतिनानाकृतयोव्रणास्तांस्तान्निबोधमे ॥१॥

अर्थ- अनेक प्रकार की धारवाले तथा मुखवाले शस्त्र अनेकठिकाने पर लगने सें अनेक प्रकार की आकृति (स्वरूप) के व्रण होते हैं उन्को कहता हूं ॥१॥

संख्यासंप्राप्ति

छिन्नंभिन्नंतथाविद्धंक्षतंपिच्चितमेवच। घृष्
माहुस्तथाषष्ठंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् २

अर्थ- छिन्न-भिन्न-विद्ध-क्षत-पिच्चित-और छटा घृष्ट ऐसे आगंतुव्रण छः प्रकार के होते हैं - उनके लक्षण कहता हूं ॥

छिन्नकेलक्ष

तिर्यक्छिन्नऋजुर्वापियोव्रणस्त्वायतोभवेत्।
गात्रस्यपातनंतद्धिच्छिन्नमित्यभिधीयते॥ ३॥

अर्थ- जोव्रणतिरछा-सरल-(सीधा) अथवालंबाहोयउस्कोछिन्नव्र

णकहते है ॥ **भिन्नकेलक्षण**

शक्तिकुंतेषुखड्गाग्रविषाणैराशयोहतः। य
त्किंचित्स्रवेत्तद्धिभिन्नलक्षणमुच्यते ४

अर्थ- बर्च्छी-भाला-बाण-तरवार के अग्रभाग विषाण (दांत सींग) इनसे- आशय (कोष्ट) को वेधकर थोड़ा सा रुधिर स्रवे (निकले) उस्को (भिन्न कहते हैं ॥

कोष्टकेलक्षण

स्थानान्यामाग्निपक्कानांमूत्रस्यरुधिरस्यच॥
हृदुंदुकःपुष्फुसश्चकोष्टइत्यभिधीयते।५।

अर्थ- आमाशय- अग्न्याशय- पक्काशय- मूत्राशय- रक्ताशय- कलेजा- प्लीहा- हृदय- मलाशय और फुस्फुस- इनस्थानों कीकोष्ट संज्ञा है॥ **इनभेदोंकेलक्षण**

तस्मिन्भिन्नेरक्तपूर्णेज्वरोदाहश्चजायते। मू
त्रमार्गगुदास्यघ्राणेभ्योरक्तंघ्राणाच्चगच्छति ६॥
मूर्च्छाश्वासतृषाध्मानमभक्तच्छन्दएवच॥
विण्मूत्रवातसंगश्चस्वेदास्रावोऽक्षिरक्तता ७॥
लोहगंधित्वमास्यस्यगात्रदौर्गंध्यमेवच। हृ
च्छूलंपार्श्वयोश्चापिविशेषंचात्रमेशृणु ८

अर्थ- वो कोष्ट भिन्न होकर रुधिर सें भरजावै- तब- ज्वर- दाह होय है- मूत्रमार्ग- गुदा- मुख- और नाक- इन्में सें रुधिर वहै- मूर्च्छा श्वास- प्यास- पेटका फूलना- अन्न में अरुचि- मल मूत्र अधो वायू- इन्का अवरोध- पसीना- बहुत आवै- नेत्र में लाली- मुख में लोहे कीसी बास आवै- अंगों में दुर्गंधि- हृदय- और पस वाड़ों में शूल- ये लक्षण होते हैं- इन्से जो विशेष लक्षण हैं उन्को मोसे सुन- ॥८॥

आमाशयस्थितरक्तकेलक्ष·

आमाशयस्थेरुधिरेरुधिरंच्छर्दयत्यपि । आ
ध्मानमतिमात्रंचशूलंचभृशदारुणम् ९

अर्थ- आमाशय में रुधिर का संचय होने सें रुधिर की ब
मन पेट बहुत फूले· और अत्यंत भयंकर शूल होय ॥

पक्काशयस्थकेल·

पक्काशयगतेचापिरुजागौरवमेवच । अधः
कायविशेषेण शीतताचभवेदिह १०

अर्थ- पक्का शय में रुधिर का संचय होने सें शूल· देहमें भारी
पना और कमर सें लेकर नीचेकेभागोंमें शीतलता होय ॥

विद्धव्रणकेलक्षण

सूक्ष्मास्यशल्याभिहतंयदंगंत्वाशयंविना । उ
त्तुंडितंनिर्गतंवातद्विद्धमितिनिर्दिशेत् ११

अर्थ- बारीक अग्रभागवाले (सूई आदि) शस्त्र सें आशय वि-
ना जो अंग हैं उन्में वेध होने सें उत्तुंडित (कहिये उन्में सेवो शस्त्र न
निकला होय) निर्गत कहिये (शल्य निकल गया हो) उस्को
(विद्ध) व्रण कहते हैं ॥

क्षतकेलक्षण

नातिच्छिन्नंनातिभिन्नमुभयोर्लक्षणान्वितम् ।
विषमंव्रणमंगेषुतत्क्षतंत्वभिनिर्दिशेत् १२

अर्थ- जिस्में अंग अति छिन्न तथा· अति भिन्न न भया हो और दो
नो के लक्षण मिलते हों· तथा व्रण तिरछा बांका होय· उस्को
क्षत व्रण कहते हैं ॥ १२ ॥

पिच्चितकेलक्षण

प्रहार पीड़नाभ्यां तुयदंगं पृथुतांगतम् । सा

स्थितात्पिच्चितंविद्यान्मज्जारक्तपरिप्लुतम् ॥

अर्थ- जो अंग हाड़ सहित प्रहार कहिये मुद्गर आदि की चोट अथवा दबना किवार आदिसैं· इन्के योग सैं चिपट होजाय· तथा मज्जा· रुधिर कर्के युक्त होय (घाव न होय) उस्को पिच्चित व्रण कहते हैं ॥

घृष्टकेलक्षण

घर्षणादभिघाताद्वायदंगंविगतत्त्वचम् ।ऊ

ष्मास्रावान्वितंतद्धिघृष्टमित्यभिनिर्दिशेत् २४

अर्थ- कठिन बस्त्र आदि को घर्षण (घिसने) सैं· चोटके लगने सैं· जिस अंगको ऊपरकी त्वचा जाती रहै तथा आगके समान गरम रुधिर चुचाय उस्को घृष्ट ऐसे कहते हैं ॥

सशल्यव्रणकेलक्ष·

श्यावंसशोथंपिटिकान्वितंच मुहुर्मुहुः शो

णितवाहिनंच ॥ मृदून्नतंबुद्बुदतुल्यमांसंव्र

णंसशल्यंसरुजंवदंति २५

अर्थ- जो व्रण नीला· सूजन युक्त· मरोरीन् सैं व्याप्त होय और बार बार उन्मैं सैं रुधिर वहै और नरम होकर ऊपर बबूले- के समान उठाभया जिस्का मांस होय· उस व्रण में सल्य आदि है ऐसे जानना चाहिये ॥

कोष्ठभेदलक्षण

त्वचोऽतीत्यशिरादीनिभित्त्वावापरिहृत्यवा

कोष्ठेप्रतिष्ठितंशल्यंकुर्यादुक्तानुपद्रवान् २६

अर्थ- त्वचा की संधी कहिये· शिरा मांस· नस· हड्डी इन्की सन्धी को बेधकर अथवा· सिरा आदि को छोड़ जो शल्य कोष्ठ में रहै है उस्सै आगे कहे भए लक्षण होते हैं ॥

असाध्यकोष्ठभेद

तत्रांतर्लोहितंपांडुशीतपादकराननम्।शी
तोच्छ्वासंरक्तनेत्रमानद्धंपरिवर्जयेत् २७

अर्थ- जिस्का रुधिर आंतों में संचित होय (अर्थात् बाहर नहीं वहे) और जो पीला बर्ण जिस्के हाथ पैर शीतल होंय· और जो शीतल श्वास को छोड़े जिस्के लाल नेत्र होंय· अनाहक हिये (पेटफूलना) औसे रोगी को बैद्य त्याग देय॥

मांस·शिरा·स्नायु·अस्थि·औरसंधिइन्मर्मोमेंचोटलगनेकेसामान्यलक्षण

भ्रमःप्रलापःपतनंप्रमोहोविचेष्टनंग्लानिरथोष्णताच।स्रस्तांगतामूर्च्छनमूर्ध्ववातस्तीव्रा
रुजोवातकृताश्चतास्ताः २८ मांसोदकाभं
रुधिरंचगच्छेत्सर्वेंद्रियार्थोपरमस्तथैव॥
दशार्द्धसंख्येष्वथविक्षतेषुसामान्यतोमर्म
सुलिंगमुक्तम् २९

अर्थ- भ्रम· अनर्थभाषण· गिरना· इन्द्री और मन इन्को मोह· हाथ पैर का फैलाना· ग्लानि· उष्णता· अंगों में शिथिलता मूर्च्छा· श्वास का चढना· बातजन्य तीव्र पीड़ा· मांस का धोया हुआ पानी· औसा रुधिर वहे· सर्व इन्द्री विकल होंय· (अर्थात् सब इन्द्रीन्का व्यापार वंद होजाय) ये लक्षण मांस आदि पांच मर्म विद्ध होने सें होते हैं॥

मर्मरहितशिराविद्धकेल·

शक्रेन्द्रगोपप्रतिमंप्रभूतंरक्तंस्रवेत्तत्क्षणजश्चवायुः।करोतिरोगान्विविधान्यथोक्तान्

शिरासुविद्धस्वथवाक्षतासु ॥ ॥ २० ॥ ॥

अर्थ- शिरा कहिये (नाड़ी) विंधजाय• अथवा शिरामें घाव होजाय• उस्में सें इन्द्र गोप (बीरबहुटी) कीड़ाके समानलाल तथा पुष्कल रुधिर श्रवे• तथा रक्त क्षय होने सैं बायू कुपित होकर अनेक प्रकारके (आक्षेपकादि) रोग उत्पन्न करे हैं॥

स्नायुबिद्धकेलक्षण

कौब्ज्यंशरीरावयवावसादः क्रियास्वशक्तिस्तमुलारुजश्च ॥ चिराद्व्रणोरोहतियस्यचापिंतंस्नायुबिद्धंपुरुषंब्यबस्येत् २१

अर्थ- कुबड़ापना• शरीरमेंग्लानि• काम करने सें असामर्थपना• बहुत पीड़ा और जिस्का व्रण बहुत दिनमें भरे• उस्की स्नायू विद्धभई ऐसे जाने॥

संधिविद्धकेलक्षण

शोथाभिवृद्धिस्तमुलारुजश्चबलक्षयःपर्वस्तुभेदशोथौ ॥ क्षतेषुसंधिष्वचलाचलेषुस्यात्सर्वकर्मोपरमश्चलिंगम् २२

अर्थ- चल अथवा अचल संधी का वेध होने सैं सूजन बढे• पीड़ा बहुत होय• शक्तिका नाश होय• संधिमें भेद के समानपीड़ा होय• सूजनहोय• कुछकार्यकरेपरंतुउस्में उपराम होय•॥

हड्डीविधगईहोउस्केल•

घोरारुजोयस्यनिशादिनेषुसर्वास्ववस्थासुचनैतिशांतिम् ॥ भिषग्विपश्चिद्विदितार्थसूत्रस्तमास्थिविद्धंपुरुषंव्यवस्येत् २३

अर्थ- जिस पुरुष के रात दिन घोर पीड़ा होय• जाग्रतादि तीनो अवस्था में शांति होय नहीं उस्के अस्थि (हड्डी) विंधी

है ऐसें श्रेष्ट वैद्य जानें ॥ २३ ॥

मर्मरहितशिरादिकोंकेविद्धल क्षणकहनेककेशिरादिमर्मवि द्धलक्षणोंकाहवालदेतेहैं

यथास्वमेतानि विभावयेत्तु लिंगानि मर्मस्व भिताडितेषु ॥

अर्थ- मर्म के ठिकाने चोट के लगने सें ये पूर्वोक्त लक्षण जानने चाहियें· तु शब्द सें लक्षण और सामान्यलक्षण होते हैं ऐसे जानना ॥

मांसमर्मकेलक्षणनहींकहे उन्कोकहतेहैं

पांडुर्विवर्णः स्पर्शितं नवेत्ति योमांसमर्म ण्यभिताड़ितःस्यात्

अर्थ- जो पुरुष मांसमर्म के ठिकाने विद्ध होता है उस्का पीला वर्ण देहका विवर्ण होय· और स्पर्श का ज्ञान न होय ॥

सर्वव्रणकेउपद्रव

विसर्पः पक्षघातश्च शिरास्तम्भोपतानकः ।
मोहोन्माद व्रणरुजाज्वरस्तृष्णाहनुग्रहः २५
कासश्छर्दिरतीसारो हिक्काश्वासः सवेपथुः
षोड़शोपद्रवाः प्रोक्ताव्रणानांव्रणचिन्तकैः २६

अर्थ- विसर्प· पक्षाघात· शिरास्तंभ· अपतानक· मोह· उन्माद· ज्वरव्रणकी पीड़ा· प्यास· हनुग्रह· खांसी· वमन· अतिसार· हिचकी· श्वास· और कंप ये व्रण रोग के सोलह उपद्रव व्रण रोगके जानने वालों ने कहे हैं ॥

इतिश्री माधवार्थदीपिकायां सद्योव्रण निदानम् ॥ ❖ ॥

भग्ननिदान

भग्नंद्वोप्रकारकाहैएकसव्रणऔ
रदूसराव्रणरहितहनेंमेंसेव्रणकोक
हकरव्रणरहितकोकहतेहैं
भग्नंसमासाद्द्विविधंहुताशकांडेचसंधौचहि

अर्थ- हे अग्निवेश· कांडभंग और संधिभंग मिलकर संक्षेप में दो प्रकार का है॥

संधिभंगकेलक्ष·

तत्रसंधौ॥ उत्पिष्टविश्लिष्टविवर्त्तितंचति
र्यक्कविक्षिप्तमधश्चषोढा १

अर्थ- तहां संधिस्थान का भग्न रोग छः प्रकार है उन्के नाम क हते हैं उत्पिष्ट· विश्लिष्ट· विवर्तित· तिर्यक्· विक्षिप्त· और अ धः क्षिप्त·भग्न नाम टूटने का है॥

संधिभंगकेसामान्यल·

प्रसारणाकुंचनवर्त्तनोग्रारुक्स्पर्शविद्वेष
णमेतदुक्तम् ॥ सामान्यतःसन्धिगतस्य
लिंगं॥✣

अर्थ- फैलाते समय· सकोरने के समय· नीचे करने सेंघो र पीड़ा होय· और स्पर्श सहा न जाय· ये संधि भग्न के सामान्य लक्षण हैं॥

उत्पिष्टसन्धेःश्वयथुःसमन्तात् । विशेषतो
रात्रिभवारुजाच॥

अर्थ- उत्पिष्ट संधि के चारों और सूजन होय· और रात्रि में पी ड़ा बहुत होय· संधी के हाड़ दोनों आपस में घिसे·उस्को (उत्पि

ष) ऐसे कहते हैं ॥ ॥

विश्लिष्टेजतोचरुजाचनित्यम् ॥ ॥ ❖ ॥ ॥

अर्थ- विश्लिष्ट संधिन्में सूजन· औररात्रि में पीड़ा ए होकर स चे काल में अत्यन्त पीड़ा होय· औरउत्पिष्टकी अपेक्षा इतने लक्षण (विश्लिष्टमें) विशेष होते हैं· अर्थात् संधि शिथिल मात्र होय· इस्में हाडके हटने सें बीचमें गलेटा होजाय ॥

विवर्त्तितेपार्श्वरुजश्चतीव्रा: ॥

अर्थ- बिबर्तित संधि में दोनो तरफ के हाड़ संधी से पलटजा य तब अत्यंत पीड़ा इस संधि में हाड़ दोनों तरफ फिरा करै·

तिर्यग्गतेतीव्ररुजोभवन्ति ॥

अर्थ- हड्डी के तिरछे हटने से पीड़ा वहुत हो और एक हड्डी संधिस्थान छोड़कर टेढी होजाय ॥

क्षिप्तेऽतिशूलंविषमारुगस्थ्नो;

अर्थ- संधि हड्डी एक ऊपर को हटजाय तो अत्यन्त पीड़ाहोय और हाडों में कम जास्ती पीडा होय· इस जगे एक हड्डी की क्रिया से अथवा दोनो हड्डी की क्रिया करके दोनों हाड़ पर- स्पर समीप से दूर होजांय हैं ॥

क्षिप्तेत्वधोरुग्विघटश्चसंधे: ॥

अर्थ- संधिकी हड्डी एक नीचे को हट जाय तो पीड़ा होय· औ र संधी की विरुद्ध चेष्टा होय· इस्में संधीके हाड परस्पर दूर हों य परंतु किंचित् नीचे को गमन करे·

अबकांडभग्नकोकहतेहैं

कांडेत्वत:कर्कटकाश्वकर्ण विचूर्णितंपि·
च्चितमस्थिछल्लिका ॥ कांडेषुभग्नंत्वतिपा
तितंचमज्जागतंचस्फुटितंचवक्रं॥४॥ छि

च्चंद्विधाद्वादशधापिकांडे

अर्थ- कांडभग्न बारह प्रकार का है· १ कर्कट २ अश्वकर्ण· ३ विचूर्णित ४ पिच्चित ५ अस्थिछल्लिका ६ कांडभग्न ७ अतिपातित ८ मज्जागत ९ स्फुटित १० वक्र और दो प्रकार के छिन्न

१ कर्कटक- अर्थात् हाड़ दोनों ओर से दबकर बीच में ऊंचासा होय·
२ अश्वकर्ण- घोड़ा के कान के समान जो हाड़ होजाय·
३ विचूर्णित- चुरकट होगया हो· वो शब्द सें अथवा स्पर्श से जाना जाय
४ पिच्चित- पिचा भया हाड़·
५ अस्थिछल्लिका- हाड़ का कोई भाग छिलका के समान उखड़कर रहे
६ कांडभग्न- हड्डी का कांड टूटना· [है सो
७ अतिपात- सब हाड़ टूटे सो·
८ मज्जागत- हड्डी के अवयव मज्जा में प्रवेश कर मज्जा को बाहर निका
९ स्फुटित- जिस हड्डी के बहुत टुकड़ा होजांय· [लै
१० वक्र- हड्डी तिरछी होजाय वो भी भग्न में गिनी जाती है·
११ छिन्न २ बारीक बारीक बहुत से टुकड़ा होजांय सो और दूसरा एक और से टूटकर दूसरी तरफ निकले है ॥

कांडभग्नके सामान्यलक्ष·

स्रस्तांगता शोथरुजातिवृद्धिः। संपीड्यमाने
भवतीह शब्दः स्पर्शासहस्पंदनतोदशूलाः ५
सर्वास्ववस्थासुन शर्मलाभो भग्नस्यकांडेख
लुचिन्हमेतत् ॥६॥

अर्थ- अंगों में सिथिलता· सूजन· घोरपीड़ा जिस्थान की हड्डी टूटी होय उस जगे पीड़ा के साथ शब्द होय· हाथ के लगाने से· सहा न जाय· हड्डी फड़के· सुई छेदने कीसी पीड़ा होय· और शूल होय·

कभी चैन न पड़े · कांड इस शब्द से · नलककपाल · वलय · तरुण और रुचक · इन पांच प्रकार की हड्डीन्का संग्रह होय है ❀ कांडभग्नके १२ बारें भेदों से अधिक भेद होते उन्को कहते हैं ॥

भग्नंतुकांडेबहुधाप्रयातिसमासतोनाम
भिरेवतुल्यम्।

अर्थ- कांडों में अनेक प्रकार के भंग होते हैं · सो जिसजिस ठिकाने जैसी आकृती का होय उस्का उसी प्रकारका नाम कहना चाहिये॥

कष्टसाध्य

अल्पाशिनोनात्मवतोजन्तोर्वातात्मकस्यच
उपद्रवैर्वाजुष्टस्यभग्नंकृच्छ्रेणसिध्यति॥७

अर्थ- थोड़ा खानेवाला · और जिस्की इन्द्री स्वाधीन न होय · वात प्रकृति वाले की ज्वरादि उपद्रव संयुक्त ऐसे पुरुषकी हड्डी टूटने से बड़े कष्ट से साध्य होय है·॥

असाध्यलक्षण

भिन्नंकपालंकट्यांतुसंधिमुक्तंतथाच्युतम्
जघनंप्रतिपिष्टंचवर्जयेत्तुबिचक्षणः॥ ८ ॥

अर्थ- कमरकी · कपाल हड्डी टूटगई हो · अथवा संधिके पासकी हड्डी टूटगई हो · अथवा स्थान सें छूटगई हो · और जंघाकी हड्डी का चूर होगया हो ऐसे रोगी को वैद्य त्यागदे ॥

तथाअसाध्यलक्ष:

असंश्लिष्टकपालंचललाटेचूर्णितंचयत्।
भग्नंस्तनान्तरेपृष्ठेशंखेमूर्द्धिचवर्जयेत् ९॥

१ सुश्रुतमें · जानुनितंबांशगण्डतालुशंखवंक्षणशिरः सुकपालानिति ·

अर्थ-ललाटकी हड्डी के टुकड़ाटुकड़ाहोजांय और वा परस्पर दूर होजाय-जुड़ने के काम के न रहैं- अथवा स्तनके बीचकी अथवा पीठकी अथवा शंख (कनपटी) की हड्डी-मस्तक की हड्डीटूटगई हो उस्को बैद्य त्यागदेय-॥

सावधानतानकरनेसें असाध्य तादिखातेहैं

सम्यक्संधितमप्यस्तिदुर्निक्षेपनिबंधनात्।
संक्षोभाद्वापियच्चलेद्धिक्रियांतच्चवर्जयेत् १०

अर्थ- हड्डी भले प्रकार जुड़वी गई हो उस्को अच्छीरीति से नराखै- अथवा अच्छी रीति से बांधे नहीं- अथवा उस्में किसीका धक्कालगने से फेरजैसे का तैसा हो जाता है और यह साध्य नहीं होय इस्को बैद्य त्यागदे॥

अस्थिविशेषकंकेभग्नबिशेष कहतेहैं

तरुणास्थीनिनम्यन्तेभिद्यंते नलकानिच। कपालानिविभज्यंतेस्फुटंतिरुचकानिच ११

अर्थ- हड्डी नव जाती है- याटेढ़ी होजाय- नलकाकी हड्डी चिर जाती है कपाल फूटकर टूकटूक होजाय- रुचकर (दंतादिक) हड्डी टुकड़ा होकर गिरपरे॥÷॥ इति भग्न निदानं समाप्तम्॥÷

नाड़ीव्रणनिदान संप्राप्ति

यः शोथमाममतिपक्वमुपेक्षते ऽज्ञोयोवाव्रणंप्रचुरपूयमसाधुवृत्तः। अभ्यन्तरंप्रविशतिप्रविदार्यतस्य स्थानानिपूर्वविहितानिततः सपूयः॥१॥ तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरिष्य

तेतुनाड़ीवयद्वहतितेनमतानुनाड़ी ॥ ÷ ॥

अर्थ- जो मूर्ख मनुष्य पकेभरा फोड़ा कोकचा समझकर उपेक्षा करे किंवा बहुत राध पड़जाय-उस फोड़ा की उपेक्षा करदे-तबवो बढ़ीहुई राध पूर्वोक्त त्वङ्मांसादिकस्थान में जायकर उन्को भेद कर वो बहुत भीतरी पहुंच जाय-तब एक मार्ग कर उसमें वह राध नाड़ीके समान वहे इसीसे इस्को नाड़ी व्रण कहते हैं ॥

संख्यारूपसंप्राप्ति

दोषैस्त्रिभिर्भवतिसापृथगेकशश्चसंमूर्च्छि
तैरपिचशल्यनिमित्ततोऽन्या २

अर्थ- प्रथक् २ दोषों सें ३ सन्निपात सें १ और शल्य सें १ ऐसे नाड़ी व्रण पांच प्रकारकाहै ॥

वातनाड़ीव्रणकेलक्ष-

तत्रानिलात्पुरुषसूक्ष्मसरूक्षसशूला । फेना
नुविद्धमधिकंस्रवतिक्षपासु

अर्थ- बादी सें नाड़ी व्रणकामुखरूखा-तथा छोटा होय-वशूल होय- उसमें से फेन युक्त स्राव होय-रात्रमें अधिकस्रवे ॥

पित्तकेनाड़ीव्रणके-

पित्तात्तुतृट्ज्वरकरीपरिदाहयुक्ता पीतंस्र
वत्यधिकमुष्णमहःसुचापि ३

अर्थ- पित्तके नाड़ी व्रण में प्यास- ज्वर और दाह-होय-उसमें से पीले रंगका और बहुत राध गरम स्रवे औरदिन में स्राव अधिक होय ॥

कफजनाड़ीव्रणकेलक्ष-

ज्ञेयाकफाद्बहुघनार्जुनपिच्छिलास्रा स्तब्धा
सकंडुरुजारजनीप्रवृद्धा ॥

अर्थ-कफज नाड़ी व्रण में सफेद·गाढ़ी·चिकनी राध निकले खुजली चले रात में स्राव बहुत होय·॥

संनिपातजनाड़ीव्रणकेलक्ष·

दाहज्वरश्वसनमूर्च्छनवक्त्रशोषा यस्यांभवन्तिविहितानिचलक्षणानि ॥ ४ ॥ तामादिशेत्पवनपित्तकफप्रकोपात् । घोरामसुक्षयकरीमिवकालरात्रिम् ॥

अर्थ- जिसनाड़ीव्रण में दाह·ज्वर·श्वास·मूर्च्छा·मुखका सूखना और पूर्वोक्त लक्षण होंय·उसको त्रिदोष कोप जन्यनाड़ीव्रण जानना यह भयंकर प्राणनाश करने वाली काल रात्री के समान जाननी ॥

शल्यजनाड़ी·

नष्टंकथंचिदनुमार्गमुदीरितेषु स्थानेषुशल्यमचिरेणगतिंकरोति । सांफेनिलंमथितमुष्णमसृग्विमिश्रंस्रावंकरोतिसहसासरुजंचनित्यम् ॥ ५ ॥

अर्थ- किसी प्रकार सैं शल्य (कंटकादि) उक्तस्थानमेंपहुंचकर टूटजाय·तो नाड़ीव्रणको उत्पन्न करै·उसनाड़ीव्रणमें सैं झाग मिला तथा रुधिर युक्त मथे के समान·गरम नित्यस्राव बहै तथा पीड़ा होय ॥

साध्यासाध्यलक्षण

नाड़ीत्रिदोषप्रभवानसिद्ध्येच्छेषाश्चतस्रःखलुयत्नसाध्याः ६॥

इतिनाड़ीव्रण निदानम्

अर्थ- त्रिदोषजन्य·नाड़ीव्रण साध्य नहीं होय·बाकीकेचा

र नाड़ी व्रण यत्न करने सैं साध्य होते हैं॥ ÷॥ इतिश्रीमाधव भावार्थ दीपिकायांनाड़ी व्रणरोगनिदानम्

भगंदरनिदान

गुदस्यद्व्यगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिटिकार्त्तिकृत्
भिन्नोभगन्दरोज्ञेयः सचपंचविधोमतः १॥

अर्थ- गुदाके समीप दो अंगुल ऊंची पिछाड़ी एक पिडिका (फुंसी) होय·उस्में बहुत पीड़ा होय· और वही पिडिका फूटजाय इसी सै उस्को भगंदर रोग कहते हैं (सुश्रुतने) इसकी निरुक्ति इस प्रकार करी है· यथा- गुदभगवस्ति·प्रदारणात् भगंदर इति· भगशब्द इसजगे गुदावाचक है·सो (भोजने) कहाबी है ॥ ÷॥ ((भगंपरिसमंताच्च गुदवस्तिस्तथैवच भगवद्दारयेद्यस्मात्तस्मात् ज्ञेयोभगंदरः)) इति·यह भगंदर रोग पांच प्रकार का है·यह संख्या कहना·केवलरक्तज·द्वंद्वज·भगंदर संभावना निवारणार्थ जानना·इस्के प्रूवरूप ग्रंथान्तरों सैं लिखते हैं·॥

पूर्वरूप

कटीकपालनिस्तोददाहकंडूरुजादयः॥ भ
वन्तिपूर्वरूपाणिभविष्यतिभगंदरे २

अर्थ- कमर में·कपालास्थी में सुई सीचुभे·दाह होय·खुजली चले·पीड़ाहोय·यलक्षण जब भगंदर होनहार होय है·तब होते हैं·इस जगे वी कपालास्थी पूर्वोक्त जानना अर्थात् जो नाड़ी व्रण में कहि आये हैं·॥

शतपोनकके लक्षण

कषायरूक्षैरतिकोपितोऽनिलस्त्वपानदे

शोपिडिकांकरोतिया । उपेक्षणात्पाकमु
पैतिदारुणं रुजाचाभिन्ना ऽरुणफेनवाहि
नी ॥ ३ ॥ तत्रागमोमूत्रपुरीषरेतसांव्रणेरने
कैःशतपोनकंवदेत्

अर्थ- कषेले · और रूखे पदार्थ · खाने सैं वायु अत्यंत कुपित होकर गुदास्थान में जो पिटिका (फुंसी) प्रगट करे उनकी अपेक्षा करने सैं वे फुंसी पके और फूटजाय तव पीड़ा होय· तथा लाल·झाग मिली· राधवहे तथा उस्मे अनेक छिद्र होजांय उन छिद्रों में होकर· मूत्र·मल·औररेत (शुक्र) वहे चलनी केसे अनेक छिद्र होंय· इसी कारण इस रोगको (शतपोनक) ऐसे कहते हैं· शतपोनक नाम संस्कृतमें चलनीका है॥

उष्ट्रशिरोधरकेलक्षण

प्रकोपणैःपित्तमतिप्रकोपितंकरोतिरक्तां
पिडिकांगुदाश्रिताम् । तदाशुपाकाहिम
पूयवाहिनींभगंदरंउष्ट्रशिरोधरंवदेत् ४।

अर्थ- पित्त कारक पदार्थ खाने सें कुपित भया जो पित्त सो गुदा में लाल रंग की पिटिका उत्पन्न करे· वो शीघ्र पककर उनमें सैं गरम राध बहे· ये पिटिका (फुंसी) ऊंट की नाड़ केसमान होय·इसीसे इस्को (उष्ट्रशिरोधर) नाम कहते हैं·॥

परिस्रावीभगंदरकेलक्ष·

कंडूयनोघनस्रावीकठिनोमन्दवेदनः । श्वे
तावभासःकफजःपरिस्रावीभगंदरः ५

अर्थ- कफ से प्रगट भया भगंदर उस्में खुजली चले- तथा-

उस्में से गाढ़ो राध वहै · तथा वो पिटका कठिन होय उस्में पीड़ा थोड़ी होय उन्का वर्ण सपेद होय ॥

शंबूकावर्त्तकेलक्षण

वहुवर्णरुजास्रावाः पिडिकागोस्तनोपमाः ॥
शंबूकावर्तवन्नाडी शंबूकावर्त्तकोमतः ६ ।

अर्थ- जिस्में गौके थन के समान अनेक पिड़का होंय उन्के रंग पीड़ा और स्राव · अनेक प्रकार का होय और व्रण शंख के आंटे के समान · गोल होय इस्को (शंबूकावर्त्त) कहते हैं ॥

उन्मार्गिभगंदरकेलक्ष·

क्षताद्गतिः पायुगताविवर्धते ह्युपेक्षणात्स्युः
क्रमयोविदार्यते । प्रकुर्वतेमार्गमनेकधासु
रैर्विर्व्रणैस्तदुन्मार्गिभगंदरंवदेत् ७

अर्थ- गुदा में कांटे आदि के लगने सें क्षत (घाव) होजाय उस घावकी उपेक्षा करने सें उस्में कृमि पड़जांय वो कृमिउस क्षत को बिदारण करैं औसे वो घाव गुदा पर्यंत बढ़कर पहुंच · तथा कृमि उस्में अनेक मुख करलेवें इस्को (उन्मार्गि) भगंदर कहते हैं ॥

साध्यासाध्यलक्षण

घोराः साधयितुंदुःखाः सर्वएवभगंदराः तेष्वसाध्यस्त्रिदोषोत्थः क्षतजश्चविशेषतः ८

अर्थ- सव भगंदर दुःसाध्य हैं · तिन्में भी त्रिदोषका भगंदर असाध्य है · और क्षतज विशेष कर्के असाध्य है ॥

असाध्यकेलक्षण

वातमूत्रपुरीषाणिक्रमयः शुक्रमेवच । भ

गंदरात्प्रस्रवन्तिनाशयन्तितमातुरम् ॥ ८ ॥

॥ इतिभगंदरनिदानम् ॥

अर्थ- जिस भगंदर में से अधोवायू-मूत्र-विष्ठा-कृमि-और-वीर्य बहै वो रोगी का नाश होय ॥ इतिभगंदरनिदानं समाप्तं ॥

उपदंशनिदानम्

कारण

हस्ताभिघातान्नखदन्तघाताद्धावनाद्वत्यति सेवनाद्वा । योनिप्रदोषाच्चभवंतिशिस्नेपंचोप दंशाविविधोपचारैः १

अर्थ- हाथ की चोट लगने से-नख-दांत के लगने से-अच्छीरीसें न धोने सें-अत्यन्त स्त्री संग के करने से अथवा योनि के दोष सें-अर्थात् दीर्घ-करै-बाल जिस्के ऊपर होंय-अथवा खारी गरम जल के धोने सें-ब्रह्म चर्यवाली स्त्री से गमन करने सें इत्यादिकारणों सें लिंग में उपदंश (गर्मी का रोग) होय है वो पांच प्रकार का है-॥ १॥

वातोपदंशकेलक्ष-

सतोदभेदस्फुरणैःसकृष्णैः स्फोटैर्व्यवस्येत्पवनोपदंशं ॥

अर्थ- लिंगेन्द्री के ऊपर काले फोड़ा उठें उन्में चोटने कीसी पीड़ा होय-तोड़ने कीसी पीड़ा होय-और स्फुरण ए लक्षण वातोपदंश के जानने ॥

पित्तोपदंशवरक्तोपदंशकेल-

पीतैर्बहुक्लेदयुतैःसदाहैः पित्तेनरक्तात्पिशितावभासैः॥२॥

अर्थ- पित्तके उपदंश करके पीले रंगके फोड़ा होते हैं उन्मे सें पानी बहुत बहै· दाह होय· रुधिरके उपदंश से मांस के समान लाल रंग के फोड़ा होंय ॥ २ ॥

कफोपदंशकेलक्षण

सकंडुरैः शोथयुतैर्महद्भिः शुक्लैर्घनस्राव युतैःकफेन ॥

अर्थ- कफ के उपदंश करके सपेद· मोटे· फोड़ा होय· उन्में खुजली चले· सूजन होय· और गाड़ी राध बहे ॥

सन्निपातोपदंशकेलक्ष·

नानाविधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रि मलोपदंशं ॥ ३ ॥

अर्थ- जिस उपदंश में अनेक प्रकार का स्राव होय· पीड़ा होय· यह त्रिदोषज उपदंश असाध्य है· ॥

असाध्यलक्षण

विशीर्णमांसंकृमिभिःप्रजग्धंमुष्कावशेषं परिवर्जयेत्तु ॥

अर्थ- जिस उपदंश करके लिंग का मांस गल गया हो· और कृमि लिंग को खाय जावै केवल अंड कोश मात्र रहि जाय ·उस्को वैद्य त्याग दे ॥

असाध्यलक्षण

संजातमात्रेणकरोतिमूढः क्रियांनरोयोविषयेप्रसक्तः । कालेनशोथकृमिदाहपाकैर्विशीर्णशिश्नोम्रियतेसतेन ४

अर्थ- उप दंश के होते ही जो मूर्ख मनुष्य विषय में आसक्त होकर इस्का उपचार नहीं करे ·उस्का लिंग थोड़े दिन में स

जन और कोड़ पड़कर और उसमें दाह और पाक वीहोय· पीछे वो गलजाय· ऐसारोगी मरजाय· ॥

लिंगवर्त्तिकेलक्षण

अंकुरैरिवसंघातैरुपर्युपरिसंस्थितैः॥ क्रमेणजायतेवर्त्तिस्ताम्रचूड़शिखोपमा ५ कोषस्याभ्यन्तरेसंधौसर्वसंधिगतापिवा। लिंगवर्त्तिरितिख्यातालिंगार्शइतिचापरे ६ कुलत्थाकृतयःकेचित्केचित्पद्मदलोपमाः। मेढ्रसंधौन्नृणांकेचित्केचित्सर्वाश्रयाःस्मृताः ७ रुजादाहार्त्तिबहुलास्तृष्णा तोदसमन्विताः॥ स्त्रीणांपुंसांचजायंतेह्युपदंशाःसुदारुणाः ८।

इतिउपदंशनिदानम्

अर्थ– लिंगके ऊपर मांसके अंकुर एक के ऊपर एक प्रगट होय· मुरगा की चोटीके समान· कोशकी भीतर की मणिमें अथवा सर्व संधीन्में· इस रोग को (लिंगवर्त्ति) ऐसे कहते हैं· और कोइ लिंगार्श कहते हैं· यह त्रिदोष जन्य है· इसमें मांस के अंकुर कुल्थी के समान· और कोई पद्मदल के समान· किसी के अंडकोशकी संधी में किसी के सर्व आशयमें होते हैं· पीड़ा· दाह· बहुत होय· प्यास· नोचनेकीसी पीड़ा होय· स्त्री और पुरुषों के यह उपदंश घोर पीड़ा कारक होते इसमें (कुलित्थाकृतय) यहां सें लेकर (स्त्रीणांपुंसांचजायन्ते) यहां तक पाठ क्षेपक है माधव का नहीं और स्त्रीन्के भी गरमी का रोग होय है यह मत सुश्रुत का है परन्तु यह आर्ष पाठ नहीं हैं॥

इतिउपदंशनिदानंसमाप्तम्

फिरंगरोगनिदान

उपदंशरोगकाहीभेद फिरंगरोग है उस्को ग्रन्थान्तर सें लिखतेहैं

फिरंगशब्दकीनिरुक्ति

फिरंगसंज्ञकेदेशेवाहुल्येनेषयद्भवेत्। तस्मा
त्फिरंगइत्युक्तोव्याधिर्व्याधिविशारदैः

अर्थ-फिरंगीन्के देशमें यहरोग बहुधा करके होय है· इसी से वैद्य इस्को फिरंगरोग कहते हैं ॥

विप्रकृष्टनिदान

गंधरोगफिरंगोयंजायते देहिनांध्रुवम्। फि
रंगिणोतिसंसर्गात्फिरंगिण्याप्रसंगतः ॥ भ
वेत्तंलक्षयेत्तेषांलक्षणैभिषजांवरः।

अर्थ- गंधरोग यह फिरंगरोग है सो मनुष्यों के अंग्रेजों के संसर्ग सें अथवा फिरंगिणी (मेम) के प्रसंग करने सें होय है इस्को इस्के जो आगें लक्षण कहेंगे उन्सेजाने ॥

रूपमाह

फिरंगस्त्रिविधोज्ञेयोवाह्य आभ्यन्तरस्तथा ॥
वहिरन्तर्भवश्चापितेषांलिंगानिचब्रुवे ॥

अर्थ- फिरंगरोगतीन प्रकारका १ बाहरहोय २ भीतर होयहै औरती सरा बाहरभीतरदोनोंस्थानमें होयहै उन्के लक्षण कहता हूं ॥

तत्रवाह्यःफिरंगःस्याद्विस्फोटसदृशाल्परुक्
स्फुटितो व्रणवद्वेद्यःसुखसाध्योपिसस्मृतः ॥

अर्थ- तहां वाहर का फिरंग रोग फोड़ा के समान थोड़ी पीड़ा कर्त्ता होय है और फोड़े के समान ही फूटे है·यह सुखसाध्यहै

संधिष्वाभ्यन्तरःसस्यादुभयोर्लक्षणैर्युतः
कष्टदोऽतिचिरस्थायीकष्टसाध्यतमश्चसः

अर्थ-और जो फिरंग सन्धिन्के भीतर होय · अथवा दोनोंबा हर औरभीतर की फिरंगकेलक्षण मिलते होंय वो अतिकष्टदेने वाली बहुत कालतक रहने वाली कष्ट साध्य है ॥

फिरंगरोगके उपद्रव

कार्श्यंबलक्षयोनासाभंगोवन्हेश्चमंदता। अ
स्थिशोषोऽस्थिवक्रत्वंफिरंगोपद्रवा अमी ॥

अर्थ- देह कृश होजाय · बलनाश · नाक बैठ जाय · अग्निमंद होजाय · हड्डीसूखें · तथाहड्डी टेढी होजायगी फिरंगके उपद्रव हैं ॥

साध्यासाध्यकष्टसाध्य·

वहिर्भवोभवेत्साध्योनूतनोनिरुपद्रवः। आ
भ्यन्तरस्तुकष्टेनसाध्यःस्यादयमामयः। वहि
रंतर्भवोजीर्णः क्षीणस्योपद्रवैर्युतः। बोध्यो
व्याधिरसाध्योयमित्यूचुर्मुनयःपुरा

अर्थ- जो फिरंग बाहर होय नया· और उपद्रव रहित होय वो साध्य है और भीतर होय वो कष्ट साध्य है· औरजोबाहर·भीतर दोनों ठिकाने पर होय तथा पुराना पड़गया और उपद्रव युक्त होय· वो फिरंग रोग असाध्य है· फिरंग यह रोग बात का भेद जानना चाहिये · यह सुजाक· नाम से प्रसिद्ध है ॥

शूकदोषनिदान·

अक्रमाच्छेफसोवृद्धिंयोऽभिवांछतिमूढधीः
व्याधयस्तस्यजायन्तेदशचाष्टौचशूकजाः १

अर्थ- जो मंद बुद्धी वाला पुरुष शास्त्रोक्त क्रम के विना लिंग को मोटा करा चाहे वो विषकृमि का लिंग के ऊपर लेपादिक करे (अथवा जलयोग वात्स्यायन ऋषि के कहे उन

का साधन करे उसके १८ प्रकार के शूकज रोग होंयहैं १

सर्षपिकाकेलक्षण

गौरसर्षपसंस्थानाशूकदुर्भग्नहेतुका। पि
डिकाश्लेष्मवाताभ्यांज्ञेयासर्षपिकाचसा २

अर्थ- दुष्टजलजंतूका दुष्टरीति से लेप करने से कफवात कुपित होकर सुपेद सरसों के समान जो पिढिका (फुंसी) होय उस्को (सर्षपिका) कहते हैं ॥२॥

अष्ठीलाकेलक्षण

कोठनाविषमैर्भुग्नैर्वायुनाष्ठीलिकाभवेत् ॥

अर्थ- अप्रशस्त शूकों के लेप से वायु कुपित होकर करड़ी निहाई के समान होय और बिषम कहे कोई छोटी और कोई बड़ी और भुग्न कहे टेढ़े ऐसे शूक कहिये मांसांकुर तिन्सें व्याप्त होय इस्को (अष्ठीला कहते हैं ॥

ग्रथितकेलक्षण

शूकैर्यत्पूरितंशश्वद्ग्रथितंनामतत्कफात् ३

अर्थ- निरंतर शूकलेपके करने सें कफ सें लिंगेन्द्री के ऊपर गांठ पैदा होय उस्को (ग्रथित) कहते हैं ॥३॥

कुंभिकाकेलक्षण

कुंभिकारक्तपित्तोत्थाजांबवास्थिनिभाऽशुभा

अर्थ- रक्त पित्त से जामन की गुठली के समान काले रंग की पिढिका होय उस्को (कुंभिका) ऐसे कहते हैं ॥

अल्जीकेलक्षण

तुल्यजांत्वलजीविद्याद्यथाप्रोक्तांविचक्षणैः ४

अर्थ- यह पिढिका प्रमेह पिढिका में जो अल्जी नाम पिढिका कहि आये हैं उसके समान लाल-काले फोड़ान्सें व्याप्त

होय· तथा उस्के लक्षण पूर्वोक्त पिटिका केसे होंय हैं॥

मृदितकेलक्षण

मृदितंपीडितंयत्तुसंरब्धंवातकोपतः ॥

अर्थ- मूक पीड़ा होने के अनंतर लिंगको हाथों सें मीडने सें· अथवा· दाबने से वायू के कोप सें लिंग सूज जाय· ॥

सम्मूढपिटिकाकेलक्षण

पाणिभ्यांभृशसंमूढे संमूढपिटिकाभवेत्

अर्थ- लेप करने के अनंतर जब लिंग में खुजली चलैतब उस्को दोनों हाथों से खूब खुजावे तब एक मूढ़ (विनामुखकी) पिढका होय उस्को (संमूढपिटका) कहते हैं ॥

अवमंथकेलक्षण

दीर्घाव ह्य श्चपिटिका दीर्यन्तेमध्यतस्तु

याः।सोऽवमंथःकफासृग्भ्यांवेदनारोमहर्षकृत् ६

अर्थ- कफ रक्त से लंबी और अनेक तथा बीच बीच में· फूटी भई ऐसी जो पिटिका लिंग में होय उन्के होने सें रोमांच और पीड़ा होय· इस रोग को (अवमंथ) ऐसे कहते हैं॥

पुष्करिकाकेलक्षण

पित्तशोणितसंभूतापिटिकापिडिकाचिता।

पद्मकर्णिकसंस्थानाज्ञेयापुष्करिकाचसा ७

अर्थ- पित्त र क्त सै उत्पन्न भई पिटिका उस्के चारों तरफ अनेक छोटी छोटी फुंसी होंय· और वो कमल की भीतर की केसर के समान सब फुंसी होंय· उस्को (पुष्करिका) ऐसे कहते हैं।

स्पर्शहानिकेलक्षण

स्पर्शहानिंतुजनयेच्छोणितंशूकदूषितम्

अर्थ- शूक का लेप करने से रुधिर दूषित होकर त्वचा

का स्पर्श ज्ञान को नष्ट करै ॥

उत्तमाकेलक्षण

सुद्गमाषोद्गमारक्तारक्तपित्तोद्भवाश्रयाः। व्याधिरेषोत्तमानामअर्काजीर्णनिमित्तजः ८

अर्थ- अर्क का बारंबार लेप करनेसें रक्त पित्त कुपित होकर मूंग उरद के समान लाल फुंसी लिंगेन्द्री पै होंय उस्को (उत्तमा) कहतेहैं

शतपोनककेलक्षण

छिद्रैरणुमुखैर्लिंगंचित्तंयस्यसमंततः ॥ ९ ॥
वातशोणितजोव्याधिर्विज्ञेयः शतपोनकः ॥

अर्थ- जिस पुरुष के लिंगमें अनेक बारीक छिद्र हो जांय यह व्याधि वात शोणितसें प्रगट इस्को (शतपोनक) कहते हैं ॥

त्वक्पाककेलक्षण

वातपित्तकृतोयस्तुत्वक्पाकोज्वरदाहवान् १०

अर्थ- वात पित्तसें लिंगकीत्वचापकजाय और उसमें ज्वरदाह होयहै ॥

शोणितार्बुदकेलक्ष०

कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिःपिटिकाभिर्निपीडितम्
यस्यवास्तरुजाचोग्राज्ञेयंतच्छोणितार्बुदम् ११

अर्थ- जिस पुरुष की लिंगेन्द्रीके ऊपर काले लाल फोड़ा उत्पन्न होंय तथा उन्में पीड़ा होय उस्को (शोणतार्बुद कहते हैं ॥

मांसार्बुदकेलक्षण

मांसदोषेणजानीयादर्बुदंमांससंभवम् ॥ ॥

अर्थ- मांस दुष्ट होनेसें (मांसार्बुद) प्रगट होयहै ॥ * ॥

मांसपाककेलक्षण

शीर्यन्तेयस्यमांसानियस्यसर्वाश्चवेदनाः १२
विद्यात्तंमांसपाकंतुसर्वदोषकृतंभिषक् ॥

अर्थ-जिसकी इन्द्री का मांस गलजाय· और अनेक प्रकारको पीड़ा होय· (यह व्याधित्रिदोषज है) इसी सें इस व्याधी को (मांसपाक) कहते हैं ॥

विद्रधिकेलक्षण

विद्रधिंसन्निपातेनयथोक्तमभिनिर्दिशेत् १३

अर्थ- विद्रधि निदान में जो सन्निपात विद्रधि के लक्षण कहेहैं वोही यहां विद्रधि शूक के लक्षण जानने ॥

तिलकालककेलक्ष·

कृष्णानिचित्राण्यथवाशूकानिसविषाणितु।
पातितानिपचंत्याशुमेढ्रंनिरवशेषतः १४ का
लानिभूत्वामांसानिशीर्यंतेयस्यदेहिनः। स
न्निपातसमुत्थांस्तुतान्विद्यात्तिलकालकान् ॥

अर्थ- काले अथवा चित्र विचित्र रंगके से विष शूकों के लेप करने से तत्काल सर्व लिंग पक जाय· तथा सब मांस तिलके सदृश काला होकर गल जाय · इस त्रिदोषोत्पन्न व्याधी को - (तिलकालक) ऐसे कहते हैं

असाध्यशूकदोषकेल·

तत्रमांसार्बुदंयच्चमांसपाकश्चयःस्मृतः। वि
द्रधिश्चनसिद्ध्यंतियेचस्युस्तिलकालकाः १६

अर्थ- तिस शूक दोष में· मांसार्बुद· मांसपाक· विद्रधि और तिलकालक ये चार असाध्य हैं ॥

इति श्री माधवभावार्थ दीपिकायांमाथुरीभाषाटीकायां शूकदोषनिदानम्

कुष्ठनिदान

विरोधीन्यन्नपानानिद्रवस्निग्धगुरूणिच ॥
भजतामागतांच्छर्दिवेगाश्चान्यान्प्रतिघ्नताम् १
व्यायाममतिसंतापमतिभुक्त्वानिषेविणाम्
शीतोष्णलंघनाहारान्क्रमंमुक्त्वानिषेविणाम् २
घर्मश्रमभयार्त्तानांद्रुतंशीतांबुसेविनाम् । अ
जीर्णाध्यशनानांचपंचकर्मापचारिणाम् ३
नवान्नदधिमत्स्यादिलवणाम्लनिषेविणाम्
माषमूलकपिष्टान्नतिलक्षीरगुडाशिनाम् ४
व्यवायंचाप्यजीर्णेऽन्नेनिद्रांचभजतांदिवा ।
विप्रान्गुरून्धर्षयतांपापंकर्मचकुर्वताम् ५
वातादयस्त्रयोदुष्टास्त्वग्रक्तंमांसमंबुच । द्
दूषयंतिसकुष्टानांसप्तकोद्रव्यसंग्रहः । ६ अ
तःकुष्टानिजायंतेसप्तचैकादशैवच

अर्थ- विरोधी कहिये क्षीर मत्स्यादि · पतले · स्नेहयुक्त · भारी · ऐसे अन्नपान के सेवन करने से · रद्द के वेग को रोकने से और अन्य वेग कहिये · मल · मूत्रादि वेगों के रोकने से · भोजन करके अत्यंत व्यायाम (दंडकसरत) अथवा अति संताप - (सूर्यकाताप) सहने सें · शीत · गरमी · लंघन · और आहार इन्के सेवन उक्त क्रम छोडकर सेवन करने सें पसीना · श्रम · और भय · इन्सें पीड़ित होय और उसी समय सीतल जल पीवे इस कारण सै · अजीर्ण अन्न भक्षण करने से तथा भोजन के ऊपर भोजन करने सें वमन · विरेचन · निरूहन · अनुवासन · नस्य कर्म · इन पंच कर्म के करने समय अपथ्य करने सें · नया अन्न · दही · मछली · खारी · खट्टा · पदार्थ के सेवन करने सैं · उड़द · मूरी · मिष्टान्न · (लड्डू · खजला · फेनीआ

दि) तिल · दूध · गुड़ · इन्के खाने सैं · अन्न के पच विना स्त्री संग करने सैं · तथा दिन में सोने सैं · ब्राह्मण · गुरू · इनका तिरस्कार करने सैं · पाप कर्म के आचरण करने से अैसे पुरुषों के · बातादिक तीनों दोषत्त्वचा · रुधिर · मांस · और जल इन्को दुष्ट कर कुष्टरोग (कोढ़) उत्पन्न करै · कुष्ट होने के बातादि तीनों दोष और त्वचादि दूष्य ये सात पदार्थ अवश्य कारण भूत हैं · इनसैंही अठारे प्रकारके कुष्ट होते हैं तिन्में सातमहा कुष्ट और ग्यारे क्षुद्र कुष्ट हैं ॥

कुष्टोंकोत्रिदोषजत्वभीहोनेसेदोषाधिक्यसेंवोसातप्रकारकेहैंसोकहतेहैं

कुष्ठानिसप्तधादोषैःपृथक्द्वंद्वैःसमागतैः
सर्वेष्वपित्रिदोषेषुव्यपदेशोऽधिकामतः ७

अर्थ- पृथक् २ दोषों करके ३ द्वंद्वज ३ और सन्निपात से १ सव मिलकर सात कुष्ट भए · सब कुष्ट त्रिदोष होने परभी जो दोष अधिक होय उसी से व्यवहार करना चाहिये अर्थात् · जिस दोष के लक्षण मिलें उस्को उसी दोषका कुष्ट कहा होय · सो जानना · जैसे (वातेनकुष्टंकापालं) अर्थात् वाताधिक्य होने सैं कापाल कुष्ट होय है · ॥

कुष्टकेपूर्वरूप

अतिश्लक्ष्णखरस्पर्शस्वेदास्वेदविवर्णता ।
दाहःकंडूस्त्वचिस्वापस्तोदःकोष्टोन्नतिंक्रमः ८
व्रणानामधिकंशूलंशीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थितिः ९
रूढानामपिरूक्षत्वंनिमित्तेऽल्पेपिकोपनम्
रोमहर्षोऽस्रजःकार्ष्ण्यंकुष्टलक्षणमग्रजम्

अर्थ- जिस ठिकाने कुष्ट होनहार होय उस अंग हाथों सैं चिकना मालूम होय अथवा खरदरा मालूम होय· उस ठिकाने पसीना आवै· अथवा नहीं आवै· तथा उसी ठिकाने का वर्ण पलटजाय दाह· होय· खुजली चलै· त्वचा को स्पर्श मालूम न होय· नोचने कीसी पीड़ा होय· बिर्रैल माखी के काटने के सदृश चकत्ता उठे· परिश्रम करे विना देह में श्रम होय· व्रण में पीड़ा अधिक होय· उन फोडों की उत्पत्ति शीघ्र होकर बहुत दिवस पर्यंत रहै· जब फोड़ा भरने को होय तब रूखे रहें उन्का थोड़े निमित्त होने सें कोप होय· रोमांच होय· ओर रुधिर काला पड़जाय· ए कुष्ट होने के पूर्व रूप होते हैं· ॥

सप्तमहाकुष्टोंकेलक्ष·

कृष्णारुणकपालाभंयद्रूक्षंपरुषंतनु। का
पालंतोदबहुलंतत्कुष्टंविषमंस्मृतम् ११

अर्थ- (कपालकुष्ट) जो काले· तथा लाल· खीपड़ा के सदृश· रूखे· कठोर· पतले· ऐसे त्वचा वाले· तथा नोचने कीसी पीड़ा युक्त होय वे दुश्चिकित्स्य हैं· अर्थात् वे चिकित्सा करने में कठिन हैं· ॥

औदुंबरकुष्टकेलक्ष·

रुग्दाहरागकंडूभिःपरीतंलोमपिंजरम्। उ
दुंबरफलाभासंकुष्टमौदुंबरंवदेत् १२

अर्थ- (औदुंबरकुष्ट) यह · शूल· दाह· लाल· और खुजली· इन्सें व्याप्त होय· इस्में बाल कपिल वर्ण के होंय· तथा ये गूलर फलके समान होंय· ॥

मंडलकुष्टकेलक्षण

श्वेतरक्तंस्थिरंस्त्यानंस्निग्धमुत्सन्नमंडलम्

रूक्षमन्येनसंयुक्तंकुष्टंमंडलमुच्यते १३

अर्थ- (मंडलकुष्ट) सपेद· लाल· कठिन· गीला· चिकना· जिस्का आकार मंडल के सदृश होय· तथा एक दूसरे सै मिला होय· असा यह मंडल कुष्ट कष्टसाध्य है ॥

ऋष्यजिव्हकुष्टलक्ष·

कर्कशंरक्तपर्यंतमन्तःश्यावंसवेदनम् । यद्द

—— क्ष जिव्हासंस्थानमृक्षजिव्हंतदुच्यते १४

अर्थ- (ऋष्यजिव्हकुष्ट) कठोर· अंत विषे लाल होय· बीच में काला होय· पीड़ा करे· तथारीछकीजीभके समान होय

पुंडरीककुष्टकेलक्ष·

सश्वेतंरक्तपर्यंतंपुंडरीकदलोपमम् । सोत्से

धंचसरागंचपुंडरीकंप्रचक्षते ॥ १५ ॥

अर्थ-(पुंडरीककुष्ट) जोकुष्ट पुंडरीक (कमल) पत्रकेसमान सपेद होय और उस्के अंतभाग लाल होय· यत्किंचित् ऊंचा निकल आवे· और मध्यमें थोड़ा लाल होय· ॥

सिध्मकुष्टकेलक्ष·

श्वेतंताम्रंचतनुयद्रजोघृष्टंविमुंचति । प्राये

णोरसितत्सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् १६

अर्थ- (सिध्मलक्षण) सपेद· लाल· पतला· खुजाने सैं भूसी सी उड़े· यह विशेष करके छाती में होय· घीया के फूलके आकार होय ॥ १६ ॥

काकुणकुष्टकेलक्षण

यत्काकणंतिकावर्णसपाकंतीव्रवेदनम् ।

त्रिदोषलिंगंतत्कुष्टंकाकणंनैवासिध्यति १७

अर्थ-(काकणकुष्ट) जोचिरमिठी के समान लाल· अर्थात् ची

च में काला होय· और ओरपास लाल होय · अथवा बीच में लाल होय· और ओर पास काला होय· किंचित् पका· तीव्र पीड़ा युक्त जिस्में तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों यहकुष्ट अच्छा नहीं होय·॥

ग्यारेक्षुद्रकुष्टोंकेल·

अस्वेदनंमहावास्तुयन्मत्स्यशकलोपमम्।
तदेककुष्टंचर्माख्यंबहलंहस्तिचर्मवत् १८

अर्थ-(चर्मकुष्ट) पसीनारहित· मोटी जगे व्यापने वालाम छली की त्वचा समान अर्थात् अभ्रक के पत्र समान गोलगोल होय · और जिस्का चर्म हाथी के चर्म समान मोटा और कठोर होय उस्को चर्म कुष्ट कहते हैं ॥१८॥

किटिभकुष्टकेलक्ष·

श्यावंकिणखरस्पर्शंपरुषंकिटिभंस्मृतम्।

अर्थ-(किटिभकुष्ट·) नीलवर्ण· ब्रण की चटके समान· कठोरस्पर्श मालूम होय- और परुष कहिये रूक्ष होय ॥

वैपादिककुष्टकेल·

वैपादिकंपाणिपादस्फोटनंतीव्रवेदनम् १९

अर्थ-(वैपादिक) जिस्में हाथ की हलेली· और पैरकी तरवा फटजाय· और पीड़ा बहुत होय· इसबिपादिका को बिबाइ नहीं जानना क्योंकि बिबाई केवल पैर में ही होती है· औरबिवाई को शास्त्र में पाददारी कहते हैं· और बिपादिका में हाथ पैरों में फुंसी स्याम रंगकी होंय हैं · और वे फुंसी चुचाती हैं · तथा खुजाती है· इसी से पाददारी· भिन्न· और बिपादिका भिन्न है·॥

अलसकुष्टकेलक्षण

कंडूमद्भिः सरागैश्च गंडैरलसकं चितम् ॥

अर्थ-(अलसकुष्ट) इस कुष्ट में पीड़ा बहुत होय-और जि स्में पिड़का पित्ती के समान बहुत होय- और लाल होय-इसें बहुत से मूर्ख बैद्य पित्ती की शंका करते हैं ॥

दद्रूमंडलकुष्टकेलक्षण

सकंडूरागपिटिकं दद्रूमंडलमुद्गतम् २०

अर्थ-(दद्रुमंडलकुष्ट) इसें- खुजली होय- लाल होय- औ र फोड़ा होय- और ये ऊंचे उठ आवें ये मंडल के आकार गोल उत्पन्न होंय- इसी से इस्को दद्रु मंडल कहते हैं ॥

चर्मदलकुष्टकेलक्षण

रक्तं सशूलं कंडूमत्स्फोटं यद्दलयत्यपि। तच्च मंदलमाख्यातमस्पर्शासहमुच्यते २१

अर्थ-(चर्मदलकुष्ट) यह लाल हो- शूल युक्त- खुजलीयु क्त- फोड़ान्सें व्याप्त होकर फट जाय- इस्पे हाथ लगानेसे स हा न जाय- इस्में त्वचा फट जाय- ॥

पामाकुष्टकेलक्ष-

सूक्ष्माबह्व्यः पीडकाः स्रावबत्यः पामेत्युक्ताः कंडुमत्यः सदाहाः।

अर्थ-(पामाकुष्ट) जो पिटिक- छोटी होय- और बहुत हो य-उन्में से स्राव होय- तथा खुजली चले- और दाह होय-इ स कुष्ट को पामा कहते हैं ॥

कच्छुकुष्टकेलक्षण

सैवस्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेताज्ञेया पाण्योः क च्छुरुग्रास्फिजोश्च २२॥

अर्थ-(कच्छुकुष्ट) वोही पामा· मोटे फोडान्कर्के ·तथा तीव्र दाह युक्त होय· और हाथों में होय उस्को कच्छू कहते हैं॥

उग्रा ·यह कमर में होय है·

विस्फोटककुष्टकेल·

स्फोटाःश्यावारुणाभासाविस्फोटाःस्युस्तनुत्वचः

अर्थ-(विस्फोटक) जो फोड़ा काले· वा· लाल रंगके होंय और जिन्की त्वचा पतली होय-उस्को विस्फोटक कहते हैं॥

शतारुकुष्टकेलक्ष·

रक्तंश्यावंसदाहार्तिंश तारुस्याद्बहुव्रणम् २३

अर्थ-(शतारू) जो लाल होय· स्याम होय· जलन होय· तथा शूल हो· तथा जिस्में अनेक फोड़ा होंय उस्को शतारू कुष्ट कहते हैं·॥

विचर्चिकाकेलक्षण

सकंडूःपिटिकाश्यावा बहुस्रावाविचर्चिका॥

अर्थ-(विचर्चिका) खुजली युक्त - काले रंग की जो फुंसी (माला के समान) होय· तथा उस्में सें स्राव बहुत होय· उस्को बिचर्चिका कहते हैं

चर्म कुष्ट सें लेकर· विचर्चिका कुष्ट पर्यन्त १२ कुष्ट होते हैं और पीछे क्षुद्र कुष्ट ११ कहे हैं· ऐसी कोई शंका करै उस्के निमित्त कहते हैं· बिचर्चिका पैरों में होकर· फूटकर अर्थात् बिपादिका होय हैं· ऐसे कहने सें संख्या नहीं बढ़े इस बिषय में (भोजका) यह मत है·॥

बातजादिकुष्टोंकेलक्ष·

खरंश्यावारुणंरूक्षंवातात्कुष्टंसवेदनम् २४।

पित्तात्प्रकुपितंदाहरागस्रावान्वितंस्रुतम् ✦।

कफात्क्लेदि घनंस्निग्धंसकंडूशैत्यगौरवम् २५
द्विलिंगंद्वंद्वजंकुष्टंत्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥

अर्थ-(वायूके) योग से कुष्ट खरदरा·कालेरंगका· अथवाला लवण रूखा और पीड़ा युक्त ऐसा होय है·

पित्तके- योगसे· कुपित कुष्ट में·दाह· लाली· और स्राव युक्त होय है· ॥

कफके- योगसे· क्लेद युक्त ·सघन · चिकना· खुजलीयुक्त शीतल और भारी· ऐसा होय है· ॥

द्वंद्वज - कुष्ट दो दोषों के लक्षण होते हैं

सान्निपातिक - कुष्ट में तीन दोषों के लक्षण होते हैं·

रसादिसप्तधातुगतकुष्टोंके क्रमसेंलक्षण

त्वक्स्थेवैवर्ण्यमंगेषु कुष्टेरौक्ष्यंचजायते।त्व
क्स्वापोरोमहर्षश्चस्वेदस्यातिप्रवर्तनम् २६

अर्थ-रसधातुगत कुष्ट होनेसें अंगका वर्ण पलटजायहै· अंग रूखाहोय·त्वचाशून्य होय·रोमांचहों·औरपसीना बहुत आवे॥

रक्तगतकुष्टकेलक्ष·

कंडूर्विपूयकश्चैवकुष्टेशोणितसंश्रये ॥ ॥

अर्थ-कुष्टरक्तगत होने सें खुजली·औरराध बहुत होय· ॥ ॥

मांसगतकुष्टकेलक्षण

बाहुल्यंवक्त्रशोषश्चकार्कश्यंपिडिकोद्गमः।
तोदःस्फोटस्थिरत्वंचकुष्टेमांससमाश्रिते २७

अर्थ- मांसगतकुष्ट होनेसें मुख बहुत सूखे अंग में कर्कशपना होय· देहमें फुंसी पैदा होंय· सुई नोचने कीसी पीड़ाहोय· फोड़ा होय· वे बहुत दिन रहैं· ॥

मेदोगतकुष्टकेलक्ष·

कौण्यंगतिक्षयोंऽगानां संभेदः क्षतसर्पणम्
मेदःस्थानगते लिंगं प्रागुक्तानि तथैवच २८

अर्थ- कौण्य कहै हाथ गिर पड़े· चलने की शक्ति मारी जाय· त्वड फूटन होय· घाव फैल जाय· और पूर्वोक्त लक्षण (रसरक्त· मांस गत कुष्ट के लक्षण) होंय·

अस्थिमज्जागतकुष्टकेल·

नासाभंगोऽक्षिरागश्च क्षतेषु कृमिसंभवः। स्वरोपघातश्च भवेदस्थिमज्जासमाश्रिते ॥ २९ ॥

अर्थ· अस्थि (हड्डी) और मज्जागत कुष्ट होने से नाक गिर परे· नेत्र लाल होंय· घावमें कीड़ा पड़ जांय· स्वर बैठ जाय ए लक्षण होंय ॥

शुक्रार्त्तवगतकुष्टकेल·

दंपत्योः कुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः
यदपत्यं तयोर्जातं ज्ञेयं तदपि कुष्टितम् ॥ ३० ॥

अर्थ- जिस स्त्री पुरुषों के रुधिर· शुक्र कुष्टाधिक्य सें दुष्ट होय· उस दुष्ट बीर्य और रज सें प्रगट भई जो संतान सोभी कोढ़ी होती है· इस जंगे दुष्ट भए शुक्र· और आर्त्तव सर्वथा बीजत्व नष्ट न होने से संतान के करने वाले होते हैं· और जीवसंक्रमण काल में कदाचित् बीज दुष्ट होय तो· विषके कीड़ा के न्यायकरके· संतान प्रगट होती है अर्थात् जैसे विष प्राणीन के प्राण का नाश कहै परंतु उस्में भी विषका कीड़ा प्रगट होता है· और वो उस्से नहीं मरता है· यह वाग्भट्ट का मत है·

साध्यादिभेद

साध्यंत्वग्रक्तमांसस्थं वातश्लेष्माधिकं चयत्

मेदसिद्धंद्वजंयाप्यंवर्ज्यंमज्जास्थिसंश्रितम्।
३१ क्रमिहल्लासमन्दाग्निसंयुक्तंयत्त्रिदोषजम्
प्रभिन्नंप्रस्रुतांगंचरक्तनेत्रंहतस्वरम् ॥ ३२ ॥
पंचकर्मगुणातीतंकुष्टंहंतीहकुष्टिनम् ॥

अर्थ- रस-रुधिर-मांस इन धातून्के पर्यन्त गराजे कुष्टवो सा ध्य होते हैं तथा- जिस कुष्ट में वायू और कफ प्रधान होंय-वो भी साध्य है- और मेदो धातु गत कुष्ट तथा द्वंद्वज कुष्ट याप्य जनना- मज्जा अस्थि इनदोनों धातु में कुष्ट पहुंच गया हो- तथा जो शुक्र गत हो वो कुष्ट असाध्य है तथा जिस कुष्ट में क्रमि-व मन- मन्दाग्नि- इन कर्के युक्त होय- तथा त्रिदोषज होय वो असाध्य हैं जो कुष्ट फूटकर बहने लगे- तथा जिस कुष्ट सें रोगी के नेत्र लाल होंय- अथवा स्वर बैठ गया होय- और व मन विरेचनादि पंचकर्म के गुण जिस पुरुष के होंय नहीं- ऐसा रोगी मरजाय- ॥

कुष्टमेंप्रधानदोषकेलः

वातेनकुष्टंकापालंपित्तेनौदुंबरंकफात्। मं
डलाख्यंविचर्चीचऋष्याख्यंवातपित्तजम्।
चर्मैककुष्टंकिटिभंसिध्मालसविपादिकाः
वातश्लेष्मोद्भवाःश्लेष्मपित्ताद्दद्रुशतारुषी। ३४
पुंडरीकंसविस्फोटंपामाचर्मदलंतथा। सर्वैः
स्यात्काकणंपूर्वत्रिकंदद्रुःसकाकणा ३५ पु
डरीकर्ष्यजिव्हेचमहाकुष्टानिसप्ततु ॥

अर्थ- बादी से कपाल कुष्ट- पित्त सैं- औदुंवर- कफ से मंड ल- और विचर्चिवात पित से ऋष्य जिव्ह- वात कफ से चर्म कुष्ट- किटिभ- सिध्म आलस- और विपादिका- कफ पि-

न्न से· दद्रु· शतारू· पुंडरीक· विस्फोटक· पामा· चर्मदल·
त्रिदोष से काकण कुष्ट होय है· पहिलेतीन (कपाल·उदुंबर
और मंडल·) दद्रू काकण· पुंडरीक· और ऋष्य जिव्ह ऐसात
महा कुष्ट जानने· ॥

किलासनिदान

कुष्टैकसंभवंश्वित्रंकिलासंचारुणंभवेत्।नि
र्दिष्टमपरिस्त्रावित्रिधातूद्भवसंश्रयम् ३६

अर्थ– कुष्ट होने के जो कारण (विरुद्धभोजनपापकर्मादि)
कहे हैं· उन्हीं कारण सें श्वित्र (सपेदकोढ़) और किलास·
(लालकोढ़) ये होते हैं· इन्में स्राव नहीं होय· तथा ये तीनधा
तून का आश्रय करके रहते हैं· (अर्थात् तीनदोष औररुधि
र·मांस·तथा मेद) इन्का आश्रय करके रहे हैं ॥

वातादिभेदसैंउनकेलक्ष·

वाताद्रूक्षारुणंपित्तात्ताम्रंकमलपत्रवत्।स
दाहंरोमविध्वंसिकफाच्छ्वेतंघनंगुरु ३७स
कंडुरंक्रमाद्रक्तमांसमेदस्सुचादिशेत्।वर्णे
नैवेदृगुभयंकच्छ्रंतच्चोत्तरोत्तरम् ३८

अर्थ– बादी सै रूक्ष· और लाल होय· पित्त सैं लाल कमलप
त्र के समान लाल होय· और उसमें दाह होय· उस्के ऊपर के बा
ल गिर पडें· कफ के योग सें वो कोढ़ सपेद· गाढ़ा· और भारी उ
स्में खुजली चले· इसी क्रम सैं रुधिर मांस· और मेद· का भी
ठिकाना जानना· (अर्थात्·) दोष रक्ताश्रित होने सैं· लाल
मांसाश्रित होने सैं तांमें के रंग और मेदाश्रित होने से सपे
द किलास होय है ॥

श्वित्रकेसाध्यासाध्यलक्ष·

अशुक्लरोमाबहलमसंश्लिष्टमथोनवम् । अ
नग्निदग्धजंसाध्यंश्वित्रंवर्ज्यमतोऽन्यथा ३९।

अर्थ- जिस श्वित्र कोढ़के ऊपर के वाल सपेदनभरा हों तथा जे पतले होकर आपस में मिले नहीं• तथा हों • तथा अग्निदग्ध नहोयतो श्वित्रकोढ़साध्यजाननायासे विपरीत असाध्य जानना•

किलासके असाध्यल•

गुह्यपाणितलोष्ठेषुजातमप्यचिरंतनम् । व
र्जनीयंविशेषेण किलासंसिद्धिमिच्छता ४०

अर्थ- गुदास्थान में• हाथों में • पैरों के तलवाओं में • होठों में प्रगट भया किलास कुष्ठ थोड़े दिनका होय तोभी यश मिलने को इच्छा वाला वैद्य छोड़ दे• ॥

सांसर्गिकरोग

प्रसंगाद्गात्रसंस्पर्शान्निश्वासात्सहभोजनात् ॥
सहशय्यासनाच्चापिवस्त्रमाल्यानुलेपनात् ४१
कुष्ठंज्वरश्चशोषश्चनेत्राभिष्यन्दएवच । औप
सर्गिकरोगाश्चसंक्रामन्तिनरान्नरम् ॥४२॥ ॥

अर्थ- मैथुनादि प्रसंग से• अथवा शरीर के स्पर्श से• श्वास के लगने सें • साथ बैठकर एक पात्र में भोजन करने सें • एक साथ एक सैया (पलंग) परलेने सें• तथा एक साथ मिल कर बैठने से • पासरहनेसे• धारणकरेवस्त्र कोधारण करने सेसूं घे पुष्प को सूंघने सें • अथवा पहरी हुई माला को• धारण क रनेसे • लगाये हुए चंदन में सें लगाने सें • कोढ़ ज्वरः धातुशो ष (अर्थात् खईकारोग) नेत्ररोग (आंसढ़रना) और औप सर्गिक रोग कहिये शीतलादिक • औरभूतोपसर्गादिक • येसं क्रामिक रोग• एक पुरुष से उड़कर दूसरे मनुष्यके हो जाते है• इ

सो से पूर्वोक्त रोगी न्का प्रसंगादिक न करै + और कुष्टरोगी मरैतौफिर उस्के दूसरेजन्म में यह दुष्ट रोग होय है ·

यथा

म्रियतेयदिकुष्टेनपुनर्जातस्यतद्भवेत् । ना
तोनिंद्यतरोरोगोयथाकुष्टंप्रकीर्तितम् ॥

अर्थ- इसी सैं इस कुष्ट रोगके समान और दूसरा निंद्यरोग नहीं हैं · कुष्ट रोग की निरुक्ति · (कुत्सितं तिष्ठतीतिकुष्टं) कुष्टंभेषज रोग योरिति (हेमे) + इतिश्री पण्डितदत्तराम माथुर प्रणीत माधव भावार्थ · दीपिका माथुरी भाषाटीकायां कुष्ठ रोग समाप्तिमगमत् ॥ शुभम् ·

शीतपित्तनिदान

संप्राप्ति

शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदुष्टौकफमारुतौ । पि
त्तेनसहसंभूयबहिरंतर्विसर्पतः १

अर्थ- शीतल पवन के लगने से कफ वायु दुष्ट होकरपित्तसे मिलभीतर (रक्तादिकोंमें) और वाहर त्वचामें विचरें ·

पूर्वरूप

पिपासारुचिहृल्लासदेहसादांगगौरवम् ॥
रक्तलोचनतातेषांपूर्वरूपस्यलक्षणम् ॥ २ ॥

अर्थ-प्यास · अरुचि · मुखमें से पानी गिरना · अंगगलने · और भारी होना · नेत्र में लाली · ये पूर्वरूप शीत पित्त के जानने ·

उदर्दकेलक्षण

वरटीदष्टसंस्थानःशोथःसंजायतेबहिः । सकं

दूस्तोदबहुलश्छर्दिज्वरविदाहवान् ३ उदर्द
मितितंविद्याच्छीतपित्तमथापरे

अर्थ- वरटी (ततैया) के काटने के समान त्वचा के ऊपर चकत्ता होजांय उन्मैं खुजली चले· और सूई चुभाने कीसी पीड़ा होय· इस्के संयोग सैं वमन· संताप· ओर दाह होंय· इस रोग को (उदर्द) कहते हैं· कोई इस्को शीत पित्त कहते हैं· इस्को लौकिक में पित्ती कहते हैं· इसमें खुजली होय है सो कफ सैं जानना· चोंटनी बादी सैं होय है· और ओकारी संताप· और दाह ए पित्त सैं होते हैं ऐसे जानना· ॥

वाताधिकंशीतपित्तमुदर्दस्तुकफाधिकः ४

अर्थ- शीत पित्त में वात प्रधान तथा उदर्द कफ प्रधान जानना·

उदर्दकादूसराधर्म·

सोत्संगैश्चसरागैश्चकंडूमद्भिश्चमंडलैः ॥
शैशिरः कफजोव्याधिरुदर्दःपरिकीर्त्तितः ५

अर्थ- सरदी सै कफ का कोप होकर अंग के ऊपर लाललाल चकत्ता उठें उन्में खुजली बहुत चलै· ओर वे मंडल के आकार गोल हों· बीच में कुछ नीचे ओर ओर पास ऊंचे होंय इस रोग को (उदर्द) कहते हैं॥

कोठ के लक्षण

असम्यग्वमनोदीर्णपित्तश्लेष्मान्ननिग्रहैः ॥
मंडलानिसकंडूनिरागवंतिबहूनिच ६ ॥ उ
त्कोठःसानुबंधश्चकोठइत्यभिधीयते

अर्थ- वमन कारक औषध सेवन करने सैं अच्छी रीति सै वमन न होने सैं पित्त ओर कफ कुपित होने सैं· अथवा स्वतः वमन के वेग आये भये को· रोकने से देह के ऊपर लाल २ ओर बहुत चकत्ता उठें उन्में खुजली चले· इस रोग को उत्को

ट कहते हैं· और यह वार वार होय और जो क्षण भरमें उत्पन्न हो
कर नाश होजाय उस्को कोठ कहते हैं ॥

इति माधव भाषाटीकायां शीतपित्त उदर्द-
कोठ निदान समाप्तम्

अम्लपित्तनिदान

निदान पूर्वक अम्लपित्तकास्वरूप

विरुद्धदुष्टम्लविदाहिपित्त प्रकोपिपानान्नभु
जोविदग्धम् । पित्तंस्वहेतूपचितंपुरायत्तद
म्लपित्तंप्रवदंतिसंतः१

अर्थ- विरुद्ध (क्षीरमत्स्यादि) और दुष्टान्न·खट्टा·दाहका
रक·पित्त बढ़ाने वाला ऐसा अन्न पान के सेवन करने सें· व
र्षादि ऋतु में जलौषधिगत विदाहादि·स्वकारण सैं संचितभ
या पित्त दुष्ट होय उस्को (अम्लपित्त) कहते हैं ॥

अम्लपित्तकेलक्ष·

अविपाकक्लमोत्क्लेदतिक्ताम्लोद्गारगौरवैः
हृत्कंठदाहरुचिभिश्चाम्लपित्तंवदेद्भिषक् २

अर्थ- अन्नका न पचना· विना परिश्रम करे परिश्रम सैमालू
म हो· वमन· कडुवी·तथा खट्टी डकार आवै· देहभारी रहै·
हृदय और कंठ में दाह होय· अरुचि होय· ये लक्षण होने सैंअ
म्ल पित्त वैद्य जानै· ॥

अम्लपित्त दोप्रकारका एकऊर्ध्व
गततथा दूसरा अधोगतउसैंप्रथम

अधोगतकेलक्षण

तृड्दाहमूर्च्छाभ्रममोहकारिप्रयात्यधोवा॥

विविधप्रकारम् । हृल्लासकोठानलसादहर्ष-
स्वेदांगपीतत्वकरं कदाचित् ३

अर्थ- अम्लपित्त अधोगत होनेसे· प्यास· दाह· मोह· (इन्द्रि-
यमनोमोह) मूर्च्छा· भ्रम मोह दुर्गंध· मंदाग्नि · कोठ · का
न में पसीना· देह में पीलापन· ये लक्षण होकर गुदाके द्वारा ·
काले · लाल · दुर्गंधि युक्त · अनेक वर्ण के पित्त गिरें · ॥

ऊर्ध्वगतअम्लपित्त

वांतंहरित्पीतकनीलकृष्णमारक्तरक्ताभम-
तीवचास्त्रम् । मांसोदकाभंत्वतिपिच्छि
लाच्छश्लेष्मानुयातंविविधंरसेन ४ भुक्ते
विदग्धेत्वथवाप्यभुक्ते करोतितिक्ताम्लव
मिंकदाचित् ।उद्गारमेवंविधमेवकंठे हृ-
त्कुक्षिदाहंशिरसोरुजंच ५

अर्थ- ऊर्ध्वगत पित्त से· हरे· पीले· नीले · काले · लालरंग
के · लाल· अत्यंत खट्टा· मांस धोये हुए जल के समान· अत्यं
त गाढ़ा स्वच्छ · कफमिश्रित· खारी · कसैला· आदि रस युक्त
ऐसे पित्त गिरें · कभी कभी भोजन करा अन्न विदग्धावस्था को
प्राप्त होकर · अथवा भोजन करने के पहिले कड़ुई · खट्टी · ऐसी
वमन होंय तथा ऐसीही डकार आवें · कंठ · कूख और हृदय
इनमें दाह होय · माथा दूखे · ॥

कफपित्तजन्य अम्लपित्तके·

करचरणदाहमौष्ण्यंमहतीमरुचिंज्वरं
चकफपित्तम् । जनयतिकंडूमण्डलपिडि
काशतनिचितगात्ररोगचयम्

अर्थ- हाथपैरों में दाह · अंगों में गरमी · अन्न में अरुचि·

ज्वर· कंडू (खुजली) रुधिरके बिगड़नेसे देहमें मंडल होंं· मेंकड़ों पिटिका और अविपाकादि अनेक उपद्रव ए लक्षण· कफ पित्त से होते हैं ॥

साध्यासाध्यविचार·

रोगोऽयमम्लपित्ताख्योयत्नात्संसाध्यतेन
वः । चिरोत्थितोभवेद्याप्यःकृच्छ्रसाध्यः
सकस्यचित् ।

अर्थ- यह अम्लपित्त रोग नया होय तो· यत्न करनेसें साध्य होय· और बहुत दिनका होय सो याप्य जानना· और जो अपथ्य सेवन करने वाला पुरुष है उस्के यह अम्लपित्त रोग कच्छ्र साध्य होय है ॥

{ अम्लपित्तमें केवलवायूका और वा
तकफकासंसर्गहोयहै·सोकहतेहैं }

सानिलंसानिलकफंसकफंतच्चलक्षयेत् । दो
षलिंगेनमतिमान्भिषङ्मोहकरंहितम् ८

अर्थ- बातयुक्त· अम्लपित्त· बातकफयुक्त अम्लपित्त और कफ युक्त अम्ल - अैसे तीन प्रकारके अम्लपित्त· बुद्धिमान् बैद्य दोषों के लक्षणों से जाने· कारण इस्का यह है· कि· उर्ध्वगत· अम्लपित्त में छर्दि (रद्द) रोग का भास होय है· और अधोगत अम्लपित्तमें अतिसार कीसी चेष्टा मालूम होंय हैं· इसी से वैद्य को मोह होय है· इसी से वैद्यको इसरोगकी सूक्ष्मरीतिसे· परीक्षा करनी चाहिये ॥

वातयुक्तअम्लपित्तकेल·

कंपप्रलापमूर्च्छाचिमिचिमीगात्रावसादशूलानि । त
मसोदर्शनविभ्रमविमोहहर्षाश्चवातयुते ॥ ९ ।

अर्थ- बातयुक्त अम्लपित्त में कंप· प्रलाप· मूर्च्छा चेम

चिमा (चैंटी काटने से प्रगाढ खुजली के समान) देहग्लानि· पेट दूखना· नेत्रोंके आगे अंधकार दीखे· भ्रान्ति होना· इन्द्री मन को मोह· रोमांच खड़े हों· ये लक्षण होते हैं ॥

कफयुक्त अम्लपित्तके ल.

कफनिष्ठीवनगौरवजड़ताऽरुचिशीतसा
दवमिलेपाः। दहनबलसादकंडूनिद्राचि
न्हंकफानुगते॥१०॥

अर्थ- कफयुक्त अम्लपित्तमें कफके डेला गिरें· शरीरका अत्यंत जड़पना· अरुचि· शीतलगे· अंगग्लानि· वमन· मुखकफ से लिप्तसा रहै· मंदाग्नि· बलनाश· खुजली· और निद्रा· ए लक्षण होते हैं ॥

वातकफयुक्तअम्लपित्तके.

उभयमिदमेवचिन्हंमारुतकफसंभवेभवत्यम्ले
वातकफयुक्तअम्लपित्तमें ऊपरकेहुएदोनोंकेलक्षणहोतेहैं·

कफपित्तकेलक्षण

भ्रमोमूर्च्छाऽरुचिश्छर्दिरालस्यंचशिरोरुजः।
प्रसेकोमुखमाधुर्यंश्लेष्मपित्तस्यलक्षणम ११

अर्थ- भ्रम मूर्च्छा· अरुचि· वमन· आलस्य· मस्तक पीड़ा मुख से पानी वहना· मुख में मिठास ए कफ पित्तयुक्त अम्लपित्त के लक्षण हैं· ॥ ॐ ॥ इति भाषा टीकायां अम्लपित्त निदानम् समाप्तम्

विसर्प निदान

इसकी निदान पूर्वक संख्या रूप
संप्राप्ति और निरुक्ति

लवणाम्लकटूष्णादिसंसेवाद्दोषकोपतः ॥
विसर्पः सप्तधा ज्ञेयः सर्वतः परिसर्पणात् १

अर्थ- खारी· खट्टा· कडुवा· गरम· आदि पदार्थ सेवन करने से· वातादि दोषों का कोप होकर सात प्रकार का विसर्परोग होय है· वो सर्वत्र फैल जाय· इसी से इसको विसर्प कहते हैं सो (चरक में) लिखा वो है ॥

सर्व प्रकार के विसर्प रक्तादिक चार दूष्य और वातादि तीन दोष इन्से होय हैं सो कहते हैं

रक्तं लसीका त्वङ्मांसं दूष्यं दोषास्त्रयो मलाः
विसर्पाणां समुत्पत्तौ विज्ञेयाः सप्तधातवः २

अर्थ-रुधिर· मांस का जल· त्वचा· मांस· ये दूष्य हैं· और वातादि तीन दोष· ए सात धातु विसर्प के उत्पन्न होने के कारण हैं

वातविसर्प के लक्षण

तत्र वातात्परीसर्पो वातज्वरसमाकृतिः। शोफस्फुरणनिस्तोदभेदपा मार्तिहर्षवान् ॥ ३ ॥

अर्थ- बादी से बिसर्प जो होय उसके लक्षण वातज्वर के समान होते हैं तथा उसमें सूजन· फरकना· नोंचने कीसी पीड़ा· तोड़ने कीसी पीड़ा दर्द और रोमांच खड़े हों· तथा वो विसर्प लंबा होय है

पित्तविसर्प के लक्षण

पित्ताद्द्रुतगतिः पित्तज्वरलिंगोऽतिलोहितः

अर्थ- पित्त की विसर्प की गति शीघ्र होय· अर्थात् वो जल्दी फैल जाय· तथा पित्तज्वर वो लक्षण इसमें मिलते हों तथा अत्यंत लाल

१ त्रिविधं सर्पति यतो विसर्पस्तेन स्मृतः
परिसर्पोऽथवा नाम्ना सर्वतः परिसर्पणात् इति· ॥

होय ॥

कफविसर्प·

फात्कंडूयुतःस्निग्धःकफज्वरसमानरुक्

अर्थ कफकी विसर्प में खुजली बहुत होय·तथा चिकनी होय· और उसमें कफ ज्वर कीसी पीड़ा करे·

सन्निपातविसर्पके·

सन्निपातसमुत्थश्चसर्वरूपसमन्वितः ॥

अर्थ-सन्निपातजन्य विसर्प में जो वातादिकों के लक्षण कहे हैं सो सब होंय·

अग्निविसर्पकेलक्ष·

वातपित्ताज्ज्वरच्छर्दिमूर्च्छातीसारतृड्भ्रमैः।
अस्थिभेदाग्निसदनतमकारोचकैर्युतः ४।
करोतिसर्वमंगंचदीप्तांगारावकीर्णवत् । यं
यंदेशंविसर्पश्चविसर्पतिभवेच्चसः ५ शां
तांगारासितोनीलोरक्तोवाऽश्रूपचीयते। अ
ग्निदग्धइवस्फोटैःशीघ्रगत्त्वाद्द्रुतंचसः ६।
मर्मानुसारीवीसर्पःस्याद्वातोऽतिबलस्ततः।
व्यथेतांगंहरेत्संज्ञांनिद्रांचश्वासमीरयेत्।७।
हिक्कांचसततोवस्थामीदृशींलभतेनरः।क्व
चिच्छर्मारतिग्रस्तोभूमिशय्यासनादिषु ८ चे
ष्टमानस्ततःक्लिष्टोमनोदेहसमुद्भवाम् ।दुर्बो
धामश्नुतेनिद्रांसोऽग्निवीसर्पउच्यते ९

अर्थ- वात पित्त से प्रगट विसर्प· ज्वर· वमन· मूर्च्छा· अतिसार· प्यास· भौर· हड फूटन· मंदाग्नि· अंधकार दर्शन· अन्नद्वेष इन लक्षण करकै संयुक्त होय· इसके संयोग सै सर्व शरीर अंगारन सै भरासा मालूम होय· जिसजिसठिकाने वो विसर्प फै

ले· उसी उसी ठिकाने पर अग्नि रहित अंगारके समानकाला नीला· लाल होकर शीघ्रसूजे· आगसे फूंकेकेसमान ऊपर फफोला होंय· और उस विसर्प को शीघ्र गति होने से जल्दी हृदय में जायकर मर्मानुसारी विसर्प होय· अथवा वो अत्यन्त बलवान् होय· अर्थात् अंगों को व्यथा करे· संज्ञा और निद्रा इन्का नाश होय· श्वासबढावे· तथा हिचकी उत्पन्न करै· ऐसी मनुष्य की अवस्था होय· अस्वस्थ होनेकेकारण धरती·सेज·आसन· इत्यादिकों में सुख होय नहीं· हलने· चलने· सें क्लेश होय· मन तथा देह को क्लेश होने सेउत्पन्न भई ऐसी· दुर्बोधनिद्रा (मरण रूपी निद्रा) को प्राप्त होय·इस रोगको (अग्निविसर्प) ऐसे कहते हैं॥

ग्रंथिविसर्पकेलक्ष·

कफेनरुद्धः पवनः भित्वातंबहुधाकफम्
रक्तंचवृद्धरस्यत्वक्शिरास्नायुमांसगम् १०
दूषयित्वाचदीर्घाणुवृत्तस्थूलखरात्मनाम्
ग्रंथीनांकुरुतेमालांरक्तानांतीव्ररुज्वराम् ११
श्वासकासातिसारास्यशोषहिक्कावमिभ्रमैः
मोहवैवर्ण्यमूर्च्छांगभंगाग्निसदनैर्युतम् १२
इत्ययंग्रंथिवीसर्पः कफमारुतकोपजः

अर्थ– स्वहेतु से कुपित भया जो कफ सो पवन की गति को रोक· कफको भेदकर· अथवाबढ़ेभएरुधिरको भेदकरत्वचा· नस· नाड़ी· और मांस इन्में प्राप्त हो· और इन्को दुष्टकरलंबी छोटी· गोल· मोटी· खरदरी· लाल· गांठोंकी माला प्रगटकरै उन गांठों में पीड़ा अधिक होय· ज्वरहोय·श्वास·खांसी· अतिसार· मुख में पपड़ी परे· हिचकी·वमन· भ्रमता·मोह वर्ण

का पलटना· मूर्च्छा · अंगों का टूटना· मन्दाग्नि · येलक्षण होते हैं इस रोग को (ग्रंथिविसर्प) कहते हैं· यह कफ· वायु के· कोप से उत्पन्न होय है· इस्को सुश्रुत में अपची कहते हैं॥

कर्दमविसर्पके लक्ष.

कफपित्ताज्ज्वरस्तंभोनिद्रातंद्राशिरोरुजः १३
अंगावसादविक्षेपप्रलापारोचकभ्रमाः ॥
मूर्च्छाग्निहानिर्भेदोऽस्थ्नांपिपासेंद्रियगौरवम् १४
आमोपवेशनंलेपःस्रोतसांसविसर्पति। प्रा
येणामाशयंगृण्हन्नेकदेशंनचातिरुक् १५
पिंडकैरवकीर्णोऽतिपीतलोहितपांडुरैः। स्नि
ग्धोऽसितोमेचकाभोमलिनःशोफवान्गुरुः
गंभीरपाकःप्राज्योष्मास्पृष्टःक्लिन्नोऽवदीर्यते
पंकवच्छीर्णमांसश्चस्पष्टस्नायुशिरागणः १७
शवगंधिश्चवीसर्पःकर्दमाख्यःमुशंतितम्

अर्थ- कफ पित्त से ज्वर· अंगो का जिकड़ना· निद्रा· तंद्रा· मस्तक· शूल· अंगग्लानि· हाथ पैरों का पटकना· बकवाद· अरुचि· भ्रम· मूर्च्छा· मन्दाग्नि· हड फूटन· प्यास· इन्द्रीन्का जकड़ना· आमका गिरना· मुखादिस्रोतों (छिद्रों) में कफ कालेप· इत्यादिकलक्षण होते हैं· तथा वो विसर्प आमाशयमें उत्पन्न हो पीछे सर्वत्र फैले· उसमें पीड़ा थोड़ी होय· उसमें सर्वत्र पीली· तामें के रंग की· सपेदरंगकी पिड़का होंय· तथा वो विसर्प चिकने· स्याही के समान· काली· मलिन· सूजन· युक्त भारी· गंभीर पाक कहिये भीतर से पकी हो उन्में घोर दाह हो और दोदवाने से तत्क्षण गीली होजाय· तथा वो फटजाय तथा कीच के समान होकर उस्का मांस गल जाय· उसमें शिरा

(नाड़ी) नम ए दीरवनेलगें · उस्में मुर्दा कीसी बाँस आवे · इस विसर्प को (कर्दमविसर्प) कहते हैं ॥

क्षतजविसर्पकेलक्ष·

वाह्यहेतोःक्षतात्क्रुद्धःसरक्तंपित्तमीरयन् १८
विसर्पंमारुतःकुर्यात्कुलित्थसदृशैश्चितम्
स्फोटैःशोथज्वररुजादाहाढ्यंश्यावशोणितम् १९

अर्थ– वाह्य कारण करकें क्षत (घाव) होकरउसमें वायुकुपित होकर वोरुधिरसहितपित्तको व्रण में प्राप्तकर विसर्परोगउत्पन्न करे· उस्में कुलथी के समान स्यामवर्ण के फोड़ा होते हैं· सूजन हो· ज्वर होय· और दाह होय·उसका रुधिर काला निकले· इस विसर्प को पित्त विसर्पके अन्तरगत जानने सें· संख्यामें विरुद्ध नहीं पड़े अन्यथा संख्या वढ़ जाती है यहभोजकामत है ॥

उपद्रव

ज्वरातिसारवमथुस्त्वङ्मांसदरणंक्लमः।अ
रोचकाविपाकौच विसर्पाणामुपद्रवाः ॥२०॥

अर्थ– ज्वर· अतिसार· वमन· प्यास· मांसका गलना· अनायास श्रम· अरुचि· अन्न नपचना· येविसर्परोगके उपद्रव है ॥

साध्यासाध्यलक्षण

सिध्यन्तिवातकफपित्तकृताविसर्पाःसर्वा
त्मकःकफकृतश्चनसिद्धिमेति। पित्तात्म
कोऽजनवपुश्चभवेदसाध्यः।कृच्छ्राश्चम
र्मसुभवंतिहिसर्वएव २१

अर्थ– बात पित्त कफ इन्सें प्रगट जो विसर्प सो साध्य होय है· सन्निपातज· और क्षतज· विसर्प साध्य नहीं होय· पित्तसे प्रगट भई· विसर्प· जिस्का काजलकेसमान अंग होय· जो असा

ध्य और जो विसर्प मर्म ठिकानेपर होय वो सब कष्टसाध्य होय है + इतिश्रीमथुरी भाषा टीकायां विसर्प निदानम् + ॥

विस्फोटनिदान

लक्षण

कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च । तथर्तुदोषेणविपर्ययेण कुप्यंति दोषाः पवनादयस्तु ॥ १ ॥ त्वचमाश्रित्यतेरक्तमांसास्थीनिप्रदूष्यच । घोरान्कुर्वन्तिविस्फोटान्सर्वान्ज्वरपुरःसरान् ॥ २ ॥

अर्थ- कडुआ· खट्टा· तीखा· (मरिचादि) गरम· दाहकारक· रूखा· खारी· अजीर्ण· भोजन के ऊपर भोजन· और गरमी· ऋतुदोष कहिये शीतोष्ण का अति योग अथवा ऋतुविपर्यय (ऋतु का पलटना) इन कारणों से वातादि दोष कुपित हो त्वचा का आश्रय कर रुधिर· मांस· और हड्डी इन्को दूषितकर भयंकर विस्फोट (फोड़ा) उत्पन्न करें उन्के प्रगट होने के पूर्व घोरज्वर होय है· ॥

विस्फोटस्वरूप

अग्निदग्धनिभाःस्फोटाःसज्वराःरक्तपित्तजाः क्वचित्सर्वत्रवादेहेविस्फोटाइतितेस्मृताः ३

अर्थ- रक्त पित्त सें प्रगट भए ऐसे अग्नि करके पजरे के समान - फोड़ा अंग में किसी एक ठिकाने अथवा सब देह में होंय हैं· उ न्के होने में ज्वर होय· उन्को विस्फोट रोग कहते हैं· इस रोग में भी

वात का अनुबंध होय है सोभोजने[१] कहा है ॥

वातविस्फोटकेलक्षण

शिरोरुक्शूलभूयिष्ठंज्वरस्तृट्पर्वभेदनम्
सुकृष्णवर्णताचेतिवातविस्फोटलक्षणम् ४

अर्थ- मस्तक में पीड़ा-शूल-देह में पीड़ा-ज्वर-प्यास-संधी-न्मेंपीड़ा-फोड़ान्कावर्णकालाहोय-येवातविस्फोटके लक्षण हैं ॥

पित्तविस्फोटकेलक्षण

ज्वरदाहरुजास्रावपाकतृष्णाभिरन्वितम् । पी
तलोहितवर्णंचपित्तविस्फोटलक्षणम् ५

अर्थ-ज्वर-दाह-पीड़ा-स्राव-फोडान्कापकना-प्यास-देह पीली हो-अथवा लालहोय-यपित्तविस्फोटके लक्षण हैं ॥

कफविस्फोटकेल०

छर्द्यरोचकजाड्यानिकंडूकाठिन्यपांडुताः
अवेदनश्चिरात्पाकीसविस्फोटःकफात्मकः ६

अर्थ- वमन-अरुचि-जड़ता-तथा फोडाखुजलीयुक्तहो-कठिन-पीले-और उन्में पीड़ा होयनहीं-औरवे बहुत कालमें पके-यह विस्फोट कफ का जानना-

कफपित्तात्मकविस्फोट

कंडूर्दाहोज्वरश्छर्दिरेतैस्तुकफपैत्तिकः

अर्थ-खुजली-दाह-ज्वर और वमन-इन लक्षणों से कफ-पित्तजन्य विस्फोट जानना-॥

वातपित्तात्मककेलक्षण

१ यदाह भोजः यदारक्तंचपित्तञ्चवातेनानुगतंत्वचि अग्निदग्धनिभान् स्फोटान् कुरुतः सर्वदेहगान् सञ्चरान् सपरीदाहान् विद्याद्विस्फोटकांस्तुतानिति ·

वातपित्तकृतोयस्तुकुरुतेतीव्रवेदनाम् ७

अर्थ-वात पित्तके विस्फोटक में तीव्र पीड़ा होती है ॥ + ॥

कफवातात्मककेल·

कंडूस्तैमित्यगुरुभिर्जानीयात्कफवातिकम्

अर्थ-खुजली· गीलापना·भारीपना·इन लक्षणों से कफवात का विस्फोट जानना·

सन्निपातविस्फोटके·

मध्येनिम्नोन्नतोऽन्तेचकठिनोऽल्पप्रपाकवान्
दाहरागतृषामोहच्छर्दिमूर्च्छारुजोज्वरः। प्र
लापोवेपथुस्तंद्रासोऽसाध्यश्चत्रिदोषजः ८

अर्थ-जो फोड़ा बीच में नीचा होय· और ओर पास सें ऊंचा होय· कठिन· कुछ पका होय है· तथा जिसके योग सें· दाह· अंग में लाली· प्यास· मोह· वमन· मूर्च्छा· पीड़ा· ज्वर· प्रलाप· कंप· तन्द्रा· ये लक्षण होते हैं· वो सन्निपात का विस्फोट असाध्य है·

रक्तजविस्फोटकेलक्ष·

रक्तारक्तसमुत्थानागुंजाफलनिभास्तथा।
वेदितव्यास्तुरक्तेनपैत्तिकेनचहेतुना ९०
नतेसिद्धिंसमायांतिसिद्धैर्योगशतैरपि ॥

अर्थ- रुधिरसे प्रगटभया विस्फोटक तामेंके रंगका·गुंजा (चिरमिटी) के समान लाल· वो रुधिरके दुष्ट होने सें· अथवा पित्त केदुष्ट होने सें होय है· इसमें सैंकड़ो अनुभवकरी औषध के करने सै वो साध्य नहीं होय·

साध्यासाध्यविचार

एकदोषोत्थितःसाध्यःकृच्छ्रसाध्योद्विदोषजः

सर्वरूपान्वितोघोरस्त्वसाध्योभूर्युपद्रवः ११

अर्थ- एक दोष से प्रगट भया जो विस्फोटक वो साध्य है· द्वि दोषका कष्टसाध्य है· और सर्व लक्षण युक्त होय सो भयंकर तथा जिस्में उपद्रव बहुत होंय वो विस्फोटक असाध्य है· ॥

उपद्रव

हिक्काश्वासोऽरुचिस्तृष्णा अंगसादोहृदिव्यथा
विसर्पज्वरहृल्लासाविस्फोटानामुपद्रवाः १२

अर्थ- हिचकी· श्वास· अरुचि· प्यास· अंगग्लानि· हृदे में पीडा· विसर्प रोग· ज्वर· वमन ये विस्फोटक के उपद्रव जानना·

✢ इतिविस्फोटनिदानम्समाप्तं ✢

मसूरिकानिदान

कारणऔरसंप्राप्ति

कट्वम्ललवणक्षारविरुद्धाध्यशनाशनैः।
दुष्टनिष्पावशाकादिप्रदुष्टपवनोदकैः १
क्रुद्धग्रहेक्षणाच्चापिदेहेदोषाःसमुद्धताः।
जनयंतिशरीरेऽस्मिन्दुष्टरक्तेनसंगताः २म
सूराकृतिसंस्थानाःपिडिकाःस्युर्मसूरिकाः।

अर्थ- कड्डुआ· खट्टा· नोनका· खारी· विरुद्धभोजन· अध्यशन (भोजनके ऊपरभोजन) दुष्ट अन्न· निष्पाव· (शिंबीबीज· उरद· मूंग) आदि शाक· बिघेल फूल आदि से मिलापवन तथा जल· शनैश्चरादि खोटे ग्रहों का देखना· इनसबकारणों करके शरीर में वातादिदोष कुपित होकर दुष्टरुधिर में मिलकर मसूरके समान देह में अनेक संरोराउत्पन्नकरे·

उन्को मसूरिका (आना) ऐसें कहते हैं (दुष्टरक्तेनसंगता) इस पदके धरने से रुधिर को कटु अम्लादि हेतु करके विशेषकोप दिखाया इसी से ग्रन्थांतरों में लिखा वो है ॥

मसूरिकाकेपूर्वरूप

तासांपूर्वंज्वरःकंडूर्गात्रभंगोऽरुचिर्भ्रमः ॥
त्वचिशोफःसवैवर्ण्योनेत्ररागस्तथैवच ३

अर्थ- तिसमाता (शीतला) के पूर्व ज्वर होय है-खुजली चले-देहमें फूटनी होय-अन्नमें अरुचि-भ्रमहोय-अंगके ऊपरकी त्वचा में सूजन होय-तथा वर्ण पलट जाय-नेत्रलाल होंय ए शीतला के पूर्वरूप होते हैं-

बातकीमसूरिकाकेल-

स्फोटाःकृष्णारुणारूक्षास्तीव्रवेदनयान्विताः।कठिनाश्चिरपाकाश्चभवंत्यनिलसंभवाः४
संध्यस्थिपर्वणां भेदःकासःकंपोऽरतिःक्लमः
शोषस्ताल्वोष्टजिह्वानांतृष्णाचारुचिसंयुता५

अर्थ- बात मसूरिकाके फोड़ा काले-लाल-और रूक्ष-होतेहैं उनमें तीव्र पीड़ा होय-वो कठिन होंय-शीघ्र पकें नहीं-इसके योगसैं संधिहाड़ और पर्वों में फोड़ने कोसी पीड़ा होय-खांसी-कंप-चित्तस्थिर न हो बिना परिश्रमके श्रम होय-तालुआ-होठ-औरजीभ ए सूखने लगें-प्यास-अरुचि-ए लक्षण होते हैं ॥

पित्तकीमसूरिकाकेलक्ष-

१ पित्त शोणित संसृष्टं यदा दूषयतित्वचम् तदाकरोति पिडिकाः सर्वगात्रेषु देहिनाम्। मसूरमुद्गमाषाणांतुल्याःकालोपमा इति मसूरिकास्ततोज्ञेयाःपित्तरक्ताधिका बुधैरिति ॥१॥

रक्ताःपीताःसिताःस्फोटाःसदाहास्तीव्रवेद
नाः।भवंत्यचिरपाकाश्चपित्तकोपसमुद्भवाः६
विटभेदश्चांगमर्दश्चदाहस्तृष्णाऽरुचिस्तथा
मुखपाकोऽक्षिपाकश्चज्वरस्तीक्ष्णःसुदारुणः७

अर्थ- पित्तकी मसूरिकाका-मुखलाल-पीला-काला-होय है-तिसमें दाह-तथा पीड़ा बहुत होंय-और ये शीतला शीघ्र पके-इसके योग से मल पतला होय- अंगटूटे-दाह-प्यास-अरुचि-मुखपाक-और नेत्र पाक होंय-ज्वर तीव्र हो-ए लक्षण हों-

रक्तजमसूरिकाकेलक्ष-

रक्तजायांभवंत्येतेविकाराःपित्तलक्षणाः ८

अर्थ-रक्तजमसूरिका में पित्तज मसूरिका केलक्षण होते हैं-

कफजमसूरिकाकेल-

कफप्रसेकःस्तैमित्यंशिरोरुग्गात्रगौरवम्
हृल्लासःसारुचिर्निद्रातंद्रालस्यसमन्विता ९
श्वेताःस्निग्धाभृशंस्थूलाःकंडुरामंदवेदनाः।
मसूरिकाःकफोत्थाश्चचिरपाकाःप्रकीर्त्तिताः१०

अर्थ- कफकी मसूरिका में मुख के द्वारा कफका स्राव होय-अंग में आर्द्रता-तथा-भारीपना-मस्तक में शूल-वमन आनेकी सी इच्छा होय- अरुचि- निद्रा-तन्द्रा- आलस्य- ये होय- और फोड़ा-सपेद-चिकने- अत्यंत मोटे-होंय-इनमें खुजली बहुत चले-पीड़ा मंद होय- और वे बहुत दिन में पकें

त्रिदोषजमसूरिकाकेल-

नीलाश्चिपिटविस्तीर्णामध्येनिम्नामहारुजाः
चिरपाकाःपूतिस्रावाःप्रभूताःसर्वदोषजाः११

अर्थ- त्रिदोषज मसूरिकाके फोड़ा नीले- चिपटे-लंबे-बीच

चर्म में नीचे रोमे होंय· उन्में पीड़ा अत्यंत होय· तथा व बहुत दिन में पकें और उन्में से दुर्गंध युक्त स्राव होय· वे फोड़ा सर्व दोष के बहुत होंय हैं ॥

चर्मपिटिका

कंठरोधोऽरुचिस्तंद्राप्रलापारतिसंयुताः। दु
श्चिकित्स्याः समुद्दिष्टाः पिड़काश्चर्मसंज्ञिताः ॥ १२

अर्थ- जिस फोड़ा कि होनि से· कंठरुक जाय· अरुचि· तन्द्रा प्रलाप· चैन न पड़ना· ये लक्षण होते हैं· जिन्की ओषधि न हो होसकै औसी चर्म संज्ञक पिडका जाननी· ॥

रोमांतिक

रोमकूपोन्नतिसमारागिण्यः कफपित्तजाः।
कासारोचकसंयुक्ता रोमांत्या ज्वरपूर्विकाः ॥ १३

अर्थ- कफ पित्तसे· केशोंकि (वालोंके) छिद्रके समान वारीक औरलाल· औसी मसूरिका होंय· इन्के होने सें खांसी· अरुचि होय· तथा इन्के होने सें पहिले ज्वर होय· इन्को रोमांत्य (कसूमी माता) औसे कहते हैं ॥

रसादिसप्तधातु

गत मसूरिकान्के लक्षण ॥

तोयबुद्बुदसंकाशास्त्वग्गता ताश्च मसूरिकाः
स्वल्पदोषाः प्रजायंते भिन्नास्तोयं स्रवंति च ॥ १४

अर्थ- रसगत मसूरिका पानी के बबूले के सदृश हो इन्के फूटने से पानी वहे· यह मसूरिका माता है· कारण इस्का यहहै कि दोष स्वल्प है·

रक्तगतमसूरिकाकेल·

रक्तस्थालोहिताकाराः शीघ्रपाकास्तनुत्वचः

साध्यानात्यर्थदुष्टास्तु भिन्नारक्तंस्रवंतिच ॥ १५ ॥

अर्थ- रुधिरगत मसूरिका · तांबेके रंगकी · जलदी पकनेवाली होती हैं · उन्के ऊपरली त्वचा पतलीहोय है · यह अत्यंतदुष्ट होंने सेसाध्यनहींहोय · औरइस्केफूटनेसेइस्मेंसेरुधिरनिकले ॥

मांसगतकेलक्ष·

मांसस्थाःकठिनास्निग्धाश्चिरपाकास्तनुत्वचः। गात्रशूलोऽरतिःकंडूमूर्छादाहतृषान्विताः ॥ १६ ॥

अर्थ- मांसस्थमसूरिका · कठिन · चिकनी · होय है · ये बहुत दिनमें पके तथा इस्कीत्वचा पतलीहोय · अंगो में शूल होय · चैन पड़े नही · खुजली चले · मूर्छा · दाह · औरप्यास ए लक्षणहोते हैं ॥

मेदोगतकेलक्ष·

मेदोजामंडलाकारामृदवः किंचिदुन्नताः। घोरज्वरपरीताश्चस्थूलाःकृष्णाःसवेदनाः संमोहारतिसंतापाःकश्चिदाभ्योविनिस्तरेत् १७

अर्थ- मेदोगतमसूरिका · मंडलके आकार अर्थात् गोल होय · नरम कुछ ऊंची · मोटी · तथा काली · होय है · इस्के होंनेसें भयंकर ज्वर · पीड़ा · इन्द्रीमनको मोह · चित्तका अस्थिर होना संताप · ए लक्षण होते हैं · इस मसूरिकासें कोई एक आदि मनुष्य बचता होयगा · इसें यह दिखाया कि यह अत्यंत कृच्छ्र साध्य है ॥

अस्थिमज्जागतके

अस्थिगात्रसमारूढाश्चिपिटाःकिंचिदुन्नताः मज्जोत्थाभृशसंमोहवेदनारतिसंयुताः १८ छिंदंतिमर्मधामानिप्राणानाशुहरंतिताः ॥ भ्रमरेणेवविद्धानिकुर्वंत्यस्थीनिसर्वतः १९

अर्थ- अस्थिमज्जागतमसूरिका - बहुतछोटी - देहके समानरूक्ष चिपटी - कुछ ऊंची होय है - अत्यन्त - चित्तविभ्रम - पीड़ा - अस्वस्थता ए होते हैं - तिनमर्मस्थानोंके भेदकर्के शीघ्र प्राणहरणकरे - इस्के होनेसे सर्व हड्डीन्में भौंरोंके काटनेके समान पीड़ा होय - ॥

शुक्रगतकेलक्ष -

पक्वाभाः पिडिकाः स्निग्धाः श्लक्ष्णाश्चात्यर्थ
वेदनाः। स्तैमित्यारतिसंमोहदाहोन्मादसमन्वि
ताः २० शुक्रजायांमसूर्यांतुलक्षणानिभवंतिच
निर्दिष्टंकेवलंचिन्हं दृश्यतेनतुजीवितम् २१

अर्थ- शुक्रधातुगतमसूरिका पकेके समान - चिकनी - अलग २ होय है - इन्में अत्यन्तपीड़ा होय - इन्के होनेसे - गीलापना - अस्वस्थता - मोह - दाह - उन्माद - एलक्षण होते हैं - रोगी वचै जैसे इस्में कोई लक्षण नहीं दीखे - इसीसे इस्को असाध्य जानना - ॥

सप्तधातुगतमसूरिकाकेदोष केसंबंधसेलक्षणकहतेहैं

दोषमिश्रास्तुसप्तेताद्रष्टव्या दोषलक्षणैः।

अर्थ- ये सप्तधातुगतमसूरिकावातादिकोंकेलक्षणों कर्के तिन दोषों कर्के मिश्रित प्रगटभई जाननी -

धातुगतऔरदोषजमसूरिकामेंकौन कौनसाध्यहैसोकहतेहैं

त्वग्गतारक्तजाश्चैवपित्तजाः श्लेष्मजास्तथा २२
पित्तश्लेष्मकृताश्चैवसुखसाध्यामसूरिकाः।
एताविनापिक्रियया प्रशाम्यंतिशरीरिणाम् ॥ २३

अर्थ- रसगत - रक्तगत - पित्तज - कफज - पित्तकफज - येमसूरिका सुखसाध्य है - ए औषधके विना भी शांति होय हैं ॥

कष्टसाध्य

वातजावातपित्तोत्थावातश्लेष्मकृताश्चयाः
कृच्छ्रसाध्यामतास्तास्तुयत्नादेतानुपाचरेत्। २४

अर्थ- वातज·वातपित्तज·वातकफज·मसूरिकाकष्टसाध्यहैं इन्की यत्नपूर्वक चिकित्साकरै·॥

असाध्यमसूरिकाके·

असाध्याःसन्निपातोत्थास्तासांवक्षामिलक्षणम्
प्रवालसदृशाःकाश्चित्काश्चिज्जंबूफलोपमाः। २५
लोहजालसमाःकाश्चिदतसीफलसन्निभाः।
आसांबहुविधावर्णाजायन्तेदोषभेदतः॥ २६

अर्थ- सन्निपातजमसूरिका असाध्यहैं · इन्के लक्षण कहता हूं·कोई मूंगाके समान लाल होय·कोई जामन के समान और कोई·लोह जालके समान तथा अलसीके बीजके समान होंयहैं दोषों के भेदकर्के इन्के अनेक प्रकारके रंग होते हैं॥

सर्वमसूरिकाकेअवस्थाविशेष कर्केलक्षण

कासोहिक्काथमोहश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः
प्रलापारतिमूर्च्छाश्चतृष्णादाहोऽतिघूर्णताः २७
मुखेनप्रस्रवेद्रक्तंतथाघ्राणेनचक्षुषा। कंठे
घुर्घुरकंकृत्वाश्वसित्यत्यर्थदारुणम् २८
मसूरिकाभिभूतोयोभृशंघ्राणेननिःश्वसेत्॥
सम्भ्रशत्यजतिप्राणानतृष्णार्त्तोवायुदूषितः॥ २९

अर्थ- खांसी·हिचकी·मोह·तीव्रज्वर·प्रलाप·असंतोष·मूर्छा। प्यास·दाह·नेत्र·टेढे·तिरछे·बांके फाड़ने·ये लक्षण होते हैं मुख·नाक·औरनेत्र·इन्के मार्ग होकर रुधिर गिरे·कंठमें घर

र घरर शब्द होय· और भयंकर श्वासले· जो मसूरिका पीड़ित
रोगी केवल नाकके द्वारा श्वास लेय· वो पुरुष वायु और तृषा
इन्सें पीड़ित होत संते· तत्काल प्राण त्याग करे·

मसूरिकाकेउपद्रव

मसूरिकांतेशोथःस्यात्कूर्परेमणिवंधके।
तथांसफलकेवापिदुश्चिकित्स्यःसुदारुणः ३०

अर्थ- मसूरिका (शीतला) के अंत में· कूर्पर पहुंचा· तथा
कंधा इन्में सूजन होय· (इस्के व्यवहार में गुरु ऐसे कहते·
हैं) यह चिकित्सा करने में कठिन है ॥ ❋ ॥ इतिश्री माथुरीभा
षाटीकायांमसूरिकानिदानम्‌समाप्तम्‌

क्षुद्ररोगनिदान

अजगल्लिका

स्निग्धाःसवर्णाग्रथितानीरुजामुद्गसन्निभाः
कफवातोत्थिताज्ञेया बालानामजगल्लिका१

अर्थ- बाल क कै कफ वात से· चिकनो· त्वचा के वर्ण केस
मान वर्ण होय· गांठ सी बंधी· रुजा (पीड़ा) रहित· तथा मूंग
के सदृश जो पिडिका होय उस्को (अजगल्लिका) कहते हैं॥

यवप्रख्याकेलक्ष·

यवाकारासुकठिनाग्रथितामांससंश्रिता॥
पिडिकाश्लेष्मवाताभ्यांयवप्रख्येतिचोच्यते २

अर्थ- कफ वात से प्रगट जौके समान· कठिन· गांठके सदृश
मांसाश्रित· जो पिडिका होय उस्को (यवप्रख्या) कहते हैं भोजके म

---

१ श्लेष्मानिलौ श्रितौ स्त्रायुं पिड़िकांपित्तमंडलम्‌। दुष्टौजनयतोवक्राभल्ययूया
म कण्डुराम्‌। आमो दुम्बर संकाशांविद्यादन्त्रालजीन्तु ताम्‌॥

तसेइस्को (अंत्रालजी कहते हैं·

अंधालजी

घनामवक्त्रांपिटिकामुन्नतांपरिमंडलम् । अं
धालजीमल्पपूयांतांविद्यात्कफवातजाम् ३

अर्थ-कफ बात से प्रगट· कठिन जिसमें मुख न हो· तथा ऊंची ऐसीपिडकाहोय तथा जिस्के चारों और मंडलाकार हो· तथाजिस्मेंराध थोड़ी होय उस्को (अंधालजी) ऐसेकहते हैं ॥

विवृत्तापिडकाके·

विवृत्तास्यांमहादाहांपक्वोदुंबरसन्निभाम् ॥
परिमंडलांपित्तकृतांविवृतांनामतांविदुः ४

अर्थ- पित्तकेयोग सें· फटे मुख की अत्यन्तदाह युक्त· पके गूलरके समान· चारों ओरबल पड़ी हुई· जो पिडका होय उस्को (विवृत्ता) ऐसे कहते हैं ॥

कच्छपिकाकेल·

ग्रथिताःपंचवाषड्वादारुणाःकच्छपोन्नताः
कफानिलाभ्यांपिडिकाज्ञेयाकच्छपिकाबुधैः ५

अर्थ-कफ वायू से प्रगट गांठबंधी· पांच अथवा छः कठिन कछुआके पीठके समान ऊंची जो पिड़का होय· उन्को (कच्छपिका) ऐसे कहते हैं ॥

वल्मीकपिडिका

ग्रीवांसकक्षाकरपाददेशेसंधौगलेवात्रि
भिरेवदोषैः । ग्रंथिःसवल्मीकवदक्रिया-
णांजातःक्रमेणैवगतःप्रवृद्धिम् ॥६॥ मुखै
रनेकैःस्रुतितोदवद्भिर्विसर्पवत्सर्पतिचो
न्नताग्रैः । वल्मीकमाहुर्भिषजो------

विकारंनिष्प्रत्यनीकंचिरज्ञंविशेषात् ॥ ७ ॥

अर्थ- कंठ-कंधा-कूख-हाथ-पैर-संधि-गला-इन ठिकाने तीनों दोषों सें सर्प की बांवी के समान-गांठ होय-उसका उपाय न करे तब वो धीरे धीरे बढे-उसमें अनेक मुख होजांय-उन्में से स्राव होय-नोचने कीसी पीड़ा होय-तथा वह मुख के ऊपर कुछ ऊंची होकर-विसर्प के समान फैलजाय-इस रोग को बैद्य (वल्मीक) ऐसे कहते हैं-इस्के ऊपर औषधी उपचार नहीं चलै-और पुराने होने से विशेष असाध्य जाननी

इन्द्रवृद्धाकेलक्षण

पद्मकर्णिकवन्मध्येपिडकाभिःसमाचितां
इंद्रवृद्धांतुतांविद्याद्वातपित्तोत्थितांभिषक् ८

अर्थ- कमल कर्णिका के समान बीच में एक पिड़का होय उस्के चारों ओर छोटी छोटी फुंसी होय-उस्को-इन्द्रवृद्धा-ऐसे कहते हैं-यह वात पित्त से उत्पन्न होय है-

गर्दभिकाकेलक्षण

मंडलंवृत्तमुत्सन्नंसरक्तंपिटिकाचितम् । रु
जंकरींगर्दभिकांतांविद्याद्वातपित्तजाम् ९

अर्थ- वात पित्त से प्रगट एक गोल ऊंचा तथा लाल-और फोड़ान्से व्याप्त ऐसा मंडल होय वो बहुत दूखे उस्को-गर्दभिका ऐसे कहते हैं ॥

पाषाणगर्दभलक्ष-

वातश्लेष्मसमुद्भूतःश्वयथुर्हनुसंधिजः ॥
स्थिरोमंदरुजःस्निग्धोज्ञेयःपाषाणगर्दभः १०

अर्थ- वातकफ से-टाडी की संधिमें-कठिन-मंद पीड़ा करने वाली-चिकनी ऐसी सूजन होय-उस्को (पाषाणगर्दभ) ऐसेक

हते हैं ॥

पनसिका

कर्णस्याभ्यंतरेजातांपिडिकामुग्रवेदनाम् ।
स्थिरांपनसिकांतांतुविद्याद्वातकफोत्थिताम् ११

अर्थ-कान के भीतर वात पित्त कफ से जो फुंसी उग्र वेदना सहित प्रगट होय· और वह स्थिर होय·उसको (पनसिक) कहते हैं·॥

जालगर्दभकेल·

विसर्पवत्सर्पतियःशोथस्तनुरपाकवान् ।
दाहज्वरकरःपित्तात्सज्ञेयोजालगर्दभः १२

अर्थ- पित्तसे विसर्प के समान इधरउधर को फैलने वाली·पतली तथा कुछ पकने वाली ऐसी सूजन होय·उसमें दाह होय·और ज्वर होय इसको जाल गर्दभ कहते हैं कोई आचारी कहते हैं कि इसमें पकता नहीं होय यथो

इरिवेल्लिकाकेल·

पितिकामुत्तमांगस्थांवृत्तामुग्ररुजाज्वराम् ।
सर्वात्मिकांसर्वलिंगांजानीयादीरिवेल्लिकाम् १३

अर्थ- त्रिदोष सें प्रगट मस्तक में गोल· अत्यंत पीड़ा औरज्वर करने वाली त्रिदोषके लक्षण संयुक्त ऐसी पिडिका होयउसको (इरिवेल्लिका) कहते हैं·॥

---

१ कफवातौप्रकुपितौमांसमाश्रित्यकर्णयोः समन्ततः परिस्तब्धांकुरुतः पिड़िकांस्थिराम् । विषमान्दाहसंयुक्तांविद्यात्पनसिकान्तुताम् ।

२ पित्तोत्कटास्त्रयोदोषाजनयंतित्वगाश्रिताः । श्यावंरक्तंतनु शोथमपाकं बहुवेदनम् । विसर्पिणंसदाहञ्चतृष्णाज्वरसमन्वितम् । विसर्पमाहुस्तंव्याधिमपरेजालगर्दभम् ॥२॥

कक्षा (करवलाई)

बाहुकक्षांसपार्श्वेषुकृष्णस्फोटांसवेदनाम्
पित्तकोपसमुद्भूतांकक्षामित्यभिनिर्दिशेत् २४

अर्थ-बाहु·भुजाकीजड़·कंधा·और पसवाड़े·इन ठिकाने पित्त कुपित होकर·काले फोड़ानसें व्याप्त तथा वेदना युक्त जो पिटिका होय उस्को· कंक्षा वा·करवलाई·कहते हैं·

गंधनाम्नी·

एकामेतादृशींदृष्ट्वापिडकांस्फोटसन्निभाम्
त्वग्गतांपित्तकोपेनगंधनाम्नीप्रचक्षते २५

अर्थ- पित्तके कोप से जो एक पिडका फोड़ा के समान वड़ी त्वचा के भीतर होय उस्को (गंधनाम्नि) ऐसे कहते है·

अग्निरोहिणी (कालीफुंसी)

कक्षाभागेषुयेस्फोटाजायंतेमांसदारुणाः।अं
तर्दाहज्वरकरादीप्तपावकसन्निभाः २६ सप्ता·
हाद्वादशाहाद्वापक्षाद्वाहंतिमानवम्।तामग्नि
रोहिणींविद्यादसाध्यांसान्निपातिकीम् ॥२७॥

अर्थ- कांखके आस पास मांसके विदारण करने वाले जो फोड़ा होते हैं· तिस कर्के अंतर्दाह होय· तथा ज्वर होय· वो फोड़ा प्रदीप्त अग्निके समान लाल होंय· इन फोड़ानमें वायु अधिक होने सें·सातदिन·पित्तादिक सें वारे दिन और कफाधिक्य से ५ दिन में रोगी मरे यह (अग्निरोहिणी) नामक त्रिदोषजपिड़का असाध्य है· यह कठिन है·

चिप्यकेलक्षण

नखमांसमधिष्ठायवातःपित्तंचदेहिनाम् ॥
कुर्वीतेदाहपाकौचतंव्याधिंचिप्यमादिशेत् २८

तदेवाल्पतरैर्दोषैः कुनखंपरुषंवदेत् ॥ १८ ॥

अर्थ- वायु और पित्त नखों के मांस में स्थित होकर दाह और पाक को करे इस रोग को चिप्य ऐसे कहते हैं यह अल्प दोषों से होय तो इस्को कुनख कहते हैं ॥

अनुशयीकेलक्षण

गंभीरामल्पसंरंभांसवर्णामुपरिस्थिताम् । पादस्यानुशयींतान्तुविद्यादंतःप्रपाकिनीम् १९

अर्थ- पैरों में त्वचा के समान वर्ण यत्किंचित् सूजन युक्त भीतरसेंपकीजो पिटिका होय उस्को अनुशयी ऐसे कहते हैं ॥

विदारिकाकेलक्ष॰

विदारीकंदवद्वृत्ताकक्षावंक्षणसंधिषु । विदारिकाभवेद्रक्तासर्वजासर्वलक्षणा २०

अर्थ- विदारी कंद के समान गोल कांख में अथवा वंक्षण स्थान में जो गांठ तामे के रंग कीसी होय उस्को विदारिका ऐसे कहते हैं यह सन्निपात से होय है अर्थात् इसमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं ॥

शर्करा

प्राप्यमांसंशिरास्नायूःश्लेष्मामेदस्तथानिलः ग्रंथिंकरोत्यसौभिन्नोमधुसर्पिर्वसानिभम् २१
स्रवत्यास्रावमनिलस्तत्रवृद्धिंगतःपुनः । मांसंविशोष्यग्रथितांशर्करांजनयेत्ततः २२

अर्थ- कफ मेद और वायु ये मांस शिरा और स्नायु इनमें प्राप्त हो गांठ बांधते हैं जब वो फूटे तब उसमें से सहत घृत चर्बी इन्के समान स्राव हो तिस करके वायु पुनः बढ़कर मांस को सुखाय उस्की बारीक खिचोसी गांठ करे उस्को

शर्करा· कहते हैं·॥

शर्करार्बुदकेलः·

दुर्गंधिक्लिन्नमत्यर्थंनानावर्णंततःशिराः।
स्रवंतिरक्तंसहसातद्विद्याच्छर्कराबुर्दम् २३

अर्थ- शर्करा·होनेके अनन्तर नाड़ीन्सें दुर्गंध· क्लेद युक्त· अनेक प्रकार के वर्ण का (घृत·मेद· और वसा·इन्के वर्णका) रुधिर स्रवे उस्को· शर्कराबुर्द· कहते हैं·परंतु भोजने शर्कराबुर्द को शर्करा रोग के अंतर्गत कहा है·॥

पाददारी

परिक्रमणशीलस्यवायुरत्यर्थरूक्षयोः॥
पादयोःकुरुतेदारींसरुजांतलसंश्रिताम्। २४

अर्थ- जिस पुरुष को बहुत चलना पड़े है उस्के पैर वायुके योग सें अत्यंत रूक्ष होकर पैरों के तलुओं विदीर्ण· करदे (फाड़दे) उस्को · पाददारी· कहते हें· अर्थात् बिवाई कहते हैं) विपादिका कुष्ट फटे नहीं है· फट निकले है·यहइन्में भेद जानना· ॥२४॥

कदर (ठेक)

शर्करोन्मथितेपादेक्षतेवाकंटकादिभिः।
ग्रंथिःकीलवदुत्सन्नोजायतेकदरंतुतत २५

अर्थ- पैरोंमें कंकर छिदने सै अथवा कांटे लगनेसे· बेर के समान ऊंची गांठ प्रगट होय·उस्को (कदर) अर्थात् ठेक कहते हैं· अथवा (ग्रंथिःकीलवदुत्सन्नो) इस नगे (ग्रंथिःकीलवदुत्सन्नो) ऐसावी पाठ है ÷ अर्थात् कीलके समा

१ तमेवभिन्नदुर्गंधंघृतमेदोनिभंशिराः स्रवंतिस्रावमनिशंतदा स्याच्छर्कराबुर्दम् ॥

न जो गांठ होय-उस्को कदर कहते हैं-यह कदर रोग हाथों में भी होय है-सो भोजे ने लिखा वी है-

अलस (खारुआ)

क्लिन्नांगुल्यंतरौपादौकंडूदाहरुजान्वितौ। दु
ष्टकर्दमसंस्पर्शादलसंतंविभावयेत् २६

अर्थ- दुष्ट कीच में डोलने से (वर्षा आदि का पानी और सड़ी कीच में डोलने से) पैरों की उंगली गीली रहने से उंगलियों के बीच में (सपेद२ चकत्ता होजांय) उन्में खुजली- दाह-और गीलापन होय-तथा पीड़ा होय उस्को अलस- अर्थात् खारुआ कहते हैं- यह कफरक्त के दोष से होता है-

इन्द्रलुप्त (चाई)

रोमकूपानुगंपित्तंवातेनसहमूर्च्छितम्। प्र
च्यावयतिरोमाणिततःश्लेष्मासशोणितः २७
रुणद्धिरोमकूपांस्तुततोऽन्येषामसंभवः। त
दिंद्रलुप्तंखालित्यंप्राहुश्चाचेतिचापरे २८

अर्थ- पित्त बादी के साथ कुपित हो कर-रोम कूपों में अर्थात् रोम कहिये वालों के छिद्रों में प्राप्त हो तब मस्तक अथवा- अन्य स्थान के बाल झड़ने लगें पीछे कफ और रुधिर- रोमकूप कहिये बालों के प्रगट होने के स्थान को रोकदे- उस्से फेर बाल नहीं ऊगें इस रोग को इन्द्रलुप्त-खालित्य-चाचा- (चाई) कहते हैं-यह रोग स्त्रीन्के नही होय- कारण इसका यह है कि उन्का रुधिर महीना महीना शुद्ध होता रहै है और

१ हस्तयोः पादयोश्चापिगम्भीरानुगतंश्वरं मांसकीलंजनयतःकुपितौ कफमारुतौ मशल्यमिवतंदेशंमन्यतेतेनपीड़ितं शर्कराकदरं केचिन्मन्यतेवातकंटकम् इति-

निकलता रहे है इसी से वो रूम कूपों को नहीं रोके है· सो (विदेहाचारी ने लिखावी है और इसी रोग के खालित्य और रू त्या कहते है· सो भोजन लिखा है परंतु कार्तिकाचारी कहता है कि इन्द्रलुप्तरोग· मूछ· डाढ़ी में होय है· और खालित्य रोग सिर में होय है और रुह्या रोग पोड़ा सहित होय है·॥

दारुण

दारुणाकंडुरारूक्षाकेशभूमिः प्रपच्यते। क
फमारुतकोपेनविद्याद्दारुणकंतुतम् ॥ २९

अर्थ– कफ वायु के कोप से केशों की जमीन अति कठिन होकर खुजावे· खरदरे होंय· तथा बारीक फुंसी होकर पकें उस्को दारुणक ऐसे कहते हैं· कफ बात के कोप से यह रोग होय है· इसका कारण यह है कि विना पित्तके पाक नहीं होय· सो· (विदेहेने) कहावी है·॥

अरूंषिकाकेल·

अरूंषिवहुवक्त्राणिबहुक्लेदानिमूर्द्धनि। क
फास्रकृमिकोपेनन्हणांविद्यादरूंषिकाम् ३०

अर्थ–रुधिर· कफ· और कृमि इन्के कोप सें माथे में बहुत फुंसी होजांय· उन्में से चेप विशेष निकरे और क्लेद युक्त होंय· इन फुंसी को अथवा व्रणों को· अरूंषिका· कहते हैं

पलित (सफेदबाल)

क्रोधशोकश्रमकृतः शरीरोष्माशिरोगतः ॥

---

१ अत्यंत सुकुमाराणांरजोदुष्टं स्रवंतिचः अव्यायामवतांयस्मात्तस्मान्नख लतिस्त्रिया· इति

२ यदत्र पटलाभासं सरजस्कं शिरस्त्वचि· परुषं जायते जंतोस्तस्यरू पंविशेषतः। तोदैः सम न्वितंवातसकण्डुगौरवंकफान्मपिपासंसदाहा

पित्तंचकेशान्पचतिपलितंतेनजायते ॥ ३१ ॥

अर्थ- क्रोधशोक औरश्रमके करने से उत्पन्न भई जो शरीर-ऊष्मा (गरमी) और पित्तसो मस्तक में जाय कर बालों को पकाय दे अर्थात् सपेदकरदे-उसकर्के यह-पलित-रोग होय है-पलित रोगपर-मधुकोशटीका कारनेतथाभावप्रकाशने शास्त्रार्थ लिखे हैं ॥

मुख दूषिकाके लक्षण-

शाल्मलीकंटकप्रख्याः कफमारुतकोपजाः ॥
जायंतेपिडिकायूनांविज्ञेयामुखदूषिकाः ३२

अर्थ-कफ वायुके कोपसे-सेमरके कांटेकेसमान तरुण (जवान) पुरुषके मुखके ऊपर जो फुंसी होंय इन्को मुखदूषिका-अर्थात् मुहांसे कहते हैं इन्के होनेसे मुख बुरा होजाता है ॥

पद्मिनीकंटक

कंटकैराचितंवृत्तंमंडलंपाण्डुकण्डुरम् । पद्मिनीकंटकप्रख्यैस्तदाख्यंकफवातजम् ३३

अर्थ-कमल के कांटे के समान कांटे चारों ओर युक्त हो-गोल-पीले-रंगका-खुजलीजिसमें चलती होय-ऐसा एक मंडल होय उस्को पद्मिनीकंटक ऐसे कहते हैं-यह कफ वायुसे होय है ॥

जंतुमणि (लहसन)

सममुत्सन्नमरुजंमंडलंकफरक्तजम् । सहजंलक्ष्मचैकेषांलक्ष्योजंतुमणिःस्मृतः ३५

अर्थ- कफ रक्तसे-जन्मसें-ही प्रगट भई समान-तथा कुछ ऊंचा जिसमें पीड़ा होय नहीं-ऐसा गोल मंडलके समान देहमें चिन्ह होय- उस्को लक्ष्म कोई लक्ष्य तथा कोई जंतुमणि- ऐसे कहते हैं-यह स्त्री पुरुषों के अंगभेद कर्के शुभाऽशुभ फल दायक है ॥

मास (मस्सा)

अवेदनंस्थिरंचैवयस्मिन्गात्रेप्रदृश्यते। मा
षवत्कृष्णमुत्सन्नमनिलान्माषमादिशेत् ३६

अर्थ- बादी से शरीर के ऊपर उड़द के समान काला ·पीड़ारहित· स्थिर·कठिन कुछ ऊंची गांठ सी प्रगट होय उसको मास (मस्सा) ऐसें कहते हैं· इसश्लोक में जो चकार है उस्से कफ मेद से भी मस्से होते हैं यह दिखाया सो(ओजेन) कहावो है ॥

तिलकालक (तिल)

कृष्णानितिलमात्राणिनीरुजानिसमानिच॥
वातपित्तकफोत्सेकात्तान्विद्यात्तिलकालकान् ३७

अर्थ- वात· पित्त·कफ के कोप से काले तिल के समान पीड़ा रहित त्वचा से मिले· ऐसे अंगमें दाद होय·उन्को तिलकालक (तिल) कहते हैं· (वात·पित्त·कफोत्सेकात्) इस पाठमें वातपित्तहेतुकर्के कफ का शोष होय है· उसी से तिल होते हैं· परन्तु चरक· के मतसें पित्त से रुधिर के शोष होनेसें तिल होते हैं ॥

यस्यपित्तंप्रकुपितंशोणितंप्राप्यशुष्यति। ति
लकाःपिल्पकाव्यंगानीलिकाचास्यजायते ॥

अर्थ- इस बचन से वातवी रुधिर को· शोषण करै है· अन्यग्रंथमें बातपित्तकफ· एतीनों रुधिर को शोषण करै हैं· ॥ यथा ॥

मारुतःपित्तमादायकफरक्तसमाश्रितः। चि
नोतितिलमात्राणित्वचितेतिलकालका इति·

न्यच्छकेलक्षण

महद्वायदिवाऽल्यल्यंश्यावंवायदिवासितम्

१वातेरितेत्वचियदाद्रूष्येतेकफमेदसी·श्लक्ष्णंसदुसवर्णंचकुरुतेमाषकंवदेत्

नीरुजंमण्डलंगात्रेन्यच्छमित्यभिधीयते ३८

अर्थ- मुख के विना अन्यस्थान में शरीर के ऊपर वड़ा अथवा छोटा · काला · अथवा सपेद और पीड़ा रहित दाग होय · उस्को न्यच्छ · कहते हैं येवी (व्यंग) का भेद है ॥

व्यंग (झांई)

क्रोधायासप्रकुपितोवायुः पित्तेनसंयुतः। मुखमागत्यसहसामण्डलं विसृजत्यतः। नीरुजंतनुकंशावंमुखेव्यंगंतमादिशेत् ३९

अर्थ- क्रोध और श्रम इन्से कुपितभया वायु सो पित्त संयुक्त होकर मुख में प्राप्त होकर एक मंडल उत्पन्न करे वो दूखे नहीं वो पतला तथा स्यामवर्ण होय · उस्को व्यंग · असे कहते हैं · ॥

नीलिकाकेलक्ष·

कृष्णमेवंगुणंगात्रेमुखेवानीलिकांविदुः ४०

अर्थ- पूर्वोक्त व्यंग के लक्षण सदृश जो काला मंडल अंग में होय अथवा मुख पर होय उस्को ·नीलिका· कहते हैं · भोजने इसजगे नील का गात्र असा कहा है अर्थात् सर्व देह नीली होय है · ॥

परिवर्त्तिकाकेलक्ष·

मर्दनात्पीडनाद्वापितथैवाप्यभिघाततः। मेढ्रचर्मयदावायुर्भजतेसर्वतश्चरन् ४१ तदावातोपसृष्टत्वात्तच्चर्मपरिवर्त्तते। मणेरधस्तात्कोशस्तुग्रंथिरूपेणलंबते ४२ सवेदनंसदाहंचपाकंचव्रजतिक्वचित्

१ मारुतः क्रोधहर्षाभ्यामूर्द्धगोमुखमाश्रितः पित्तेनसहसंयुक्तः करोति वदनत्वचि नीरुजंतनुकंश्यावंव्यंगंतमितिनिर्दिशेत्। कृष्णमेवत्वकंगात्रेनीलिकांतांविनिर्दिशेत्। इति · ॥

परिवर्त्तिकेतितांविद्यात्सरुजांवातसंभवाम् ४३
सकंडूःकठिनावापिसैवश्लेष्मसमुत्थिता ॥

अर्थ- लिंग को मर्दन करने से· अथवा रगड़ने सैं उसी प्रकार लिंग में किसी प्रकार की चोट लगने से व्यान वायू कुपित होकर उस्के चर्म में प्रवेश कर सर्वत्र विचरे उस समय वात संस्पर्श हेतु करके लिंग की चर्म पृथक् होजाय· और शिश्न का कोश· सूजकर मणी के नीचे गाँठ के समान होकर लटके · उस्में पीड़ा होय· दाह होय· और कभी कभी वो पक जाय· इस पीड़ा को · परि वर्त्तिका· कहते हैं· यह बात सैं होय है·और जो कफ सै होय तौ उस्में खुजली तथा कठिनता होय·॥

अवपाटिका·

अल्पीयःखांयदाहर्षाद्बलाद्गच्छेत्स्त्रियंनरः
हस्ताभिघातादथवाचर्मण्युद्वर्त्तितेबलात् ।
मर्दनात्पीडनाद्वापिशुक्रवेगविघाततः ४४
यस्यावपाट्यतेचर्मतांविद्यादवपाटिकाम् ॥

अर्थ- जिसकी योनी का छिद्र बारीक होय·ऐसी स्त्री सै बलपूर्वक मैथुन कर्नै से अथवाहाथके अभिघातसे (चोटसे) बलसे· लिंगकेचामकोउलटनेसै·अथवामोड़नेसे·अथवाजोरपूर्वकदाबनेसै·अथवाशुक्रकेवेगकोधारणकर्नैसै·उसपुरुषकेलिंगकी चामफटजाय· इसपीड़ाको (अवपाटिका) कहतेहैं यहअवपाटिका रोगमेंतीनोंदोषोंकेलक्षण पृथक्पृथक् होतेहैंयह (मतभोजकाहै)

१ मर्दनादभिघाताद्वाकन्यायोनिप्रपीड़नात्· लक्ष्यतेयदिमेढ्रस्य वर्नेभेदैस्त्रिवक्षितम् । अवपाटिकेतितांविद्यात्पृथक्दोषैःसमन्विताम् ।वाताम्लायरुरज श्चाम्लानस्तोदकारणी । पित्तात्सदाहारक्ताद्वादाह ४४ । पदग्ध कीकठिनास्निग्धाकण्डूनत्यन्यवेदनिनि ॥१

निरुद्धप्रकाश

वातोपसृष्टेमेढ्रेतुचर्मसंश्रयतेमणिम् ४५
मणिश्चर्मोपनद्धस्तुमूत्रस्रोतोरुणद्धिच। नि
रुद्धप्रकशेतस्मिन्मंदधारमवेदनम् ४६ मू
त्रंप्रवर्त्ततेजंतोर्मणिर्विव्रीयतेनच। निरुद्धप्र
कशंविद्यात्सरुजंवातसंभवम् ४७

अर्थ- वायु के योग से लिंग पिडित होने से चामडी सूजकर मणिभाग में प्राप्त होय- वो मणि चर्म के संकोच होने से -मूत्र के मार्ग को रोके तब मूत्र का रोध होय तब उस पुरुष का मूत्र ठहर ठहर कर निकले - परन्तु पीड़ा नहीं होय- औरमणी वाहर नहीं निकले- इस रोग युक्त बातजन्य पीड़ा को (निरुद्ध प्रकाश) कहते हैं चर्मके संकोच होने को निरुद्ध कहते हैं- और मूत्र की धार मन्द निकलने को प्रकाश कहते हैं- (अवेदनम्) यहजो मूल में पाठ है इस जगे कोई- (सवेदनम्) ऐसा कहते हैं भोज आचारी के मत से कहते हैं सो भोज संहिता में लिखावी है- ॥

संनिरुद्धगुदकेल-

वेगसंधारणाद्वायुर्विहतोगुदसंस्थितः। नि
रुणद्धिमहास्रोतःसूक्ष्मद्वारंकरोतिच ४८॥
मार्गस्यसौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेणपुरीषंतस्यगच्छति
सन्निरुद्धगुदंव्याधिमेनंविद्यात्सुदारुणम्। ४९

१ मेढ्रान्तेचर्मणियदामारुतोकुपितोभृशम्। द्वारंनिरुणद्धिशनैः प्रकाशं चमुहुर्भवेत्। मूलंमूत्रंयत्रकृच्छ्रात्प्रकाशन्तुयदाभवेत्। वतोपसृष्टमेढ्रं चर्मणिनैवविदीर्यते। निरुद्धंचप्रकाशंव्याधिंविद्यात्सदारुणम्॥

अर्थ- मल मूत्रादिकों के वेग रोकने से · गुदाश्रित अपान वायु कुपित होकर महा स्रोत्र (गुदा) का अवरोध करे और वो द्वारको छोटा करे पीछे मार्ग छोटा होनें सै· उस पुरुष का मल बड़े कष्ट से बाहर निकले इस भयंकर रोग को· संनिरुद्धगुद · कहते हैं· इस रोग में भी निरुद्ध प्रकाश के समान· चर्मका संकोच होने से सन्निरुद्ध गुद होय है ·अर्थात् अपान वायू के रुकने से पुरीष (मल) का अनिर्गम होय है· ॥

अहिपूतना

शकृन्मूत्रसमायुक्तेऽधौतेऽपानेशिशोर्भवेत्
स्विन्नेवास्नाप्यमानेवाकंडूरक्तकफोद्भवा। ५०
ततःकंडूयनात्क्षिप्रंस्फोटाःस्रावश्चजायते।
एकीभूतंव्रणैर्घोरंतंविद्यादहिपूतनम्। ५१।

अर्थ- बालक के मल मूत्र करने के अनंतर गुदा के न धोने से अथवा पसीना आने सें · तथा धोनेके अनन्तर रुधिर कफ़ सै खुजली उत्पन्न होय तदनन्तर खुजाने से शीघ्र फोड़ा उत्पन्न होंय और उन्से स्राव होय पीछे ये सब मिलकर इस भयंकर व्याधिको (अहिपूतन) कहते हैं · यह रोग बहुधा बालकोम (छोटे छोटे रोम) में होय हैं· ॥

भोज कहता है कि यह रोग दुष्ट स्तन्य पान अर्थात् माताके दुष्ट दूधके पीने से बालक के होय है· ॥

वृषणकच्छू

१ दुष्टस्तन्यस्यपानेनमलस्याक्षालनेनच। कण्डूदाहरुजा वह्निःपीड़कैश्च समाचिता। अहिपूतनासंभवतियथा दोषञ्चदारुणा इति ॥

स्नानोत्सादनहीनस्यमलोवृषणसंस्थितः।
यदाप्रक्लिद्यतेस्वेदात्कंडूःसंजायतेतदा ५२
कंडूयनात्ततःक्षिप्रंस्फोटाःस्रावश्चजायते·
प्राहुर्वृषणकच्छूंतांश्लेष्मरक्तप्रकोपजाम् ५३

अर्थ- जो मनुष्य स्नान करते समय लगे हुए मलको नहीं-धोवे· उस पुरुष का मल अंडकोशों मे संचित्त होय पीछे वो पसीना आने से गीला होय तब अंडकोशों में घोरपीड़ा होय और खुजाने से तत्काल फोड़ा होय-पीछे वो फोड़ा स्रव कर आपस में मिलजाते हैं· कफ रक्त से होने वाली इसव्याधिको·(वृषणकच्छू) कहते हैं·॥

गुदभ्रंश

प्रवाहणातिसाराभ्यांनिर्गच्छतिगुदंबहिः।
रूक्षदुर्बलदेहस्यगुदभ्रंशंतमादिशेत् ५४

अर्थ- जिस पुरुष की देह रूक्ष और अशक्त होय उसपुरुष के प्रबाहन (कुन्थन) तथा अतीसार हेतु करके गुदा बाहर निकल आवे अर्थात् (कांच) बाहर निकल आवे·उस रोग को·गुदभ्रंश·रोग कहते हैं· इस रोग में धातु क्षय होने से वात कुपित होय है·

सूकरदंष्ट्र

सदाहोरक्तपर्यंतस्त्वक्पाकीतीव्रवेदनः॥
कंडूमान्ज्वरकारीचसःस्यात्सूकरदंष्ट्रकः ५५

अर्थ- दाह युक्त चारों ओर लाल होय· जिस्की त्वचापकने वाली होय तीव्र पीड़ा युक्त-खुजली संयुक्त·तथा ज्वरकरने वाली ऐसी सूजन अथवा व्रण होय उस्को-सूकरदंष्ट्र अर्थात् वराह डाढ़ कहते है·॥

इति श्री दत्तराम माथुर निर्मित माधव भावार्थ दीपिकाभाषामाथुरीटीकायांक्षुद्ररोगनिदानम्।

मुखरोगनिदान
संख्या

दंतेष्वष्टावोष्ठयोश्चमूलेषुदशपंचच।नव तालुनिजिव्हायांपंचसप्तदशामयाः १ कंठे त्रयःसर्वसरएकषष्टिचतुःपरे।

अर्थ- दंतरोग ८ होठके रोग ८ दंतमूल के रोग १५ तालुओं के रोग ९ जिव्हाके ५ कंठके रोग १७ और सर्व सर्वसर ३ ऐसे सब मिलकर पैंसठ ६५ मुख रोग हैं ÷ येश्लोक माधव के नहीं हैं भोज संहिता के हैं ॥

तिनमें ८होठकेरोगकी संप्राप्ति

अनूपपिशितक्षीरदधिमाषादिसेवनात्। मुखमध्येगदान्कुर्युः क्रुद्धादोषाःकफोत्तराः

अर्थ- जल संचारी प्राणीन्के मांस दूध दही उरद आदि पदार्थ के सेवन करने से कुपित भए कफादिक दोष सो मुख में रोग उत्पन्न करते हैं ॥

वातिकओष्ठरोग

कर्कशौपरुषौस्तब्धौकृष्णौतीव्ररुजान्वितौ दाल्येतेपरिपाल्येतेओष्ठौमारुतकोपतः २॥

अर्थ- बादी के कोप से होठ कर्कश खरदरे कठोर काले होते हैं उन्में तीव्र पीड़ा होय वो दो टुकड़ाके समान होजाय तथा होठ की त्वचा किंचित् फट जाय ॥

पैत्तिक

चीयंतेपिडिकाभिस्तुसरुजाभिःसमंततः ॥
सदाहपाकीपिडिकौपीताभासौचपित्ततः । ३

अर्थ- पित्त से होठ में चारों ओर फुंसीन से प्राप्त हो उन्में पीड़ा होय तथा पक जावे और पीले से दीखें इस्में जो दाह और पाक कहे हैं सो विशेष ताके शूचक है ॥

श्लैष्मिक

सवर्णाभिस्तुचीयंतेपिडिकाभिरवेदनौ । भ
वतस्तककफादोषौपिच्छिलौशीतलौगुरू ४

अर्थ-कफ से होठ त्वचा के समान वर्ण वाले फुन्सी सैव्याप्त होंय कुछ दूखें तथा मलाई के समान चिकने और शीतल तथा भारी होंय ॥

सान्निपातिक

सकृत्कृष्णौसकृत्पीतौसकृच्छ्वेतौतथैवच
सन्निपातेनविज्ञेयावनेकपिडिकान्वितौ । ५ ।

अर्थ-सन्निपात से होठ कभी काले कभी पीले उसी प्रकार कभी सपेद तथा अनेक प्रकार की फुन्सीनसें व्याप्त होय ॥

रक्तज

खर्जूरीफलवर्णाभिः पिडिकाभिर्निपीड़ितौ
रक्तोपसृष्टौरुधिरंस्रवतःशोणितप्रभौ ॥ ६ ॥

अर्थ-रुधिर से होठों में खजूर फल के वर्ण की फुंसी होय उनेंसैरुधिरगिरे तथा वो होठरुधिरके समान लाल होंय

मांसज

मांसदुष्टौगुरुस्थूलौमांसपिंडवदुद्गतौ । जन्त
वश्चात्रमूर्च्छंतिनरस्योभयंतामुखम् ७

अर्थ- मांस दुष्ट होने से होठ जड़ (भारी) मोटे होते हैं मांस पिंडके समान ऊंचे होंय इस रोग वाले मनुष्य के दोनों होठों में अथवा होठों के प्रांत भाग में कीड़े पड़जावें

मेदोज·

सर्पिमंडप्रतीकाशौ मेदसा कंडुरौ गुरू । स्वच्छं स्फटिकसंकाशमास्रावं स्रवतोभृशम् ८
तयोर्व्रणो न संरोहेन्मृदुत्वं च न गच्छति ॥

अर्थ- मेदसे होठ घृत के झाग समान खुजली संयुक्त तथा भारी होय तथा उनमें से स्फटिक के समान निर्मल स्राव बहुत होय इस्में भया व्रण भरे नहीं है तथा उस्में मृदुता नहीं रहै ॥

अभिघातज

ओष्ठौ पर्यवदीर्येते पीड्येते चाभिघाततः । ग्रथितौ च तदा स्यातां कंडूक्लेदसमन्वितौ ९ ।

अर्थ- अभिघात से (चोट लगने से) होठ सर्वत्र चिरजांय· पीड़ा होय· उस्में गांठ होजाय· तथा उनमें खुजली चलते समय पीव बहे कोई कहते हैं कि अभिघात के ओष्ठ रोग में केवल ऊपर का होठ फटता है· इस रोग में भी कफ पित्त सहायक जानने सो (भोजने) कहावो है ॥

दंतमूलगत१५रोग

शीताद

शोणितं दन्तवेष्टेभ्यो यस्याकस्मात्प्रवर्त्तते
दुर्गन्धीनि सकृष्णानि प्रक्लेदीनि मृदूनि च १०

अर्थ-

१ क्षताभिलतौ चापि रक्ताबोष्ठौ सवेदनौ· भवतः सपरिस्रावौ कफरक्तप्रदूषिता चिति ÷ वातजः केवलः स्वकारणकुपितः अत्र तु वायुः अभिघातल्लभ्य ति

दंतमांसानिशीर्यन्तेपचंतिचपरस्परम् । शी
तादोनामसव्याधिःकफशोणितसंभवः २१ ।

अर्थ- जिस्के मसूढेन् में से अकस्मात् रुधिर वहे औरदांतो का मांस दुर्गंध युक्त· काला पीव सहिततथा नरम होकर गिरे औ र एक दांत का मसूढा पकने सैवो दूसरेमसूढे को पकावे यह कफ रुधिर से प्रगट व्याधिको (शीताद) नाम कहते हैं॥

दन्तपुप्पुट·

दंतयोस्त्रिषुवायस्यश्वयथुर्जायतेमहान् ॥
दंतपुप्पुटकोनामसव्याधिःकफरक्तजः २२

अर्थ- जिसके दो अथवा तीन दांत की जड़ में महान सूजन होय उस्को दंतपुप्पुट· नाम कहते हैं यह व्याधिकफ रक्तसे होती है· परन्तु आगे जो सौषिर रोग कहेंगे ·उसमें यहभिन्न है·

दंतवेष्ट

स्रवन्तिपूयंरुधिरंचलादंताभवन्तिच ।दंत
वेष्टः सविज्ञेयोदुष्टशोणितसंभवः ॥२३॥

अर्थ-रुधिर दुष्ट होने सें दांतों में सै रुधिर तथा राध बहे-त था दांत हलने लगें उस्को दंतवेष्ट· रोग कहते हैं·॥

सौषिर·

श्वयथुर्दन्तमूलेपुरुजावान्कफरक्तजः ॥
लालास्रावीसविज्ञेयः सौषिरोनामनामतः२४

अर्थ-कफ रुधिर से· दांतों की जड़ में· सूजनहोय उसमें पीडाहोय- और स्राव होय उस्को· सौषिर ·रोगक हते हैं पूर्वोक्तदंत पुप्पुटमेंपीडा ·और स्राव नहीं होय है इसीसेयहपृथकहै·

महासौषिर

दन्ताश्चलन्ति वेष्टेभ्य स्तालुचाप्यवदीर्यते।
यस्मिन्स सर्वतो व्याधिर्महासौषिरसंज्ञकः। २५

अर्थ- इस त्रिदोष व्याधिक के मसूडे के समीप सें दांत हलें और तालु में छिद्र पड़जांय-चकार सें दांत और होठ भी फट जांय उस्को महासौषिर रोग कहते हैं यह रोग मनुष्य को सातदिन में मार डाले हैं-सो भोजने-कहा भी है-परन्तु गदाधर कहता है सौषिर में जो भोजने लक्षण कहे हैं सो होंय तो उसी को महा सौषिर कहते हैं-॥

परिदर

दंतमांसानि शीर्यन्ते यस्मिन्ष्ठीव्यति चाप्यसृक्
पित्तासृक्कफजो व्याधिर्ज्ञेयः परिदरो हि सः २६

अर्थ-इस रोग कर्के दांतों का मांस बिखर जाय-और थूकने सै रुधिर गिरे इस व्याधि को परिदर कहते हैं यह रोग पित्त रुधिर-कफ से होय है-॥

उपकुश

वेष्टेषु दाहः पाकश्च ताभ्यां दन्ताश्चलंति च
अवाक्कृताः प्रस्रवंति शोणितं मन्दवेदनाः २७
आध्मायन्ते स्नुते रक्ते मुखे पूतिश्च जायते। य
स्मिन्नुपकुशो नाम पित्तरक्तकृतो गदः २८

अर्थ-जिस्के मसूढेन में दाह होकर पाक और दांत हलने लगें मसूढेन्के घिसने से रुधिर मंद पीड़ा के साथ निकले रुधिर निकलने के पिछाड़ी फेर मसूढे फूल आवैं और मुख

१ सदाहो दंतमूलेषु शोथः पित्तकफानिलात् जातः कफक्षययति क्षीणे तस्मिन्सशोणितम्। विवद्धमनिषंनंता ताल्वोष्ठमपि दारयेत्-महासौषिर मित्येतत्सप्तरात्रात्रि हंत्यसून् ॥

में वास आवै इस पित्त रक्त कृत विकार को-उपकुश कहते हैं

वैदर्भ-

घृष्टेषुदन्तमूलेषुसंरम्भोजायतेमहान्।भ
वन्तिचचलादन्ताः सवैदर्भोऽभिघातजः १९

अर्थ-मसूड़े रगड़ने से सूजन बहुत होय-और दांत हलने लगें उस्को वैदर्भ-रोग कहते हैं यह रोग चोट के लगने से होय है-

खल्लीवर्द्धन

मारुतेनाधिकोदन्तोजायतेतीव्रवेदनः।ख
ल्लीवर्द्धनसंज्ञोवैजातेरुक्चप्रशाम्यति २०

अर्थ-बादी के योग से दांत के ऊपर दूसरा दांत ऊगै उस समय पीड़ा होय-जब वो दांत ऊग आवै तब पीड़ा शांत होय उस्को खल्लीवर्द्धन-कहते हैं

कराल

शनैः शनैःप्रकुरुतेवायुर्दन्तसमाश्रितः।क
रालान्विकटान्दंतान्करालोनचसिद्ध्यति।

अर्थ-बादी धीरे धीरे मसूढ़े का आश्रय लेकर दांतो को टेढ़े तिरछे करे उस्को कराल-रोग कहते हैं यह रोग साध्य नही होय-

अधिमांसक

हानव्ये पश्चिमे दंते महान् शोथो महारुजः।
लालास्रावी कफकृतो विज्ञेयो ह्यधिमांसकः २२

अर्थ- जिस्के पीछे की डाढ़ के नीचे अर्थात् मसूढ़े में बहुत सूजन होय-और घोर पीड़ा होय तथा लार बहुत बहै उस्को अधिमांसक-कहते हैं यह कफ के कोप से होय है-॥

नाड़ीव्रण

दन्तमूलगतानाड्यःपंचज्ञेयायथेरिताः २३

अर्थ– नाड़ीव्रणनिदान में वात-पित्त-कफ-सन्निपात-और आगंतुज ऐसे पांच प्रकार के जो नाड़ी व्रण कहे हैं वे दंत मूल-(मसूढेनें) होते हैं ÷ पहिले १२ और ५ नाड़ी व्रण ऐसे मिलकर १६ दंतमूल (मसूढेके) रोग होते हैं-परन्तु करालरोग सुश्रुतके मत से अधिक है तथापि संग्रह कारने अपने ग्रंथ में लिखा है इसी से हमने भी यहां लिख दीना है-येपांच नाड़ी व्रण शाल्याक्य सिद्धान्तके मत से संख्या पूरणार्थ माधवाचार्य ने लिखी है.

दंतरोग ८ लि.

दालन

दीर्यमाणेष्विवरुग्जायस्यदन्तेषुजायते। दा
लनोनामसव्याधिःसदागतिनिमित्तजः २४

अर्थ–जिसके दांतो में फोड़ने कीसी पीड़ा होय उसको दालन रोग कहते हैं यह रोग बादी से होय है.

कृमिदंतक

कृष्णाच्छिद्रश्चलस्त्रावीससंरम्भोमहारुजः।
अनिमित्तरुजोवातात्सज्ञेयःकृमिदन्तकः २५

अर्थ– बादी के योग से दांतों में काले छिद्र पड़जांयतथा हलने लगें उन्में से स्राव होय शोथ युक्त-पीड़ा होने वाला-और कारण बिना दूखने वाले ऐसा होय उसको कृमिदंत-रोग कहते हैं-यहां दांतो में काले छिद्र पड़ने का यह कारण है कि दुष्ट रुधिर से कृमि (कीड़ा) पैदा होकर दांतो में छिद्र करते हैं॥

भंजनक

वक्रंवक्रंभवेद्यस्यदन्तभंगश्चजायते। कफ
वातकृतोव्याधिःसभंजनकसंज्ञितः२६

अर्थ-इस व्याधि कर्के मुख टेढा होकर दांत फूटने लगें यह व्याधि कफ वात कर्के होय है· दांत भंगकारी दोष के प्रभाव से मुख बी टेढा होय है ॥

दंतहर्ष·

शीतरूक्षप्रवाताम्लस्पर्शानामसहाद्विजाः।
पित्तमारुतकोपेनदन्तहर्षःसनामतः २७

अर्थ- दांत शीतल· रूक्ष· खटाई· इत्यादि पदार्थ और पवन इन्के लगने को जो नहीं सहि सके उस्को दंतहर्ष कहते हैं· यह रोग पित्त वायु के कोप से होय है· इस रोगको वातज होने परभी उष्ण (गरमी) को नहीं सहि सके यहव्याधि का स्वभाव है· इस अंग दूसरा जो पाठान्तर है वो नीचे लिखें हैं ॥

दंतशर्करा

मलोदन्तगतोयस्तु पित्तमारुतशोणितः।श
र्करेवखरस्पर्शासाज्ञेयादन्तशर्करा २८

अर्थ- दांतो का मल पित्त वायु के प्रभावसे सूखकर रेत के समान खरदरा स्पर्श मालूम होय उस रोग को दंतशर्करा ऐसे कहते हैं·इसश्लोकमें (सादंतानांगुणहरा) ऐसाभी पाठ है· इस्का यह अर्थ हुआ कि· दांतो के गुण शुक्ल और दृढादि उन्को दूर करै ॥

कपालिका

१ शीतमुष्णं दशनाः सहतेस्पर्शनंनचयस्यदंतंचहर्षेतुविंद्यात्पित्तसमीर

कपालेष्विवदीर्णेषुदन्तानांसैवशर्करा ।क
पालिकेतिसाज्ञेयासदादंतविनाशिनी २९

अर्थ- कपाल कहिये मट्टी के घड़ा आदि के जैसें टूक होय हैं ऐसे दांत मलकरके सहित होजांय तो उसी पूर्वोक्त दंत श केरा को · कपालिका ऐसे कहते हैं· यह रोग दांतोका सदा नाश कर्त्ता है ॥

श्यावदंत

योऽस्रङ्मिश्रेणपित्तेनदग्धोदंतस्त्वशेष
तः।श्यावतांनीलतांवापिगतःसश्यावदंतकः ३०

अर्थ- जो दांत रुधिर से मिले पित्त सें जले के समान सवका ले होजाय उन्को श्यावदंत कहते हैं ॥

हनुमोक्ष

वातेनतैस्तैर्भावैस्तुहनुसंधिर्विसंहतः।हनु
मोक्षइतिज्ञेयोव्याधिरर्दितलक्षणः ३१

अर्थ- वादी के योगसें तिस तिस अभिघातादिक करके ह नुसंधी (ठोड़ी) में चोट लगने सैं दांत चलाय मान होजांय उस्को हनुमोक्ष कहते हैं इस्के लक्षण अर्दित रोग जोवा त व्याधि में कहि आये हैं उस प्रकार के होंय · सुश्रुत ने इस रोग को दांतो के समीप होने से दंतरोग कहा है परन्तु सं ग्रह कारने मुख्य दंत रोग न होने से नहीं लिखा इस्को संग्र हकार ने भोज के कहे अनुसार वात व्याधि में लिखा है इ सी से हनुमोक्ष रोग का पाठ किसी पुस्तक में लिखा है औ र किसी में नहीं लिखा · ॥

जिव्हागत ५ रोग

जिव्हाऽनिलेनस्फुटितानासुप्ताभवेच्चशा

कच्छदनप्रकाशा ॥

अर्थ- बादी सैं जीभ फटीसी · प्रसुप्त (रसकाज्ञान जाता रहे) औरपर्वती वृक्षके पत्र समान काँटे युक्त खरदरी हो · ॥

पित्तज

पित्तेनपीतापरिदह्यतेचदीर्घैःसरक्तैरपि कंटकैश्च ॥ ३२॥

अर्थ- पित्त से जीभ · पीली होय उसमें दाह होय · उसमेंलंबे लंबे तामें के समान काँटे होंय इस रोग कोलौकिक में जाली· कहते हैं · अथवा जोड़ी कहते हैं

कफज

कफेनगुर्वीबहलाचिताचमांसोच्छ्रयैःशाल्मलिकंटकाभैः॥

अर्थ- कफ सें जीभ मोटी · भारी होय है · और उसैं सेमर के से काँटे के समान मांस के अंकुर होंय ·

अलास

जिव्हातलेयःश्वयथुःप्रगाढःसोऽलाससंज्ञःकफरक्तमूर्तिः। जिव्हांसतुस्तंभयतिप्रवृद्धोमूलेचजिव्हाभ्रशमेतिपाकम् ३३

अर्थ- जीभ के नीचे कफ रुधिर सें प्रगट भैसी भयंकरसूजन होय उस्के बढ़ने सें स्तंभ होय · तथा जीभके मूल में सूजन होय यह रोग असाध्य है · ॥

उपजिव्हा

जिव्हाग्ररूपःश्वयथुःसजिव्हामुन्नम्यजातःकफरक्तमूर्तिः।लालाकरःकण्डुयुतःसचोषःसात्पजिव्हाकथिताभिषग्भिः ३४

अर्थ- कफ रुधिर सै जिह्वाग्रके समान (जैसा जीभका आगे का भाग होय है) ऐसा सूजन जीभ को नीची दवायकर उत्पन्न होय उस्के योग सै लार बहुत बहै और उस्में खुजली चले तथा दाह होय दाह इसमें रक्तपित्त का कारण पित्त है उस्से होय है इस रोग को वैद्य उपजिव्हा ऐसे कहते हैं॥

तालुगतर्दरोग

कंठशुंडी

श्लेष्मासृग्भ्यांतालुमूलात्प्रवृद्धोदीर्घःशोथो
ध्मातवस्तिप्रकाशः॥ तृष्णाकासश्वास
कृत्तंबदन्तिव्याधिंबैद्याःकंठशुंडीतिना
म्ना॥३५॥

अर्थ-कफ रुधिर से तालु के मूल में फूली बस्ती के समान भारी सूजन होय इस के प्रभाव से प्यास खाँसी श्वास होते हैं इस रोग को बैद्य कंठशुंडी कहते हैं॥

तुंडकेरी

शोथःस्थूलस्तोददाहप्रपाकीप्रागुक्ताभ्यांतु
ण्डिकेरीमतातु

अर्थ- कफरक्त से तालुए में बन कपास के फलके समान सूजन होय और उसमें पीड़ा सुई के छेदने कासा दुःख और दाह होकर पके उस्को तुंडकेरी कहते हैं

अध्रुव

शोथःस्तब्धोलोहितस्तालुदेशेरक्तात्स्याय:
सोऽध्रुवोरुक्ज्वरश्च ३६

अर्थ-रुधिर सै तालुएमें लाल स्तब्ध (लठर) ऐसी सू

जनहोयउस्में पीड़ा और ज्वरहोयउस्को अध्रुव ऐसे कहत्ते हैं-

कच्छप

कूर्मोत्सन्नोऽवेदनोऽशीघ्रजन्मारोगोज्ञेयः
कच्छपःश्लेष्मणावा

अर्थ- कफसे तालुए में कछुआ की पीठके समान ऊंची सूजन होय उस्में पीड़ा थोड़ी होय· वह शीघ्र बढ़े नहीं उस्को कच्छप रोग कहते हैं ॥

अर्बुद

पद्माकारंतालुमध्येतुशोथंविद्याद्रक्तादर्बु
दंप्रोक्तलिंगम् ३७

अर्थ-रुधिर से तालूए में कमल की कर्णिकाके समान सूजन होय इस्के लक्षण अर्बुद निदान में जो रक्तार्बुद के कहे हैं· उस्के प्रमाण जानने ॥

मांससंघात

दुष्टंमांसंनीरुजंतालुमध्येकफाच्छूनंमां
ससंघातमाहुः ॥

अर्थ- कफ करके तालुए में दुष्ट मांस होकर के जो सूजन होय और वो दूखै नहीं उस्को मांससंघात कहते हैं ॥

तालुपुप्पुट

नीरुक्स्थायीकोलमात्रःकफात्स्यान्मेदोयु
क्तःपुप्पुटस्तालुदेशे ३८

अर्थ- मेद युक्त कफ करके तालुए में पीड़ारहित औरस्थिर तथा बेर के समान सूजन होय उस्को तालुपुप्पुट ऐसेकहते हैं ॥

तालूशोष

शोषो ऽत्यर्थं दीर्यते चापि तालुः श्वासश्चो
ग्रस्तालुशोषो ऽनिलाच्च ॥

अर्थ-बादी से तालु अत्यंत सूखकर फटजाय तथा भयंकर श्वास होय उस्को तालुशोष कहते है

तालुपाक

पित्तंकुर्यात्पाकमत्यर्थघोरं तालुन्येवंतालु
पाकंवदंति ३९

अर्थ- पित्त कुपित होकर तालुए में अत्यंत भयंकर पाक (पकीफुंसी) उत्पन्न करे उस्को तालुपाक कहते हैं ॥

कंठगत १७ रोग

तिन्मे पांच रोहिणी की सामान्य संप्राप्ति

गलेऽनिलः पित्तकफौचमूर्च्छितौप्रदूष्यमां
संचतथैवशोणितम् । गलोपसंरोधकरैस्त
थांकुरैर्निहंत्यसून्व्याधिरयंहिरोहिणी ४०।

अर्थ- गले में वायु. पित्त. और कफ. ए दुष्ट होकर मांस को तथा रुधिर को दूषितकर गले में अंकुर (कांटे) उत्पन्नकरे है । उन्से गला रुक जाय. यह रोहिणी नाम व्याधि प्राणनाशक है ÷ सब रोहिणी संन्निपात से प्रगट होती हैं. उत्कर्ष के वास्ते वात आदि का व्यय देश है. इन सबका असाध्यत्व भोजने पृथक् पृथक् लिखा है.

वातजा

जिव्हासमन्ताद्भृशवेदनास्तुमांसांकुराःकं

---

१ सद्यस्त्रिदोष जो हंतित्र्यहात्श्लेष्म समुद्भवा ॥ पंचाहात्पित्त संभूतास
प्ताहात्पवनोत्थितेति ॥ इति.

ठनिरोधनाय । सारोहिणीवातकृता प्रदिष्टा
वातात्मकोपद्रवगाढयुक्ता ४१

अर्थ- जीभ के चारों और अत्यंत वेदना युक्त जो मांसांकुर उत्पन्न होंय उन्सें कंठका अवरोध होय तथा कंप· विनाम· स्तंभादि वात के उपद्रव होंय ॥

पित्तजा

क्षिप्रोद्गमाक्षिप्रविदाहपाका तीव्रज्वरापि
त्तनिमित्तजाता

अर्थ-पित्त से प्रगट भई रोहिणी शीघ्र बढ़े तथा शीघ्रहीपके उस्के योग से तीव्र ज्वर होय ॥

कफजा

स्त्रोतो निरोधिन्यपिमन्दपाकास्थिरांकुराया
कफसंभवासा ४२

अर्थ-जो रोहिणी कंठके मार्ग को रोधकरे (रोकदे) तथा हौले हौले पके· तथा जिस्के अंकुर कठिन होंय· वो कफ जन्य जाननी ॥

त्रिदोषजा·

गम्भीर पाकिन्यनिवार्यवीर्या त्रिदोषलिंगा
त्रि तयोत्थितासा ।

अर्थ- त्रिदोष से उत्पन्न भई रोहिणी गंभीर पाकिनी· (जिसमें राध बहुत हो) तिस्में औषधी का प्रभाव नहीचले और तीन दोषों के लक्षणों से युक्त होय· यह तत् काल प्राणो का हरण करे ॥

रक्तजा

स्फोटैश्चितापित्तसमानलिंगासाध्याप्रदिष्टा

रुधिरात्मकात्तु ॥

अर्थ- रुधिर की रोहिणी पित्त रोहिणीके समान जाननी तथा फोड़ान्सै व्याप्त होय· यह साध्य है ॥

कंठशालूक

कोलास्थिमात्राकफ संभवो यो ग्रंथिर्गलेकं टकशूकभूतः । खरः स्थिरः शस्त्रनिपातसा ध्यस्तंकंठशालूकमितिब्रुवन्ति ॥ ४४ ॥

अर्थ- कफ सै गले में बेरकी गुठ्ली समान गांठ होय उसमें बारीक - कांटे होंय-तथा खरदरी · और कठिन होय· यहरोग शस्त्रों सें साध्यहोय· इसरोगको कंठशालूक रोग कहते हैं·

अधिजिव्ह

जिव्हाग्ररूपः श्वयथुः कफात्तु जिव्होपरिष्टा दपिरक्तमिश्रात् । ज्ञेयोऽधिजिव्हः खलुरोग एष विवर्जयेदागतपाकमेनम् ४५

अर्थ- रक्त मिश्रित कफ सैं · जीभके अग्र भाग सदृश जीभमें सूजन होय· इस्को अधिजिव्ह · कहते हैं· यह पकनेसे असाध्य जानना· ॥

वलय

बलासएवायतमुन्नतंच ग्रंथिंकरोत्यन्नगतिं निवार्य । तसर्वथैवाप्रतिवार्यवीर्यं विवर्जनीयंवलयंवदन्ति ४६

अर्थ- कफ सैं ऊंची औरलंबी ऐसी गांठ कंठ में उत्पन्न होय उस्के योग सैं कंठ में ग्रास (गस्सा) उतरे नहीं· तथा उसमें कोई उपाय नहीं चले इस रोगको· वलय कहते हैं· इस्को वैद्य त्याग देय· ॥

वल्लास

गलेतुशोथंकुरुतः प्रवृद्धौश्लेष्मानिलौश्वा
सरुन्नोपपन्नम् । मर्मच्छिदंदुस्तरमेनमाहु
र्वल्लाससंज्ञं निपुणाविकारम् ४७

अर्थ- कुपितभयेजोकफ-वायुसोगलेमेंसूजनउत्पन्नकरेंउस से श्वास होय तथा कंठदूखे-इसमर्म भेदकरनेवाली दुस्तरव्याधिकोवैद्यवल्लास- ऐसे कहते हैं॥

एकवृंद

वृत्तोन्नतोंऽतःश्वयथुःसदाहःसकंडुरोऽपा
क्यमृदुर्गुरुश्च । नाम्नैकवृंदःपरिकीर्तितो
ऽसौव्याधिर्वलासक्षतजप्रसूतः॥ ४८॥ ॥

अर्थ- गले में गोल-ऊंचो- किंचित् दाह युक्त खुजाने वाली ऐसी सूजन होय- वह किंचित् पंके-ओर कुछ नरम होय- तथा भारी होय- इस्का नाम एकवृन्द है-यह व्याधि कफ रक्त से होय है-॥

वृन्द

समुन्नतंवृत्तममंददाहं तीव्रज्वरंवृंदमुदाहरंति । तंचापिपित्तक्षतजप्रकोपात् । विद्यात्सतोदंपवनात्मकंतु ४९

अर्थ- गले में ऊंचो-गोल-तीव्र दाह तथाज्वर युक्त जो सूजन होय उस्को वृन्द कहते हैं-येवी रक्त पित्तके कोपसे होय है-इसमें वायु के संबध होने से सुई के चोंटने की पीड़ा होय- ∸ शंका ∸ क्योंजी कंठके १७ रोग कहे हैं- और वृन्दको मिलायकर अठारे रोगहुए-तोकहिये किसतरे संख्या में भेद हुआ उत्तर तुमने कहा सो ठीक है परंतु तुल्यस्थानः आकृति

होने से एक वृन्दकाही भेद वृन्द रोग जानना· ऐसे माने से संख्या में विरोध नहीं पड़े· यद्यपि एक वृन्द कफ रक्तज है· और वृन्द रोग पित्त रक्तज कहा है· तथापि जैसे वृन्दका चोटनी· कच्च· कर्के वातात्मकत्व कहा है· तोवो· एक वृन्दकी अवस्था विशेष होने में· वृन्द को एक वृन्द के साथ ग्रहण करा है· जैसे कामला के लक्षण से भिन्न वी है तथापि हलीमक कामला काही भेद जानना और· भोजने वी इसको एक वृन्द काही भेद कहा है· गदाधर· कहता है कि छंदानुरोधके निमित्त एकवृन्दशब्दके एक शब्द कालोपकर· वृंदशब्दही मूल में धरा यासे वृन्द और एक वृन्द ए दोनो एकही हैं

शतघ्नी

वर्तिर्घनाकंठनिरोधिनीयाचित्ताऽतिमात्रंपिशितप्ररोहैः । अनेकरुक्प्राणहरीत्रिदोषात् । ज्ञेयाशतघ्नीतुशतघ्निरूपा ४०

अर्थ– कंठ में लंबी और कठिन सूजन होय उस कर्के कंठ रुक जाय और उस सूजन ऊपर मांस के अंकुर बहुत होंय तथा· उसमें· तोद (चोंटनी) दाह· खुजली आदि अनेक वेदना होंय·यह प्राण हरने वाली सूजन को शतघ्नी (लंबे तथा कांटे लंबे जिसमें होंय· ऐसे शस्त्र) के समान होय इसी से इस रोग को यह संज्ञा दीनी है· ॥

१ श्लेष्मरक्तसमुत्थानमेकवृन्दं विभावयेत् तुल्यस्थानाकृतिर्वृन्दो वृन्दजोरक्त पित्तजः इति· ॥

गिलायु.

ग्रंथिर्गलेत्त्वामलकास्थिमात्रः स्थिरोऽल्प
रुक् स्यात्कफरक्तमूर्त्तिः ॥ संलक्ष्य
तेसक्तमिवाशनंचसशास्त्रसाध्यस्तुगि-
लायुसंज्ञः ॥ ५१॥

अर्थ- कफ रक्त के कोप से गले में आंवले की गुठली के बराबर गांठ उत्पन्न होवे वह गांठ कठिन मंद पीड़ा वाली हो इसके होने से अन्न गले में अटकता सा मालूम देवे यह रोग शास्त्र के द्वारा अर्थात् शस्त्र से काटने से साध्य होवै ५१॥

गलविद्रधि

सर्वगलंव्यप्यसमुत्थितोयः शोथोरुजःसं
तिचयत्रसर्वाः ॥ ससर्वदोषोगलविद्रधि
स्तुतस्यैवतुल्यःखलुसर्वजस्य॥५२॥

अर्थ- जो सूजन सब गले में व्याप्त होवे तथा जिसमें सर्वप्रकार की पीड़ा होय वह विद्रधि निदान में जो त्रिदोष की विद्रधि कही है उसके समान (गलविद्रधि) के लक्षण जानने ५२॥

गलौघ

शोथोमहानन्नजलावरोधीतीव्रज्वरोवायु
गतेर्निहन्ता ॥ कफेनजातोरुधिरान्विते-
नगलेगलौघःपरिकीर्त्यतेसौ ५३

अर्थ- रक्तयुक्त कफ से गले में भारी सूजन होय उसके योग से कंठ में अन्नजल का अवरोध (रोकावट) होय तथा वायु का संचार होय नहीं इसको वैद्य (गलौघ) कहते हैं ॥

स्वरघ्न

यस्ताम्यमानः श्वसिति प्रसक्तं भिन्नस्वरः
शुष्कविमुक्तकंठः कफोपदिग्धेष्वनिल
यतेषुज्ञेयः सरोगः स्वसनात्स्वरघ्नः ५४

अर्थ- वायुका मार्ग कफ से लिप्त होने से बार २ नेत्रोंके आगे आकर जो पुरुष श्वासको छोड़े अथवा मूर्च्छा आकर जिसकी श्वास निकले जिसको भिन्न स्वर होय कंठ सूखे और विमुक्त कहिये कंठ स्वाधीन नहो अर्थात् थोड़ाभी अन्न खाया हो तथापि कंठ सेनीचे न उत्तरे इस वात जरोगको स्वरघ्न कहते हैं॥

मांसतान

प्रतानवान्यः श्वयथुः सुकष्टो गलोपरोधं
कुरुतेक्रमेण। समांसतानेतिविभक्तिसंज्ञा
प्राणप्रणत्सर्वकृतोविकारः॥५५॥

अर्थ- जो सूजन गले में उत्पन्न होकर क्रमसे फैलकर गले को रोकले तब बहुत कष्ट हो इस त्रिदोष विकारको मांसतान कहते हैं यह विकराल रोग प्राणों का नाश करने वाला है ॥५५॥

विदारी

सदाहतोदं श्वयथुंसुतीव्रमन्तर्गलेपूति
विशीर्णमांसंपित्तेनविद्याद्वदनेविदारीं पा
र्श्वेविशेषात्सतुयेनशेते॥५६॥

अर्थ- पित्तसे गलेमें सूजनहोवैतिस करके दाहहोय चवकहोय तथा दुर्गंधि युक्त सड़ा मांस गिरै और रोगी जिस करवट·

सोवै उसी तर्फ़ वह रोग होता है मांस के विदारण करने से विदारी कहलाता है ॥ ५५ ॥

मुखपाक

सर्वसर (मुखपाक मुखआना)

(तीन प्रकारकाभेदहै)

वातज

स्फोटैः सतोदैर्वदनंसमंताद्यस्याचितंसर्वसरःसवातात्

अर्थ- बादी के योग से मुख में सर्वत्र छाले होजायं और वह चिन मिनावें मुख जिव्हा गला होठ मसूड़े दाँत और तालुइन सब में व्याप्त होने से इस रोग को सर्वसर कहते हैं

पित्तज

रक्तैः सदाहैः पिड़कैः सपीतैर्यस्याचितंचापिसपित्तकोपात् ५७।

अर्थ- पित्त से मुख में लाल तथा पीले छाले होंय और दाह होवे ॥ ५७ ॥

कफज

अवेदनैः कण्डुयुतैः सवर्णैर्यस्याचितंचापिसवैकफेन ५८॥

अर्थ- कफ से मुख में मंद पीड़ा और त्वचा के समान वर्ण जिनका ऐसे छाले सर्वत्र होंय ॥ ५८ ॥

असाध्यमुखरोग

ओष्ठप्रकोपेवर्ज्याः स्युर्मांसरक्तप्रकोपजाः।

दंतमूलेषुवर्ज्यौतुत्रिलिंगगतिशौषिरौ ५९ दं

श्या तेषुनचसिध्यन्तिश्यावदालनभंजनाः॥ जि
ह्वातल्लेष्वलासश्चताल्वेष्वर्बुदंतथा॥
६०॥ स्वरघ्नोवलयोवृन्दोवलासश्चविदा
रिका॥ गलौघोमांसतानश्चशतघ्नीरोहि
णीगले॥६१॥ असाध्याःकीर्तितानेतेरो
गानवदशैवतु॥ तेषुचापिक्रियांवैद्यःप्र
त्याख्यायसमाचरेत् ६२॥

अर्थ- ओष्ठरोग (होठके रोगोंमें) मांसज-रक्तज- और त्रिदोषज- असाध्य हैं मसूड़ों के रोगों में सन्निपात- नाड़ी और सौषिर-और दांतों के रोगों में श्याव- दालन और भंजन- जिव्हा के रोगों में अलास और तालुए के रोगों में अर्बुद तथा गले के रोगों में- स्वरघ्न-वलय-वृन्द- वलास- विदारिका- गलौघ मांसतान शतघ्नी और रोहिणी ये उन्नीस रोग असाध्य हैं इनपर चिकित्सा करने वाले वैद्य को प्रत्याख्यान (औषधि) नदेनी येतो मृत्यु निश्चय होय औरदेवैतो कदाचित् वचभीजाय है- ऐसे बिचारकर औषधी देनी चाहिये॥

इतिमुखरोग निदानम्

कर्णरोगनिदान

कर्णशूल

समीरणःश्रोत्रगतोऽन्यथाचरन्समंत
तःशूलमतीवकर्णयोः करोतिदोषैश्च
यथास्वमावृतः सकर्णशूलःकथितोदु
रासदः॥१॥

अर्थ- कान में वायु दोषां करके (कफ पित्त रुधिर से) आवृत्त होकर कानों में उलटी फिरे तब अत्यंत शूल (दरद) होय इस रोग को कर्णशूल कहते हैं · यह रोग कष्ट साध्य है कर्णशूल उपद्रव विदेह ने इस प्रकार लिखे हैं · (मूर्च्छा · दाहो · ज्वरः कासः क्लमोथवमथुस्तथा ॥ उपद्रवाकर्णशूलेभवंत्येतेभविष्यतइति इसका अर्थ सुगम है ॥

कर्णनाद

कर्णस्रोतःस्थितेवातेश्टणोतिबिबिधान्स्वरान्
भेरीमृदंग शंखानांकर्णनादःसउच्यते ॥२॥

अर्थ- वायु कान के छिद्र में स्थित होने से अनेक प्रकार के स्वर तथा नौवत् · मृदंग और शंख इनके शब्द सुनाई देवें इस रोग को कर्णनाद कहते हैं ॥

बाधिर्य (बहरा)

यदाशब्दवहंवायुःस्रोत आवृत्यातिष्ठति।
श्रुकेवलःसश्लेष्मान्वितोवापिबाधिर्यंतेनजायते ३

अर्थ- जिस समय केवल वायु अथवा कफ युक्त वायु शब्द वहाने वाली नाड़ियों में स्थित होय तब उस पुरुष को शब्द सुनाई नहीं देय अर्थात् बहरा होजाय ॥३॥

कर्णक्ष्वेड

वायुःपित्तादिभिर्युक्तो वेणुघोषसमंस्वनम् ॥ करोतिकर्णयोःक्ष्वेडंकर्णक्ष्वेडःसउच्यते ४

अर्थ- पित्तादि दोषों करके युक्त वायु कानों में वेणु (वंसी)

का शब्द सुनाई देता है उसको कर्णक्ष्वेड कहते हैं ॥

कर्णस्राव

शिरोभिघातादथवानिमज्जतांजलेप्रपाकादथवापिविद्रधेः स्रवेद्धिपूयंश्रवणोऽनिलार्दितःसकर्णसंस्रावइतिप्रकीर्तितः ॥

अर्थ- शिरमें किसी प्रकार की चोटलगने अथवा पानी में गोता मारने से अथवा कानमें विद्रधि पकने से वायु कुपित होकर कानों से राधि वहे उसको कर्णस्राव कहते हैं ॥

कर्णकंडु

मारुतःकफसंयुक्तःकर्णकंडूंकरोतिच ॥

अर्थ- कफ से मिला हुआ वायु कानों में खुजली उत्पन्न करता है ॥

कर्णगूथक

पित्तोष्मशोषितःश्लेष्मानायतेकर्णगूथकः

अर्थ- पित्तकीगरमी से कफ सूख कर कान में मैलजमे उसको कर्णगूथ कहते हैं ॥

कर्णप्रतिनाह

सकर्णगूथोद्रवतांयदागतोविलायितोघ्राणमुखंप्रपद्यते ॥ तदासकर्णप्रतिनाहसंज्ञितोभवेद्विकारःशिरसोऽर्द्धभेदकृत् ७।

अर्थ- वही कान का मैल पतला होने से अथवा स्नेह स्वेदादिकों करके पतला होकर मुख औरनाक में प्राप्त होय तब

उस को कर्णप्रतिनाह कहते हैं इस रोग से अर्द्धशिर (आ धासीसी का विकार होता है ॥

क्रिमिकर्ण

यदातुमूर्च्छंत्यथवापिजंतवः सृजन्त्यप
त्यान्यथवापिमक्षिकाः तदंजनत्त्वाच्छ्र
वणोनिरुच्यतेभिषग्भिराद्यैःक्रिमिकर्ण
कोगदः॥८॥

अर्थ— जिस समय कान में कीड़े पड़जायं अथवा मक्खी अं डा धरें तब क्रिमि लक्षण करके इस रोग को क्रिमिकर्ण- कहते हैं ॥८॥

कानमेंपतंगादिकीड़ाधस नेकेलक्षण

पतंगाःशतपद्यश्चकर्णस्रोतःप्रविश्यहि अ
रतिंव्याकुलत्त्वंचभृशंकुर्वन्तिवेदनाम्॥९।
कर्णोनिस्तुद्यतेतस्यतथाफुरफुरायते की
टेचरतिरुक्तीव्रानिस्पन्देमन्दवेदना॥१०॥

अर्थ— पतंग कनखजूरा· गिजाई आदि कान में धसने से बे चैनी होय जीव व्याकुल होय और कान में पीड़ा होय तथा का न में नोचने कीसी पीड़ा होय और वह कीड़ा कान के भीतर फ ड़के और फिर उस समय घोर पीड़ा होय और जब वह बन्द होतब पीड़ाबन्द होवे ॥१०॥

द्विविधिकर्णविद्रधि लक्षणम्

क्षताभिघातप्रभवस्तु विद्रधिर्भवेत्तथा दोषकृतोऽपरः पुनः सरक्तपीतारुणरक्तमास्रवेत्प्रतोदधूमायनदाहचोषवान् ॥ ११ ॥

अर्थ- कानमेंखुजानेसेव्रणहोजाय अथवा चोट लगने से कानमें व्रण होकर विद्रधि होय उसी प्रकार वातादि दोषों करके दूसरे प्रकार की विद्रधि होय है जब वह फूटे तब उसमें से लाल पीला रुधिर वहै नोचने कीसी पीड़ा होवै धूआंसानिकलता मालूम होवै दाह होवै चूसने कीसी पीड़ा होवै

कर्णपाक

कर्णपाकस्तु पित्तेनकोथविक्लेदकृत्भवेत् । कर्णविद्रधिपाकाद्वाजायतेचांवुपूरणात् । १२

अर्थ- पित्त से अथवा कान पकने सै अथवा कान में पानी जाने से कर्णपाक रोग होवे उस करके कान सड़जावे और गीला रहै ॥ १२ ॥

पूतिकर्ण

पूयंस्रवतिवापूतिसज्ञेयः पूतिकर्णकः ॥

अर्थ- जिसके कान में राध निकले वा बास आवे उसको (पूतिकर्ण) कहते हैं ॥

कर्णशोथः कर्णार्बुद कर्णार्शकाहवालादेतेहैं

कर्णशोथार्बुदार्शांसिजानीयादुक्तलक्षणैः १३

अर्थ- कान की सूजन कान का अर्बुद और कान की अर्श (ववासीर) ये रोग होंय तो इनके लक्षण असीर निदान के द्वारा जानने कुछ थोड़े से यहां लिख भी देते हैं कर्णशोथ चार प्रकार की है वात·पित्त·कफ·रक्त·जाके भेदसे इसी प्रकार कर्णार्श कान की ववासीर भी चारही प्रकार की हैं चारसे विशेष शोथ अर्श का होना असंभव है यासे चारही हैं ❋

कर्णार्बुदरोग सात प्रकार का है वात·पित्त·कफ·रुधिर·मांस·मेदा·और शिरा इनके भेद से अब कहते हैं कि कर्णरोग सुश्रुत के मत से २८ प्रकार का है परन्तु चरक के मत से चारही हैं उनको कहते हैं ॥

वातज

नादोऽतिरुक्कर्णमलस्यशोषः स्रावस्तनुश्चाश्रवणंचवातात्

अर्थ- वादी से कान में शब्द होय पीड़ा होय कान का मैल सूखजाय पतला स्राव होय सुनाई न होंदेवे अर्थात् बहरा होजाय-

पित्तज

शोफःसरागोदरणं बिदाहः सपीतपूतिस्रवणंचपित्तात् २४

अर्थ- पित्त से कान में सूजन होय कान लाल हो दाह हो·चिरासा होजाय तथा किंचित् पीला दुर्गंधियुक्त स्राव होय·

कफज

वैश्रुत्यकण्डू स्थिरशोथशुक्लास्निग्धास्रुतिःश्लेष्मभवेतिरुक्‌च

अर्थ- कफ के प्रभाव से विरुद्ध सुनना·खुजली चले कठिन सूजन होय·सफेद और चिकना रोसा स्राव होय ॥

सन्निपातज

सर्वाणिरूपाणिचसन्निपातात्स्रावश्चतत्रा
धिकदोषवर्णः२४

अर्थ-सन्निपात से सब लक्षण होंय- स्राव होय वा जौनसा दोष अधिक होय वैसाही दोषानुसार वर्ण का स्राव होय ॥

कर्णपालीकेरोग

कर्णशोथ

सौकुमार्याच्चिरोत्सृष्टे सहसापिप्रवर्द्धिते
कर्णःशोथोभवेत्पाल्यांसरुजःपरिपोट
वान्।

अर्थ- सुकुमार स्त्री अथवा बालक कान की लौर को एक साथ बहुत बढावै तौ कान की पाली में (लौरमें) सूजन होकर फूलजावै और दूखे ॥

परिपोटक

कृष्णारुणनिभःस्तब्धःसवातात्परिपोटकः २६

अर्थ-वादी से काला लाल और कठिन ऐसा फूल जाय उसको परिपोटक कहते हैं. ॥

उत्पात

गुर्वाभरणसंयोगात्ताण्डवाद्धर्षणादपि।
शोथः पाल्यांभवेच्छ्यावो दाहपाकरुजा
न्वितः ॥ २७ ॥ रक्तोवारक्तपित्ताभ्यामुत्पा
तःसगदोमतः

अर्थ- कान में भारी आभरण (गहना) पहनने से अथवा

चोट केलगने से अथवा कानको खींचने से रक्तपित्त कुपित हो कर कान की पाली में हरा· नीला· अथवा लाल सूजन होय ·उसमें दाह होवे · पीड़ा होवे और रक्त बहे इस रोग को उत्पात कहते हैं ॥

उन्मंथक

कर्णंबलाद्वर्धयतः पाल्यांवायुःप्रकुप्य-
ति॥१८॥
सकफंगृह्यकुरुतेशोफंस्तब्धवेदनं ॥
उन्मंथकः सकण्डूको विकारः कफ
वातजः॥१९॥

अर्थ- कानको बल पूर्वक बढ़ाने से पाली में (लौरमें) वायु कुपित होकर कफ को संग लेकर· कठिन·तथा मंद पीड़ा युक्त सूजन को प्रगट करे उसमें खुजली चले इस कफ़ बातजन्य बिकार को उन्मंथक कहते हैं ॥

दुःखवर्द्धन

संवर्ध्यमानेदुर्वृद्धेकण्डूदाहरुजान्वितः ॥
शोफोभवतिपाकश्चत्रिदोषोदुःखवर्द्धनः २०

अर्थ- दुष्ट रीति करके कान को छेदने से तथा बढाने से खुजली· दाह· पीड़ा युक्त ऐसी सूजन होय· वह पकजाय ·उसको दुःखवर्द्धन कहते हैं ॥२०॥

परिलेही

कफास्रकृमिसंभूतः सविसर्पन्नितस्ततः
लिहेच्छष्कुलींपालींपरिलेहीत्यसौस्मृतः २१

अर्थ- कफ·रक्त·कृमि से उत्पन्न भया तथा सर्वत्र विचरने वाली ऐसी जो सूजन कान की पाली में होय वो कान की पाली को खाय जाय अर्थात् उसका मांस झरने लगै इस को परिलेही कहते हैं ॥

इति भावार्थ दीपिका माथुरी भाषा टीकायां कर्णरोगनिदानम्

नासारोगनिदानम्

पीनस

आनह्यते यस्य विशुष्यते च प्रक्लिद्यते
धूप्यति चैव नासा ॥ न वेत्ति यो गंधरसांश्च
जन्तुर्जुष्टं व्यवस्येत्स तु पीनसेन ॥१
तं चानिलश्लेष्मभवं विकारं ब्रूयात्प्रतिश्या
यसमानलिंगं

अर्थ- जिस की नाक रुकजाय वात शोषित कफ से नाक भीतर से सूखी सी रहे गीली रहे धुआं सा निकले जिसकी नाक में सुगंधि दुर्गंध मिष्ट रसादिक की गंधि मालूम न हो उसके पीनस प्रगट भई जाननी इस वातजन्य विकार को प्रतिश्याय (पीनस) कहते हैं ॥

पूतिनस्य

दोषैर्विदग्धैर्गलतालुमूले संमूर्च्छितो यस्य
समीरणस्तु ॥ निरेति पूतिर्मुखनासिकाभ्यां
तं पूतिनस्यं प्रवदंति रोगं २

अर्थ- गले और तालुवे में दुष्ट भयापित्त रक्तादि दोष करके वायु मिश्रित होकर नाक और मुख के मार्गों से दुर्गंधि निकले

इस रोग को (पूतिनस्य) कहते हैं ॥

नासापाक

घ्राणाश्रितंपित्तमरूंषिकुर्याद्यस्मिन्विका
रेबलवांश्चपाकः ॥ तन्नासिकापाक-
मितिव्यवस्येद्विक्लेदकोथावथवापिय
त्र ॥ ३ ॥

अर्थ– जिसकी नाक में पित्त दूषित होकर फुंसी प्रगट करे और नाक भीतर से पकजाय उसको नासिकापाक कहते हैं इस में नाक से राध बहै ॥

पूयरक्त

दोषैर्विदग्धैरथवापिजन्तोर्ललाटदेशे
भिहतस्यतैस्तैः ॥ नासास्रवेत्पूयमसृग्वि
मिश्रंतंपूयरक्तंप्रवदन्तिरोगम् ॥ ४ ॥

अर्थ– दोष दुष्ट होने से अथवा कपाल में चोटलगने से नाक में से राधबहै और रुधिर बहै इस रोग को पूयरक्त कहते हैं ॥

क्षवथु (छींक)

घ्राणाश्रितेमर्मणिसंप्रदुष्टोयस्यानिलोना
सिकयानिरेति । कफानुयातोबहुशोऽ
तिशब्दंतंरोगमाहुःक्षवथुंविधिज्ञाः ५।

अर्थ– नासिकाश्रित मर्म के (श्रृंगाटकमर्म) के विषै वायु दुष्ट होकर कफ सहित भारी शब्द को नासिका के बाहर निकाले उसको क्षवथु (छींक) कहते हैं ॥

आगंतुजक्षवथु

तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतोवाभावान्कटून
र्कनिरीक्षणाद्वा ॥ सूत्रादिभिर्वातरुणा -
स्थिमर्मण्युद्धाटितेऽन्यक्षवथुर्निरेति ६ ॥

अर्थ- तीखे राई आदि पदार्थ खाने से अथवा कडवा खा ने से अथवा मिरच आदि तीखी वस्तुओं के सूंघने से सूर्य के देखने से अथवा कपड़े की वत्ती बनाकर नाक में तरुणा स्थि मर्म (फणामर्म) में लगाने से आगंतुज क्षवथु (छींक) आती है आगंतुज और दोषज छींक एकही है ॥६॥

भ्रंशथु

प्रभ्रश्यतेनासिकयाहियस्यसांद्रोविदग्धो
लवण: कफश्च ॥ प्राक्संचितोमूर्धनिसू
र्यतप्तेतंभ्रंशथुंव्याधिमुदाहरन्ति।७।

अर्थ- सूर्यकी गरमी से मस्तक तप्त होने से पूर्व संचि· त भया बिदग्ध· गाढा· खारी· ऐसा कफ़ नाक से गिरे उस व्याधि को भ्रंशथु रोग कहते हैं॥

दीप्त

घ्राणेभृशंदाहसमन्वितेतु विनिश्चरेद्ध
मइवेहवायु: ॥ नासा प्रदीप्तेवचयस्य
जंतोर्व्याधिंतुतंदीप्तमुदाहरन्ति ८

अर्थ- नाक अत्यन्त दाह युक्त होने से उसमें वायु धु आं के सदृश विचरे और नाक प्रदीप्त होवे अर्थात् गरम होवे इस रोग को दीप्त कहते हैं ॥

प्रतिनाह

उच्छ्वासमार्गेतुकफ़ःसवातोरुंध्यात्प्रती
नाहमुदाहरेत्तम्

अर्थ- वायु सहित कफ़ श्वास के मार्ग को बंद करे तब नाक का स्वर अच्छी रीति से चले नहीं इसको प्रतिनाह कहते हैं ॥

नासास्राव

घ्राणाद्धनःपीतसितस्तनुर्वादोषःस्रवेत्स्रा
वमुदाहरेत्तम्

अर्थ- नाक से गाढ़ा पीला-अथवा सफेद-पतला दोष (कफ) स्रवे उसको स्राव कहते हैं ॥

नासापरिशोष

घ्राणाश्रितेस्रोतसिमारुतेनगाढंप्रतप्तेप
रिशोषितेच। कृच्छ्राच्छ्वसेदूर्ध्वमधश्च
जंतुर्यस्मिन्सनासापरिशोषउक्तः२०

अर्थ- वायु से नासिका का द्वार अत्यन्त तप्त होकर सूखजाय तब मनुष्य बड़े कष्ट से ऊपर नीचे को श्वास लेय उस रोगको (नासापरिशोष) कहते हैं ॥२०॥

चिकित्साभेदार्थपीनसके

आमपक्वलक्षण

शिरोगुरुत्त्वमरुचिर्नासास्रावस्तनुःस्वरः
क्षामःष्ठीवेत्तयाऽभीक्ष्णमामपीनसलक्ष
णम्

आमलिंगान्वितःश्लेष्माघनश्चास्सुनिमज्ज-
ति॥स्वरवर्णविशुद्धिश्च पक्व पीनसलक्षण
म॥५॥

अर्थ– शिरमें भारापन· अन्न में अरुचि· नासिका से गरम गरम जल का झरना· आवाज़ कुछ मन्दी हो· और शरीर का कृश होना· वार २ थूकना यह आम (कच्चे) पीनस के लक्षण हैं = और जिसमें इसी पूर्वोक्त आम पीनस के भी लक्षण हों और कफ गाढा हो गया हो और जल में गेरने से डूबजाय और मुख से साफ आवाज़ निकले और मुख का रंग (रूहानी) अच्छा होय तो जानना कि यह पीनस पक गया है॥

प्रतिश्यायकीसंप्रा·

संधारणाजीर्णरजोतिभाष्यक्रोधर्त्तुवैषम्य
शिरोभितापैः॥प्रजागरातिस्वपनाम्बुशीता
वश्यायतोमैथुनवाष्पधूमैः।संस्त्यानदोषे
शिरसिप्रवृद्धोवायुःप्रतिश्यायमुदीरयेच्च॥

अर्थ– वेगों के रोकने से· अजीर्णकारक पदार्थों के खाने से· रज (धूल) के नासिका के भीतर जाने से· अत्यंत भाषण (अत्यंत पढ़ने) से· और अत्यंत गुस्सा करने से· तथा ऋतु विपर्यय अर्थात् एक ऋतु में दूसरे ऋतु के लक्षण होने से शिरोभिताप अर्थात् ग्रीष्म ऋतु में शिरसे अत्यन्त धूप सेवन करने से: रात्रि में जागने से दिन में विशेष सोने से· और शीत पदार्थों के अधिक सेवन करने से· इसी तरह कोहर के खाने से· अत्यन्त मैथुन करने से· पसीना अथवा आंसुओं के रुकने से· शिर में दोष रुकते हों फिर वायु वृद्धि गत्त होकर प्रतिश्याय रोग पीनस उत्पन्न करे येका

रण सद्योत नक अर्थात तत्काल पीनस करने वाले हैं ॥

चर्यादिक्रमसेइसका दूसरानिदान

चयंगतामूर्द्धनिमारुतादयः पृथक्समस्ताश्चतथैवशोणितम् । प्रकुप्यमानाविविधैः प्रकोपनैस्ततः प्रतिश्यायकराभवन्ति॥ ॥

अर्थ— मस्तक में प्रथक् वातादि दोष तथा सर्व दोष उसी प्रकार रुधिर संचय होकर अनेक प्रकार के कारणों से (वलवान से वैर करना आदि दिवास्वापादि) कुपित होकर प्रति श्यास उत्पन्न करें ॥

पूर्वरूप

क्षवप्रवृत्तिः शिरसोऽतिपूर्णता स्तम्भोऽगमर्दः परिहृष्टरोमता ॥ उपद्रवाश्चाप्यपरेपृथग्विधा नृणांप्रतिश्यायपुरस्सराःस्मृताः॥

अर्थ— छींक का आना मस्तक का भारी होना अंगों का जिकड़जाना तथा अंगों का टूटना रोमांच अवमंथसे आदिले और धूमादिक (१) तत्काल होनेवाले उपद्रव होंय तव पीनस होनहार होतो है तव ये लक्षण होते हैं

वातकप्रतिश्याय

आनद्धापिहितानासातनुस्रावप्रसे व

(१) पूर्वरूपाणिदृश्यंते प्रतिश्याये भविष्यति । घ्राणधूम[illegible]थक्षवथुस्तालुदालनम् कंठध्वंसो सुखस्रावः शिरस्यापूरणं तथा ॥ इति ॥

किनी ॥ गलत्ताल्वोष्ठशोषश्च निस्तोदः
शंखयोरपि ॥ २६ ॥ भवेत्स्वरोपघातश्च
प्रतिश्यायेऽनिलात्मजे ॥ २० ॥

अर्थ— जिसकी नाकका मार्ग रुकजाय· आच्छादित होजाय और उस में से पतला पानी निकले गला·तालु·होठये सूख जाय और कनपटी दूखे गला बैठ जाय ये वात कीपीनस के लक्षण हैं ॥

पैत्तिकप्रतिश्यायके

उष्णः सपीतकः स्रावो घ्राणात्स्रवति पै-
त्तिके ॥ २७ ॥ कृशोतिपाण्डुः सन्तप्तोभ
वेत्तृष्णाभिपीड़ितः सधूमसाग्निंसहसावम
तीवचनासया ॥ २८ ॥

अर्थ— जिसकी नाक से दाह और पीला स्राव होवें वह मनुष्य कृष और पीला होजाय उसका देह गरमरहे नाक से अग्नि के समान धुआं निकले यह पित्तकीपीनसकेलक्षण हैं ॥

श्लैष्मिक

घ्राणात्कफः कफकृते श्वेतः पीतः स्रवे
द्बहुः ॥ शुक्लावभासः शूनाक्षोभवेद्गुरु
शिरानरः ॥ २९ ॥ कंठताल्वोष्ठशिरसांकंडू
भिरभिपीड़ितः

अर्थ— नांकसे सफ़ेद·पीला बहुतकफ गिरे उसकी देहसफ़ेद होजाय नेत्रोंके ऊपर सूजन होय ओरमस्तक भारी रहे और गला तालु·होठ·और शिर इन में खुजली विशेष चले ये कफ की पीनस के लक्षण हैं ॥

सन्निपात

भूत्वाभूत्वा प्रतिश्यायोयस्याकस्मान्निवर्त्तते ॥ सपक्कोवाप्यपक्कोवासतुसर्वभवः स्मृतः ॥२०॥

अर्थ- जिसकी नाक में पूर्वोक्त कहे सो सर्व लक्षण मिलें तथा वह पीनस वारंवार होकर पककर अथवा विना पके नष्ट होजाय उसको सन्निपात की पीनस कहते हैं यह विदेह आचार्य के मत से असाध्य है ॥

दुष्टप्रतिश्यायके.

प्रक्लिद्यतेपुनर्नासापुनश्चपरिशुष्यति।पुनरानह्यतेचापिपुनर्विव्रीयतेतथा २१ निश्वासोवातिदुर्गंधोनरोगंधंनवेत्तिच। एवंदुष्टप्रतिश्यायंजानीयात्कृच्छ्रसाधनम् २२

अर्थ- वारंवार जिसकी नाक झड़ा करे और सूखजाय और नाक से अच्छी तरह श्वास नहीं आवे-नाक रुकजाय और फिर खुल जाय श्वास लेने में वास आवे तथा उस रोगी को सुगंध दुर्गंध का ज्ञान जाता रहे ऐसे लक्षण होने से इसको दुष्ट दुष्टप्रतिश्याय कहते हैं यह कष्ट से साध्य होती है यह पीनस पांचपीनसों के (१) अंतर्गत जाननी इनकाहीभेद है यहछठी न हीहैं ॥

रक्तप्रतिश्याय

रक्तजेतुप्रतिश्यायेरक्तस्रावःप्रवर्त्तते। ताम्राक्षश्चभवेज्जंतुरुरोघातप्रपीडितः २३ दुर्गंधोच्छ्वासवदनोगंधानपिनवेत्तिसः ॥ ॥ * ॥

(१) नृणांदुष्टप्रतिश्यायः सर्वजश्च न सिध्यति - इति विदेहः

अर्थ- रुधिर की पीनस में नाक से रुधिर गिरै नेत्रलाल हो य ॥ उरःक्षत की पीड़ा के सदृश पीड़ा होय श्वास अथवा मुख में वा स आवै दुर्गंधि का ज्ञान नहीं होय उरःक्षत (१) के लक्षण ग्रन्था न्तर में लिखे हैं सो जानने किसी पुस्तक में पित्तप्रतिश्याय कृतै र्लिङ्गै श्चापि समन्वितः ऐसा पाठ इसका अर्थ यह है कि जिस में पित्त की पीनस के लक्षण मिलते हों ॥

असाध्यलक्षण

सर्वएव प्रतिश्याया नरस्याप्रतिकारिणः ॥
दुष्टतांयान्तिकालेनतदाऽसाध्याभवंतिच
२४ ॥ मूर्च्छन्तिकृमयश्चात्रश्वेताः स्नि-
ग्धास्तथाऽणवः । कृमिजोयःशिरोरोगस्तु-
ल्यंतेनास्यलक्षणम्

अर्थ- सर्व पीनस औषधोपाय न करने से असाध्य होती हैं इस में नाक में कीड़ा पड़जाय वो कृमि सफ़ेद चिकने और वा रीक होते हैं कृमिज शिरोरोगों के सदृश लक्षण होंय कृमिज शिरोरोग के लक्षण शिरोरोग में कह आये हैं ॥

प्रतिश्याय और विकारों को भी करता है उनको कहते हैं

वाधिर्यमांध्यमघ्रत्वंघोरांश्चनयनामयान्
शोथाग्निसादकासादीन्वृद्धाःकुर्वन्तिपी
नसाः २६ ॥

(१) उरःक्षतंगुरुस्तब्ध पूतिकर्णकफोरसः सकासः सज्वरो ज्ञेयःउ रोघातः सपीनसः अत्र पित्त प्रतिश्यायलिंगान्यपि बोद्धव्यानि तुल्यात्पि त्तरक्तयोः ॥ इति ॥

अर्थ- पीनस बढ़ने से बहरा होजाय मंद दीखे वास आवे नहीं भयंकर नेत्ररोग होय सूजन मंदाग्नि खांसी इत्यादि विकार होते हैं सुश्रुत मेंनासिकाके ३१ रोग कहे हैं और इसजगह पीनस से लेकर प्रतिश्याय पर्य्यन्त १५ रोग कहे हैं बाकी १६ रोगों की संख्या पूर्ण के वास्ते लिखते हैं ॥

अर्बुदं सप्तधा शोथाश्चत्त्वारोऽर्शश्चतुर्विधम् ॥ चतुर्विधं रक्तपित्तमुक्तं घ्राणेऽपित्तद्विदुः॥२७॥

अर्थ- सात प्रकार का अर्बुद रोग चार प्रकार के शोथ-(सूजन) चार प्रकारका अर्श और चार प्रकार के रक्त पित्त-ये पूर्वोक्त कहे रोग सोलह होते हैं ॥

वात पित्त कफ रुधिर मांस मेद करके छः हुए और सातवां शालाक्य सिद्धान्त के मत से सन्निपात का ऐसे सात प्रकार का अर्बुद रोग हुआ

वात पित्त कफ सन्निपात के भेद से चार प्रकार की सूजन भई तथा वात पित्त कफ सन्निपात के भेद से चारही प्रकार की अर्श (बवासीर) और चारही प्रकार का रक्त और रक्त पित्त की समानतासे एकही जानना पूर्वोक्त पीनस से लेकर प्रतिश्यास पर्य्यंत १५ भए और अर्बुदादि १६ हुए ऐसे सब मिलकर नासिका रोग ३१ हुए

इतिश्री माधवार्थदीपिकाभाषा माथुरी टीकायां नासिका रोग समाप्तम् ॥ ॥

नेत्ररोगनिदानकारण

उष्णाभितप्तस्यजलप्रवेशाद्दूरेक्षणात्स्वप्न

विपर्ययाच्च ॥ स्वेदाद्रजोधूमनिषेवणाच्च छर्देर्विघाताद्वमनातियोगात् ॥२॥ द्रवान्नपानातिनिषेवणाच्च विण्मूत्रवातक्रमनिग्रहाच्च प्रसक्तसंरोदनशोककोपाच्छिरोभिघातादतिमद्यपानात् ॥२॥ तथाऋतूनांचविपर्ययेण क्लेशाभिघातादतिमैथुनाच्च ॥ बाष्पग्रहात्सूक्ष्मनिरीक्षणाच्च नेत्रेविकारान्-जनयंतिदोषाः॥३॥

अर्थ— गरमी से तप्त होकर जलमें प्रवेश (स्नानादि) करने से (ऐसा करने से शीतलता में शरीर व्याप्त होकर शरीर की गरमी ऊपर चढ़ कर नेत्र के तेज को पराभव करने से नेत्र रोग उत्पन्न होता है) दूरकी वस्तु को देखने से दिन में सोने और रात्रि में जागने से नेत्र में पसीना आने से अथवा वाफ लगने से अथवा नेत्रों में धूल जाने से अथवा धूंआंजाने से वमन के वेग को रोकने से अथवा बहुत वमन (रद्द) होने से पतला अन्नपान के लंघन करने से विष्ठा· मूत्र · और अधोवायु इनके वेगको धीरे धीरे निग्रह (कहिये वेगधारण करने से) निरंतर रुदन करने से शोक से कोप से मस्तक में चोट लगने अति मद्यपान करने से इसी प्रकार ऋतु के विपर्य्य (अर्थात् शीतकाल में गरमी और गरमी में शीतकाल होने से क्लेश कहिये कामादिक दुःख इस से अभिघात कहिये दुःख होने से अति मैथुन करने से अश्रुपात कावेग धारण करने से और सूक्ष्म पदार्थ के अवलोकन करने से वातादि दोष नेत्रों में रोग पैदा करते हैं सुश्रुत में नेत्ररोग की संप्राप्ति इस प्रकार लिखी है ॥

यथा

शिरानुसारिभिर्दोषैर्विगुणैरूर्ध्वमाश्रितैः
जायन्ते नेत्रभागेषु रोगाः परमदारुणाः

अर्थ- कुपित हुए वातादि दोष नेत्रों की नसों में प्राप्त हो नेत्रों का भाग व्याप्त करने से उनमें भयंकर रोग उत्पन्न होता है ये नेत्र रोग वात पित्त कफ़ रुधिर सन्निपात और आगंतु इन से होने वाले ऐसे नेत्र रोग ७६ हैं॥

नेत्ररोग का प्रायः अभिष्यंद - (नेत्र आना) इसीसे प्रथम उस को कहते हैं

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यन्दश्चतुर्विधः॥ प्रायेणजायतेघोरः सर्वनेत्रामयाकरः ४॥

अर्थ- वात· पित्त· कफ· और रुधिर इन से चार प्रकार का अभिष्यन्द रोग होता है इस की पीड़ा नष्ट नहीं होय तथा यह अभिष्यन्द रोग सर्व नेत्र रोगों का (अधिमंथादिक) उत्पत्ति स्थान जानना सो सुश्रुत में लिखा है इस रोग को भाषा में नेत्र दूखना कहते हैं अथवा आंख आई कहते हैं॥ ❋॥

वाताभिष्यन्द के लक्षण

निस्तोदनस्तंभनरोमहर्षसंघर्षपारुष्यशिरोभितापाः। विशुष्कभावः शिशिराश्रुता च वाताभिपन्ने नयने भवन्ति॥ ५॥

अर्थ- वादी से नेत्र दूखने आये हों उन्में सुई चुभाने कीसी पीड़ा हो नेत्रों का स्तम्भन (ठहरजाना) रोमांचनेत्रों में रेत गिरने के समान खटके तथा रूक्ष होंय मस्तक में पीड़ा हो नेत्रों से पानी गिरे परन्तु नेत्र सूखे से रहैं और नेत्रों से जो पानी गिरे वो शीतल हो ॥

पित्ताभिष्यंदकेलक्ष॰

दाहप्रपाकौ शिशिराभिनन्दा धूमायनंवा
ष्पसमुच्छ्रयश्च । उष्णाश्रुतापीतकनेत्र
ताचपित्ताभिपन्नेनयनेभवन्ति ६॥

अर्थ- पित्त से नेत्र दूखने आने से उनमें बहुत दाह हो नेत्र पकजायं उनमें शीतल पदार्थ लगाने की इच्छा होने नेत्रों से धुआं निकले अथवा नेत्रों में धुआं जाने कीसी पीड़ा हो तथा नेत्रों से अश्रु (आंसू) बहुत पडें और गरम पानी निकले आंख पीलीसी मालूम पडें ॥

कफजाभिष्यंदकेल॰

उष्णाभिनन्दागुरुताक्षिशोथः कण्डूपदेहा
वतिशीतताच ॥ स्रावोबहुः पिच्छिलएव
चापिकफाभिपन्नेनयनेभवन्ति ७

अर्थ- कफ से नेत्र दूखने आये हों उसको गरम वस्तु नेत्रों में लगाने से आराम मालूम हो (अर्थात् नेत्र में सेक सा मालूम हो तथा नेत्र भारी होंय सूजन हो खुजली चले कीचड़से नेत्र दूषित हों और शीतल हों उन में से स्राव होय सो गाढा और बहुत होय ॥

रक्ताभिष्यंदकलक्षण

ताम्राश्रुता लोहितनेत्रताच राज्यःसमंता
दतिलोहिताश्च । पित्तस्यालिंगानिचयानि
तानिरक्ताभिपन्नेनयनेभवंति ८

अर्थ- रक्ताभिष्यंद से नेत्रों मे लाल पानी गिरे नेत्र लाल हों
य और नेत्रों में आसपास रेखासी लाल २ दीखे और जो पित्ता-
भिष्यंद के लक्षण कहे हैं वो सब लक्षण इसमें होवें ८॥

अभिष्यंदसे अधिमंथकी उत्पत्तिहोतीहै सोकहते हैं

वृद्धैरतैरभिष्यंदैर्नराणामक्रियावतां ताव
तस्त्वधिमंथाः स्युर्नयनेतीव्रवेदनाः ॥ ९ ॥

अर्थ- इस अभिष्यंद में औषधोपचार नकरने से यह बढकर उ
तने ही (चार) अभिष्यंदरोग नेत्रों में प्रगट होय इससे नेत्रोंमें तीव्र
पीड़ा होय यह अधिमंथके सामान्य लक्षण हैं वेदना शब्द इस जग
ह व्यथामात्र का वाचक है इससे यह प्रगट हुआ कि वातके अ-
भिष्यंद से वातिक अधिमंथ प्रगट होय उसमें तीव्र वातज सर्वनिस्तो
दादि पीड़ा युक्त होय इसी प्रकार पित्तके से कफ के से रुधिर केसे
पित्त·कफ·रुधिरके अधिमंथस्व लक्षण करके जानने·

दूसरे सामान्यलक्षण

उत्पाट्यतइवात्यर्थं नेत्रंनिर्मथ्यतेतथा । शि
रसोऽर्द्धंचतंविद्यादधिमंथंस्वलक्षणैः

अर्थ- आधे शिर में उपाड़नेकीसी पीड़ा होय अथवा तोड़नेकी
सी तथा मथनेकीसी पीड़ा हो व्याधिके प्रभावसे आधेशिर में

पीड़ाहोइसे अधिमंथकहते हैं ॥इनकेलक्षणवातज अभिष्यंदके समानजानने ॥

दोषभेदसेकालमर्यादा

हन्याद्दृष्टिंश्लैष्मिकः सप्तरात्राद्योऽधीमंथोर
क्तजःपंचरात्रात् ॥ षड्रात्राद्वातिकोवैनिह
न्यान्मिथ्याचारात्पैत्तिकःसद्यएव ११

अर्थ- कफका अधिमंथ सातदिन में दृष्टि का नाशकरे-र क्तज अधिमंथ पांचदिनमें वात्तिक अधिमंथ छःदिनमें औरपित्तिक अधिमंथ मिथ्योपचार से तत्काल (तीनदिनमें) दृष्टि का नाश करे (अर्थात् आंखजातीरहे) इसजगह जो कालका अवधिकहोहै सो व्याधि के स्वभाव से तथा लंघन प्रतिपादि क्रिया करके तथा अंजन निषेधके निमित्त कहाहै ॥

नेत्ररोगकेसामान्यलक्ष·

उदीर्णवेदनंनेत्रंरागोद्रेकसमन्वितम् । घ
र्षनिस्तोदशूलाश्रुयुक्तमामान्वितंविदुः१२

अर्थ- जिस नेत्ररोगमें पीड़ाविशेषहोय-लाली बहुतहोकरचभकाचलें-तथाउसमें घर्ष(रेतगिरनेसे जैसीपीड़ाहोनीहै वैसी) पीड़ाहोय सुईचुभानेकीसीपीड़ाहोय-शूलसाचले-और स्राव युक्तहोवेउननेत्रों को आम युक्त जानना ऐसेजानना- अंजनलगाने सेतथा हलक अन्नखाने से ये लक्षण कहे हैं ॥१२॥

निरामलक्षण

मन्दवेदनताकण्डूःसंरम्भाश्रुप्रशान्तता ॥
प्रसन्नवर्णताचाक्ष्णोःसंपक्वंदोषमादिशेत् १३

अर्थ- नेत्रों में पीड़ा कम होवे· खुजली चले सूजन मंदहोय आंसुओं का गिरना बंदहोय· नेत्रों का वर्ण स्वच्छ होय· ये दोष पक्क होने के लक्षण हैं ॥१३॥

शोथसहितनेत्रपाकलक्ष·

कण्डूपदेहाश्रुयुतः पक्कोदुंबरसन्निभः । सं
रम्भीपच्यतेयस्तु नेत्रपाकः सशोथजः २४
शोथहीनानिलिंगानि नेत्रपाकेत्वशोथजे ॥

अर्थ- नेत्रों में सूजन आकर पकजायं उनमें आंसू बहैं और पके गूलर के समान लाल होंय· ये लक्षण शोथ सहित नेत्ररोग के हैं और शोथ (सूजन) के विना जो नेत्रपाक होय उसमें शोथ को छोड़कर सब लक्षण होंय यह व्याधि त्रिदोषजन्य जाननी ॥

हताधिमंथकेलक्षण

उपेक्षणादक्षियदाऽधिमंथोवातात्मकःसा
दयति प्रसह्य । रुजाभिरुग्राभिरसाध्य एषहता
धिमंथः खलु नेत्ररोगः २५ ॥

अर्थ- वातज अधिमंथ की उपेक्षा करने से वह नेत्रों को सुखाय देवे उस मनुष्य के नेत्रों में तोद (सुई के चुभने कीसी पीड़ा) दाहादि भारी पीड़ा होय यह हताधिमंथ नामक नेत्ररोग असाध्य है इसी रोग को विदेह हस्वुत्क्षेपण (१) कहता है अथवा दृष्टि निर्गम तथा सकलाक्षिशोष भी जानना यही सत् सुश्रुत

(१) अंतर्गतः शिराणांतु यदातिष्ठति मारुतः सतदानयनं प्राप्य शीघ्रंदृष्टिं निरस्यति तस्यांनिरस्यमानायं निर्मथन्निवमारुतः नयनंनिर्वमत्याशु प्रबल नोदादि मंथनैः ॥

कोभी मत है (१) इस रोग से नेत्र सूखे कमल के समान होजाते हैं॥

वातपर्य्ययकेलक्षण

वारंवारंचपर्य्येतिभ्रुवौनेत्रेचमारुतः। रुज
श्चविविधास्तीवाःसंज्ञेयोवातपर्य्ययः ॥

अर्थ- वायु क्रम से कभी २ भृकुटी में प्राप्त हो और कभी २ नेत्रों में प्राप्त होकर और अनेक प्रकार की तीव्र पीडा करे उसको वातपर्य्यय कहते हैं

शुष्काभिपाकके लक्ष॰

यत्कूणितंदारुणरूक्षवर्त्म संदह्यतेचावि
लदर्शनंच। सुदारुणंयत्प्रतिबोधनेचशु
ष्काक्षिपाकोपहतंतदक्षि

अर्थ- जो नेत्र खुलें नहीं अर्थात् संकुचित होजायं जिनकी वाफणी कठिन और रूक्ष होय जिससे नेत्रों में दाह विशेष होय यथार्थ दीखे नहीं जो खोलने में बहुत दुःख होय उन नेत्रों को शुष्काभिपाक नामक रोग से पीड़ित जानना यह रोग रक्त सहित वादी से होता है सो-कराला चार्य्य (२) ने लिखा है॥

अन्यतोवातलक्षण

यस्यावटूकर्णशिरोहनुस्थो मन्यागतोवा-
प्यनिलोऽन्यतोवा। कुर्याद्रुजंवैभ्रुविलो
चनेचतमन्यतोवातमुदाहरंति

(१) अंतःशिराणांश्वसनः स्थितो दृष्टिं प्रक्षिपन् हताधिमंथं जनयेत्तमसा ध्यं विदुर्बुधा इति विदेहः॥ अथवा शोषयेदक्ष्णी क्षीणात्तेत्रो बलादयम्॥ तत्पक्ष्मभित्संशुष्कसत्वमादितिलोचनम्

(२) कूणितखरवर्त्मासि कृच्छ्रोन्मीलाविलक्षणम् मंदाहमास्रजोवातचशु ष्कपाकान्वितं वदेत्॥

अर्थ- घांटी (घार) कान मस्तक ठोड़ी मन्यानाड़ी इनमें अथवा इतर ठिकाने स्थित जो वायु भृकुटी (भौंह) वा नेत्रोंमें तोद भेदादि पीडा करे इस रोग को अन्यतो वातरोग कहते हैं अर्थात् अन्य स्थानों में स्थित होकर अन्यस्थानों में पीड़ा करे इसीसे इसको अन्यतोवात रोग कहते हैं सो विदेह (१) का मत भी है ॥

अम्लाध्युषित लक्षण

ध्यावंलोहितपर्यन्तंसर्वंचाक्षिप्रपच्यते
सदाहशोथंसास्रावमम्लाध्युषितमम्ल-
तः॥१९॥

अर्थ- मध्य में कुछ नील वर्ण और आस पास लाल भराहो ऐसे सर्व नेत्र पकजायं और उन्में पीलेरंगकी फुंसी होंय उनमें दाह होकर सूजन होय तथा नेत्रों से पानी झरे यह रोग अम्ल (खटाई आदि खाने से होता है सुश्रुत के मत से यह रोग पित्त से होता है इसको अम्लाध्युषित कहते हैं ॥

शिरोत्पातकेलक्ष-

अवेदनावापिसवेदनायस्याक्षिराज्योहि :वा
भवंतिताम्राः। मुहुर्विरज्यंतिचयाःसताद-
ग्व्याधिः शिरोत्पातइतिप्रदिष्टः॥ २० ॥

(१) मन्यानामन्तरे वायुरुत्थितः एषतोपिवाकरोत्तिभेदं निस्तोदं शंखं
स्वाक्ष्णोस्त्रवोस्तथा तमाहुरन्यतो वातंरोगंहृषि विदेहजनाः॥ इति ॥

अर्थ- जिसको नेत्र कीनस पीड़ासहित अथवा पीड़ारहित तांबे
के समान लालरंग कीहोजाय औरवह वरावर अधिकाधिक (ज़ि
यादा सेज़ियादा) लाल होजाय इस रोगको शिरोत्पात (स
वलवायु) कहते हैं यह रोग रक्त जन्य है ॥

शिराहर्षकेलक्षण

मोहाच्छिरोत्पातउपेक्षितस्तुजायेतरोगस्तु
शिराप्रहर्षः । ताम्राभमस्रं स्रवतिप्रगाढंत
थानशक्नोत्यभिवीक्षितुंच २१

अर्थ- अज्ञान करके शिरोत्पात (सवल) वायु की अपेक्षा
करने से अर्थात् इलाज न करने से शिराप्रहर्ष रोग होता है
उसमें नेत्रों से लाल स्वच्छ ऐसे आंसू गिरें औरउसरोगी कोने
त्रों से कुछ दिखलाई न देवे ॥ ॥ इतिसर्वगतारोगाः ॥ ॥

अबनेत्रोंकेकालेरंगमेंहोनेवा लेरोगकहतेहैं

सव्रणशुक्रल·

निमग्नरूपंतुभवेद्धिकृष्णेसूच्येवविद्धंप्र
तिभातियद्वै । स्रावंस्रवेदुष्णमतीवयच्चत
त्सव्रणंशुक्रमुदाहरंति २२

अर्थ- नेत्रके काले भाग में शुक्र कहिये फूलसा होजाय
और वह भीतर से गड़ासा होजाय उसमें सुई चुभाने कीसी पी
ड़ा होवे तथा नेत्रों से अति गरम और बहुतसा स्राव होवे इस
रोग को सव्रणशुक्र कहते हैं इसमें पीड़ा बहुत होती है
क्षतमें पीड़ाहोना ठीकही है और नेत्र सरीखे सुकुमारहेकान

परन्तो विशेष पीड़ा होती है ऐसें भोज विदेहादिकोंकामतहै

सव्रणशुक्रके साध्यासाध्य लक्षण

दृष्टेः समीपेन्नभवेत्तुयत्तु नचावगाढंनचसं
स्रवेद्धि । अवेदनंवानचयुग्मशुक्रंतत्सि-
द्धिमायातिकदाचिदेव २३ ॥

अर्थ- जो शुक्र (फूल) दृष्टीकेसमीपहोय नहीं और एक त्वचा में हो वहुत स्रवे (झरे) नहीं जिस में पीड़ा नहोय औ रएकही स्थान में दो वूंद (फूल) नहोंय ऐसा शुक्र कदा-चित् अच्छा भी होजाय परन्तु इनसे विपरीत लक्षण दृष्टी के समीप होना - दूसरी त्वचामें होय वहुत स्रवे पीड़ा होय ए क स्थान में दो वूंद होंय यह शुक्र अच्छा नहीं होय ॥

अव्रणशुक्रलक्ष-

स्यन्दात्मिकंकृष्णगतंसचोषं शंखेन्दुकु
न्दप्रतिमावभासम् ॥ वैहायसाभ्रप्रतनुप्र
काशमथाव्रणंसाध्यतमंवदन्ति ॥ २४ ॥

अर्थ- अभिष्यन्द से उत्पन्न होकर नेत्रों के काले भाग में भया जो चोष (कहिये सींग तुमड़ी की पीड़ा) युक्त शंख चन्द्र कुन्द पुष्प इनके समान सफ़ेद आकाश के समा न पतला ऐसा जो व्रण रहित शुक्र होय उसको सुखसाध्य कहते हैं ॥

अव्रणशुक्रअवस्थावि शेषकरके साध्यहोयहैसो

कहतेहैं ॥

गम्भीरजातंवहलंचशुक्रं चिरोत्थितंवापि वदन्तिकृच्छ्रं ॥

अर्थ- जो शुक्र गंभीर हो अर्थात् दो तीन त्वचा के भीतर हुआ हो तथा मोटा हो उसको कृच्छ्र साध्य कहते हैं

अव्रणअवस्थाभेदकरके असाध्यहोताहैउस- कोकहतेहैं

विच्छिन्नमध्यंपिशितावृतंवाचलंशिरासूक्ष्मदृष्टिकृच्च ॥ २५ ॥ द्वित्वग्गतंलोहि-तमन्ततश्चचिरोत्थितंचापिविवर्जनीयम्

अर्थ- जो शुक्र के बीच का मांस गिरजाय इसी से शुक्र के स्थान में गढेला होजाय अथवा इसके विपरीत कहिये पिशितावृत (अर्थात् उसके चारों ओर मांस होय) चंचल कहिये एक ठिकाने नरहै शिरन करके व्याप्त हो बारीक होगया हो दृष्टि नाश करने वाला (यह "दृष्टे समीपेनभवेत् इसका उलटा है) दो पटल कहिये परदों के भीतर भया हो चारों ओर से लाल हो और बीचमें सफ़ेद और बहुत दिनका शुक्र हो ऐसे को वैद्य त्याग दे ॥

दूसरेअसाध्यलक्षण

उष्णास्रुपातःपिडिकाचनेत्रेयस्मिन्भवेन्मुद्गनिभंचशुक्रं ॥ २६ ॥ तदप्यसाध्यंप्रवदंति

केचिदन्यच्चयन्तितित्तिरिपक्षतुल्यम् ॥ ✢ ॥

अर्थ- जिसके नेत्रों से गरम अश्रुपात (आंसू) गिरकर पिडका उत्पन्न होवे (दो पटल में पहुंच जाने से ये लक्षण होते हैं) तथा जिस में मूंग के बराबर शुक्र, ऐसा ध्य है और जो तीतर के पंख के समान (कहिये काले रंगका) होवे उसको भी कोई २ असाध्य कहते हैं॥

अक्षिपाकात्यय

श्वेतः समाक्रामति सर्वतो हि दोषेण यस्या सितमण्डलन्तु ॥ तमक्षिपाकात्ययमाक्षि पाकं सर्वात्मकं वर्जयितव्यमाहुः ॥ २७॥

अर्थ- नेत्र के कृष्ण भाग में दोषों के योग से चारों ओर सफ़ेद (शुक्र) फैल जावे यह सन्निपात जन्य अक्षिपाकात्यय नामक रोग त्याज्य है ऐसे कहा है ॥

अजकाजात

अजापुरीषप्रतिमो रुजावान् सलोहितो लोहितपिच्छिलाश्रुः ॥ विगृह्य कृष्णं प्रचयो ऽभ्युपैति तच्चाजकाजातमिति व्यवस्येत् २८

इतिकृष्णजाः

अर्थ- काले भाग में बकरी के शुष्क बिष्टा के समान दूखने वाला लाल हो और गाढ़ा कुछ काले से आंसू बहे उसको अजका

(१) अजकाजात का भेद (विदेह) दूसरा कहता है- यथा कृष्णे रक्ष्णे भवेच्छुक्रं छगली विटसमप्रभं सार्द्र पिच्छलु रक्ता स्रवित्त्व गात्वज के तिसा

जात ऐसे जानना चाहिये ✣ ॥ इतिकृष्णजारोग ॥ ✣

दृष्टिकेरोग

पहले पटल में दोष जानेसे

उसकेलक्षण

प्रथमेपटलेयस्यदोषोदृष्टिंव्यवस्थितः॥
अव्यक्तानिचरूपाणिकदाचिदथपश्य
ति॥२६॥

अर्थ- प्रथम पटल में दोष स्थित होने से वह पुरुष अव्यक्त रूप (घटपटादिपदार्थ) देखे ✣ दृष्टि का प्रमाण सुश्रुतमें कहाहै ॥ ॥ यथा ॥ ॥ ❋ ॥

मसूरदलमात्रन्तुपंचभूतप्रसादजम् ॥ ✣ ॥

अर्थ- आधेमसूरदलके समान पंचभूत (पृथ्वी जल तेज· वायु आकाश)से प्रगटहै (शंका) इस श्लोक में तो मसूरदल के समान लिखा है फिर आधे मसूर के समान ऐसा अर्थ आपने कैसे किया उत्तर तुमने कहा सो ठीक है परंतु यह अर्थ हमने निमि आचारी के मत से लिखा है- यथा पंचभूतात्मिका दृष्टिर्मसूरार्द्धदलोन्मिताइति ॥ अब कहते हैं कि मंडल चार हैं सो सुश्रुत में लिखा है यथा-

तजोजलाश्रितंवाह्यंतेष्वन्यत्पिशिताश्रि
तम् ॥ मेदस्तृतीयंपटलमाश्रितंत्वस्थि
चापरम् ॥

अर्थ- प्रथम पटल रुधिर और जलाश्रित है-दूसरा पटल पिशित (मांस) के आश्रय है तीसरा पटल (मेद) के आश्रित है चौथा पटल अस्थि (हड्डी) के आश्रित है इति सुश्रुत में नेत्र रोग के भेद बहुत लिखे हैं ॥